Published by Janardan Sakharam Kudalkar, M. A., LL. B., Curator of State Libraries, Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Manilal Itcharam Desai, at
The Gujarati Printing Press, No. 8, Sassoon Buildings, Circle, Fort, Bombay.

Price Rs. 2-4-0

FOREWORD.

Owing to the untimely death of Mr. C. D. Dalal, M.A., the editor, this work is published for the present without its Intorduction and Notes. We are also aware that owing to the great pressure of other work that Mr. Dalal had on his hands at the time he was editing this work, he could not correct the several mistakes that have crept in the text.

Scholars of old Gujarati are only a few in number and those few are not free or prepared to undertake to complete this work just at present. Hence this First Part of the work containing only the Text is sent out to the public with a promise that it will be followed soon with a Second Part which will contain a critical Introduction and Notes written by the veteran old Gujarati scholar Mr. Keshav Harshad Dhruva, B.A., of Ahmedabad.

10-4-20

J. S. KUDALKAR.
Curator of State Libraries.

प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रहः

अनुक्रमणिका.

Page.

पद्यसंग्रहः

रेवंतगिरिरासु	1.
नेमिनाथचतुष्पदिका	8
उवएसमाल कहाणयछप्पय	11
समरारासु	27
सिरिथूलिभद्दफागु	38
जंबूसामिचरिय	41
गयसुकुमालरासु	47
कच्छूलीरास	59
सालिभद्रकक्क	62
दूहामातृका	67
चर्चरिका	71
मातृकाचउपइ	74
सम्यक्त्वमाईचउपइ	78
श्रीनेमिनाथफागु	83

गद्यसंग्रहः

आराधना	86
अतिचार	87
सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन	88
नवकारव्याख्यानम	89
अतिचार	91
पृथ्वीचन्द्रचरित्र	9
खरतरपट्टावलीपट्टपरानि	13

APPENDICES.

Page.

- I श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम् 1
- II रैवतकल्पसंक्षेपो 8
- III शत्रुञ्जयस्तव. 10
- IV शत्रुञ्जयमहातीर्थकल्पः 12
- V रैवतकल्पः 15
- VI अम्बिकादेवीकल्प. 17
- VII श्रीगिरिनारकल्प 19
- VIII Inscription of the Reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanatha at Cambay ... 22
- IX Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarâ's installation of the image of Âdishvara ... 23
- X पेथडरास 24





प्राचीनगूर्जरकाव्यसङ्ग्रहः

प्रथमो भागः

रेवंतगिरिरासु

परमेसरतित्थेसरह पयपंकय पणमेवि ।
भणिसु रासु रेवंतगिरे अंबिकदिवि सुमरेवि ॥ १ ॥
गामागरपुरवणगहणसरिसरवरि सुपएसु ।
देवभूमि दिसि पच्छिमह मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥
जिणु तहिं मंडलमंडणउ मरगयमउडमहंतु ।
निम्मलसामलसिहरभरे रेहइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥
तसु सिरि सामिउ सामलउ सोहगसुंदरसारु ।
जाइवनिम्मलकुलतिलउ निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥
तसु मुहदंसणु दसदिसि वि देसदेसंतरु संघ ।
आवइ भावरसालमणउ हलि रंगतरंग ॥ ५ ॥
पोरुयाडकुलमंडणउ नंदणु आसाराय ।
वस्तुपाल वरमंति तहिं तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥
गुरजरधरधुरि धवलकि वीरधवलदेवराजि ।
बिहु बंधवि अवयारियउ सुमू दूसममाझि ॥ ७ ॥
नायलगच्छह मंडणउ विजयसेणसूरिराउ ।
उवएसिहि बिहु नरपवरे धम्मि धरिउ दिढु भाउ ॥ ८ ॥
तेजपालि गिरनारतले तेजलपुरु नियनामि ।
कारिउ गढमढपववपवरु मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु आसारायविहारु ।
निम्मिउ नामिहि निजजणणि कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥
तहि नयरह पूरवदिसिहि उग्रसेणगढदुग्गु ।
आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥
बाहिरिगढ दाहिणदिसिहि चउरियवेहिविसालु ।
लाडुकलहडियओरडीय तडि पसुठाइकरालु ॥ १२ ॥
तहि नयरह उत्तरदिसिहि सालथंभसंभार ।
मंडण महिमंडल सयल मंडप दसह उसार ॥ १३ ॥
जोइउ जोइउ भवियण पेमि गिरिहि दुयारि ।
दामोदरु हरि पंचमउ सुवन्नरेहनइपारि ॥ १४ ॥
अगुण अंजण अंबिलीय अंबाडय अंकुल्लु ।
उंबरु अंबरु आमलीय अगरु असोय अहल्लु ॥ १५ ॥
कयर करपट करुणतर करवंदी करवीर ।
कुडा कडाह कयंब कड करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥
वेयलु वंजलु वउल वडो वेडस वरण विडंग ।
वासंती वीरिणि विरह वंसियालि वण वंग ॥ १७ ॥
सीसमि सिंबलि सिरसमि सिंधुवारि सिरखंड ।
सरल सार साहार सय सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥
पल्लवफुल्लफलुल्लसिय रेहइ ताहि वणराइ ।
तहि उज्जिलतलि धम्मियह उल्लटु अंगि न माइ ॥ १९ ॥
बोलावी संघहतणीय कालमेघंतरपंथि ।
मेल्हविय तहि दिढ धणीय धन्नपाल परमंमि ॥ २० ॥

(प्रथमं कडवम्)

दुविहि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु ।
कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।
तेण संठाविओ सुरठदंडाहिवो ।
अंबओ सिरे सिरिमालकुलसंभवो ।
पाज सुविसाल तिणि नविय ।
अंतरे धवल पुणु परव भराविय ॥ १ ॥

घनु सु धवलह भाउ जिणि पाग पयासिय ।
बारविसोत्तरवरसे जसु जसि दिसि वासिय ।
जिम जिम चडइं तडि कडणि गिरनारह ।
तिम तिम ऊडइं जण भवणसंसारह ।
जिम जिम सेउजलु अंगि पालाट ए।
तिम तिम कलिमलु सयलु ओहट्ट ए ॥ २ ॥
जिम जिम वायइ वाउ तहिं निज्झरसीयलु ।
तिम तिम भवदुहदाहो तक्खणि तुदृइ ।
निबलु कोइलकलयलो मोरकेकारवो ।
सुंमए महुयरमहुरुगुंजारवो ।
पाज चडंतह सावयालोयणी ।
लाषारामु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
जलदजालबवाले नीझरणि रमाउलु ।
रेहइ उज्जिलसिहरु अलिकज्जलसामलु ।
बहलवुहुधातुरसभेउणी ।
जत्थ उलदलइ सोयन्नमइ मेउणी ।
जत्थ दिप्पंति दिवो सही सुंदरा ।
गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
जाइ कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहिं संकुलु ।
दीसइ दस दिसि दियसो किरि तारामंडलु ।
मिलियनवलयलिदलकुसुमझलहालिया ।
ललियसुरमहियलपचलणतलतालिया ।
गलियथलकमलमयरंदजलकोमला ।
विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमला ॥ ५ ॥
मणहरघणवणगहणे रसिरहसिय किंनरा ।
गेउ मुहुरु गायंता सिरिनेमिजिणेसरा ।
जत्थ सिरिनेमिजिणु अच्छप अच्छरा ।
असुरसुरउरगकिंनरयविज्जाहरा ।
मउडमणिकिरणपिंजरियगिरिसेहरा ।
हरसि आयंति बहुभत्तिभरनिब्भरा ॥ ६ ॥

सामियनेमिकुमारपयपंकयलंछिउ।
घरधूल वि जिण घन्न मन पूरइ वंछिउ।
जो भव कोडाकोड्डि ''''''''''''।
अन्नु सोवन्नु घणु दाणु जउ दिन्नए।
सेवउ जडकम्मघणगंठि जउ तिन्नए।
तउ उज्जितसिहरू पाविन्नए ॥ ७ ॥
जम्मणु जोव जीविय तसु तहिं कयत्थू।
जे नर उज्जितसिहरू पेखइ वरनित्थू।
आसि गुरजरधरय जेण अमरेसरू।
सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसरू।
हणवि सोरठु तिणि राउ षंगारउ।
ठविउ साजणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥
अहिणवु नेमिजिणिंद तिणि भवणु कराविउ।
निम्मलु चंदरु बिंबे नियनाउं लिहाविउ।
थोरविक्कंभवायंभरमाउलं।
ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं।
मंडपु दंडघणु तुंगतरतोरणं।
धवलिय वज्झिरुणझणिरिकिंकणिघणं।
इक्कारसयसहीउ पंचासीय वच्छरि।
नेमिभुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥
मालवमंडलमुहमुहमंडणु।
भावडसाहु दालिधुखंडणु।
आमलसारसोवन्नु तिणि कारिउ।
किरि गयणंगण सूरु अवयारिउ।
अवरसिहरवरकलस झलहलइ मणोहर।
नेमिभुयणि तिणि दिट्ठइ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

(द्वितीयं कडवम्)

दिसि उत्तर कसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय।
अजिउ रतन दुइ बंध गरुय संघाहिव आविय ॥ १ ॥

दरमयमिण घणवलस भरिवि ति न्हवणु करंतह ।
गलिउ लेवमु नेमिबिंबु जलधार पडंतह ॥ २ ॥
संघाहिवु संघेण सहिउ निपमणि संतविउ ।
हा हा धिगु धिगु मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥
सामियसामलधीरचरण मह सरणि भवंतरि ।
इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥
एकवीसि उपवासि सासु अंबिकदिवि आविय ।
पभणइ स पसन्न देवि जय जय महाविय ॥ ५ ॥
उट्टवियणु सिरिनेमिबिंबु तुलिउ तुरंतउ ।
पच्छलु मन जोएसि वच्छ तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥
नाइ वि अंधि""कंचण"वलाणइ ।
""बिंबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥
पढमभवणि देहलिहि देउ छुटि पुट्ठि आरोविउ ।
संघाहिवि हरिसेण सम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥
ठिउ निचलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो ।
कुसुमवुट्ठि मिल्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥
वइसाहीपुंनिमह पुंनवतिण जिणु थप्पिउ ।
पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरु कप्पिउ ॥ १० ॥
न्हवणविलेवनणीय वंछ भवियणजण पूरिय ।
संघाहिव सिरिअजितुरतनु नियदेसि पराइय ॥ ११ ॥
सयलबिंबि कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।
झलहलंति मणिबिंबकंति अंबिकइं आइय ॥ १२ ॥
समुद्दविजयसिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु ।
जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥
राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु ।
पुनवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगसुंदरु ॥ १४ ॥
वस्तपालि वरमंति भुवणु कारिउ रिसहेसरु ।
अट्ठावयसंमेयसिहरवरमंडपु मणहरु ॥ १५ ॥
कउडिजक्खु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ ।
धम्मिय सिरु धुणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु ।
कल्याणउ तउ तुंगु सुयणु लंघिउगयणंगणु ॥ १७ ॥
दीसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीझरणउमालो ।
इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥ १८ ॥
अइरावणगयरायपायमुद्दासमटंकिउ ।
दिट्ठु गयंदमु कुंड विमलुनिज्झरसमलंकिउ ॥ १९ ॥
गयणगंग जं सयलतित्थअवयारु भणिज्जइ ।
पक्खालिवि तहि अंगु दुक्ख जलअंजलि दिज्जइ ॥ २० ॥
सिंदुवारमंदारकुरवककुंदिहि सुंदरु ।
जाइजूहसयवत्तिविन्निफलेहि निरंतरु ॥ २१ ॥
दिट्ठ य छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु ।
नेमिजिणेसरदिक्खनाणनिव्वाणह ठामु ॥ २२ ॥

(तृतीयं कडवम्)

गिरिगरुयासिहरि चडेवि अंवजंबाहिं बंबालिउं ए ।
संमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीठु रम्माउलं ए ॥ १ ॥
वज्जइ ए तालकंसाल वज्जइ मदल गुहिरसर ।
रंगिहिं नचइ वाल पेखिवि अंबिकमुहकमलु ॥ २ ॥
सुभकरु ए ठविउ उच्छंगि विभकरो नंदणु पासिक ए ।
सोहइ ए ऊजिलसिंगि सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
दावइ ए दुक्खहं भंगु पूरइ ए वंछिउ भवियजण ।
रक्खइ ए चउविहु संघु सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
दस दिसि ए नेमिकुमारि आरोही अवलोइउं ए ।
दीजई ए तहि गिरनारि गयणंगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥
पहिलइ ए सांवकुमारु बीजइ सिहरि पज्जून पुण ।
पणमइं ए पामइं पारु भवियण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
ठामि ठामि रयणसोवन्न विंव जिणेसर तहिं ठविय ।
पणमइ ए ते नर धन जे न कलिकालि मलमयलिया ए ॥ ७ ॥
जं फलु ए सिहरसमेयअट्ठावयनंदीसरिहिं ।
तं फलु ए भवि पामेइ पेखेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥

गहगण ए माहि जिम भाणु पव्वयमाहि जिम मेरुगिरि ।
त्रिहु भुयणे तेम पहाणु तित्थमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
धवलधय चमर भिंगार आरत्ति मंगलपईव ।
निलय मउड कुंडल हार मेघाडंबर जावियं ए ॥ १० ॥
दियहिं नर जो पवर चंद्रोय नेमिजिणेसरवरभुयणि ।
इह भवि ए भुंजवि भोय सो तित्थेसरसिरि लहइ ए ॥ ११ ॥
चउविहु ए संघु करेइ जो आयइ उज्जितगिरे ।
दिविस वह राणु करेइ सो मुंचइ चउगइगमणि ॥ १२ ॥
अठविह ए व्रय करंति अठाई जो तहिं करइ ए ।
अठविह ए करम हणंति सो अठभवि सिज्झइ ए ॥ १३ ॥
अंबिल ए जो उपवास एगासण नीवी करइं ए ।
तसु मणि ए अछइं आस इहभव परभव विवहपरे ॥ १४ ॥
पेमिहि मुणिजण अन्नह दाणु धम्मियवच्छलु करइं ए ।
तसु कहीं नहीं उपमाणु परभावि सरण तिणउ ॥ १५ ॥
आवइ ए जे न उज्जिति घर भरइ धंधोलिया ए ।
आविही ए हीयह न जंति निष्फलु जीविउ तासुतणउं ॥ १६ ॥
जीविउ ए सो जि परि धन्नु तासु संमच्छर निच्छणु ए ।
सो परि ए मासु परि धन्नु वलि हीजइ नहिं वासर ए ॥ १७ ॥
जहिं जिणु ए उज्जिलठामि सोहगसुंदरु सामलु ए ।
दीसइ ए तिहूणसामि नयणसलूणउं नेमिजिणु ॥ १८ ॥
नीझरण चमर ढलंति मेघाडंबर सिरि धरीइं ।
तित्थह एसउ रेवंदि सिंहासणि जयइ नेमिजिणु ॥ १९ ॥
रंगिहि ए रमइ जो रासु सिरिविजयसेणिसूरि निम्मविउ ए ।
नेमिजिणु तूसइ तासु अंबिक पूरइ मणि रली ए ॥ २० ॥

(चतुर्थ कडवम्)

॥ समत्तु रेवंतगिरिरासु ॥

नेमिनाथचतुष्पदिका

सोहगसुंदरु घणलायघ्नु सुमरवि सामिउ सामलवन्नु ।
सखि पति राजल चडि उत्तरिय बारमास सुणि जिम वज्जरिय ॥ १ ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ॥ आंकिणी ॥
श्रावणि सरवणि कडुयं मेहु गज्जइ विरहिरि झिज्झइ देहु ।
विज्जु झबक्कइ रक्खसि जेव नेमिहि विणु सहि सहियइ केम ॥ २ ॥
सखी भणइ सामिणि मन झूरि दुज्जणतणा म वंछिन पूरि ।
गयउ नेमि तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ ॥ ३ ॥
बोलइ राजल तउ इहु वयणु नत्थी नेमिसमं वररयणु ।
धरइ तेजु गहगण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥ ४ ॥
भाद्रवि भरिया सर पिक्खेवि सकरुण रोअइ राजलदेवि ।
हा एकलडी मइ निरधार किम ऊवेखिसि करुणासार ॥ ५ ॥
भणइ सखी राजल मन रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।
सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कउ डेरा हुंति ॥ ६ ॥
साचउं सखि वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामलकंति ।
घण वरिसंतइ सर फुट्टंति सायरु पुण घणुओह डुलिंति ॥ ७ ॥
आसोमासह अंसुप्रवाह राजल मिल्हइ विणु नमिनाह ।
दहइ चंदु चंदणहिमसीउ विणु भत्तारह सउ वि वरीउ ॥ ८ ॥
सखि नवि खीना नेमिहिरेसि मन आपणपउं तउं खय नेसि ।
जिणि दिक्काडिउ पहिलउं छेहु न गणिउ अट्ठभवंतरनेहु ॥ ९ ॥
नेमि दयालू सखि निरदोसु कीजइ उग्रसेणऊपरि रोसु ।
पसुयभराविउ मूकउ वाडु मुझु प्रियसरिसउ कियउ विहाडु ॥ १० ॥
कत्तिग खित्तिग ऊगइ संझ रजमति झिझिउ हुइ अतिझंझ ।
राति दिवसु अछइ विलवंत वलि वलि दय करि दयकरि कंत ॥ ११ ॥
नेमितणी सखि मूकि न आस कायरु भग्गउ सो घरवास ।
इमइ इसी सनेहल नारि जाइ कोइ छंडवि गिरनारि ॥ १२ ॥
कायरु किम सखि नेमिजिणंदु जिणि रिणि जित्तउ लक्कु नरिंदु ।
फुरइ सासु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउं नेमिहि आस ॥ १३ ॥

मगसिरि मग्गु पलोअइ बाल इणपरि पभणइ नयणविसाल ।
जो मइ मेन्हइ नेमिकुमार तसुणी बेल चढ़उ सविचार ॥ १४ ॥
एहु फदाग्रहु तउ सखि मिलि करिसि काइ तिणि नेमिहि हिछि ।
मेहि चढावित जो किर मालि हे हे कु करइ टोहणकालि ॥ १५ ॥
अठभव सेविउ सखि मइ नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।
अवगन्नेसइ जइ मइ सामि लग्गी अछिसु तोइ तसु नामि ॥ १६ ॥
पोसि रोस सवि छंडिवि माइ राखि राखि मइ नयणह पाइ ।
पडइ सीउ नवि रयणि विहाइ लहिय छिद्द सवि दुक्ख अमाइ ॥ १७ ॥
नेमि नेमि तू करती मुद्धि जुव्वणु जाइ न जाणिसि सुद्धि ।
पुरिसरयणभरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु ॥ १८ ॥
भोली तउ सखि खरी गमारि वरि अच्छंतइ नेमिकुमारि ।
अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नडइ गइयम लहिउ कु रासभि चडइ ॥ १९ ॥
माहमासि माचइ हिमरासि देवि भणइ मइ प्रिय लइ पासि ।
मइ विणु सामिय दहइ तुसारु मयनघनारिहि मारइ मारु ॥ २० ॥
इहु सखि रोइसि मइ अरसि हत्थि कि जामइ धरणउ कद्धि ।
तउ न पती जिमि माहरी माइ सिद्धिरमणिरत्तउ नेमि जाइ ॥ २१ ॥
कंति वसंतइ हियडामाहि पानि पईजउं किमइ ससाइ ।
सिद्धि जाइ तउ काइत बीह सरसी जाउ त उग्रसेणधीय ॥ २२ ॥
फागुण वागुणि पन्न पडंति राजलदुक्खि कि तरु रोयंति ।
गब्भि गलिवि हउं काइ न मूय भणइ विहंगल धारणिधूय ॥ २३ ॥
अजिउ भणिउ करि सखि विम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पासि ।
अनु सखि मोदक जउ नवि हुंति छुहिय सुहाली कि न रखंति ॥ २४ ॥
मयाह पाखि जइ वहिलउ होइ नेमिहि पासि ततलउ न कोइ ।
जइ सखि घरउं न सामल धीरु घणविणु पियइ कि चातकु नीरु ॥ २५ ॥
चैत्रमासि वणसइ पंगुरइ वणि वणि कोयल टहुका करइ ।
पंचबाण करि धनुष धरेवि वेहइ मांडी राजलदेवि ॥ २६ ॥
जुइ सखि मानउ मासु वसंतु इणि खिलिज्जइ जइ हुइ कंतु ।
रमियइ नव नव करि सिणगारु लिज्जइ जीवियजुव्वणसारु ॥ २७ ॥
सुणि सखि मानिउ मुझु परिणयणु नवि ऊपरि थिउ बंधवयणु ।
जइ पडियजइ बुज्झइ नेमि जीविय जुव्वणु जलणि जलेमि ॥ २८ ॥

घइसाहइ विहसिय वणराइ मयणमित्तु मलयानिलु वाइ ।
फुट्टि रि हियडा माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्खिउ कंतु ॥ २९ ॥
सखी दुक्ख वीसरिवा भणइ संभलि भमरउ किम रुणझुणइ ।
दीस पंच थिरु जोव्वणु होइ खाउ पियउ विलसउ सहु कोइ ॥ ३० ॥
रमणि पसंसइ राजल कन्न जीह कंतु वसि ते पर धन्न ।
जसु प्रिउ न करइ किमइ सुहाडि सा हउं इथ ज भुंडनिलाडि ॥ ३१ ॥
जिह विरहु जिम तप्पइ सूरु घणविओगि सुसियं नइपूरु ।
पिक्खिउ फुल्लिउ चंपइविल्लि राजल मूछी नेहगहिल्लि ॥ ३२ ॥
मूछी राणी हा सखि धाउं पडियउ खंडइ जेवड्ड घाउ ।
हरिय मूछ चंदणपवणेहिं सखि आसासइ प्रियवयणेहिं ॥ ३३ ॥
भणइ देवि विरती संसार पडिखि पडिखि मइ जादवसार ।
नियपडिवन्नउं प्रभु संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि ॥ ३४ ॥
आसाढइ दिट्ठु हियउं करेवि गज्जु विज्जु सवि अवगन्नेवि ।
भणइ वयणु उग्रसेणह जाय करिसु धम्मु सेविसु प्रियपाय ॥ ३५ ॥
मिलिउ सखी राजल पभणंति चिणय जेम नमिरिय ग्वज्झंति ।
अउगी अच्छि सखि झखि मन आल तपु दोहिल्लउ तउं सुकुमाल॥३६॥
अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु सखि सुख न धाइ ।
हिव प्रिय सरिसउं जीविय मरणु इण भवि परभवि निमि जु सरणु॥३७॥
अधिकु मासु सवि मासहि फिरइ छहरितुकेरा गुण अणुहरइ ।
मिलिवा प्रिय ऊमाहुलि हूय सउ मुकलाविउ उग्रसेणधूय ॥ ३८ ॥
पंच सखीसइ जसु परिवारि प्रिय ऊमाही गइ गिरिनारि ।
सखीसहित राजल गुणरासि लेइ दिक्ख परमेसरपासि ॥ ३९ ॥
निम्मल केवलनाणु लहेवि सिद्धी सामिणि राजलदेवि ।
रयणसिहसूरि पणमवि पाय बारह मास भणिया मइ भाय ॥ ४० ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ।

इति श्रीविनयचन्द्रसूरिकृतनेमिनाथचतुष्पदिका: ॥

उवएसमालकहाणयछप्पय

छप्पयछंद

विजय नरिंद जिणिंदवीरहत्थिहिं वय लेविणु ।
धम्मदासगणि नामि गामि नयरिहिं विहरइ पुणु ।
नियपुत्तह रणसीहराय पडिबोहणसारिहिं ।
करइ एस उवएसमालजिणवयणवियारिहिं ।
सयपंचच्यालगाहारयणमणिकरंड महियलि मुणउ ।
सुहभावि सुद्ध सिद्धंतसम सवि सुसाहु सावय सुणउ ॥ १ ॥
रिसहनाह निरहार वरिस विहरिउ अपमत्तउ ।
वद्धमाण छम्मास करइ तव गुणहि निरुत्तउ ।
अवर वि जिणवर दिक्ख लेवि तव तवइ सुनिम्मल ।
तिणि कारणि उपदेशमाल धुरि तप किय बहुफल ।
नियसत्तिसारि अणुसारि इणि तपआदर अहनिसि करउ ।
भो भविय भावि जम्मणमरणदुहसमुद दुत्तर तरउ ॥ २ ॥
सव्व साहु तुम्हि सुणउ गणउ जग अप्पसमाणउ ।
कोह कह वि परिहरउ धरउ समरस सपराणउ ।
तिहुयणगुरु सिरिवीर धीर पण धम्मधुरंधर ।
दासपेसदुव्वयण सहइ घणदुसह निरंतर ।
नरतिरियदेवउवसग्ग बहु जह जगगुरु जिणवर खमइ ।
तिम खमउ खंति अग्गलि करी जेम्म रिउदलबल नमइ ॥ ३ ॥
सव्व सुणइ जिणवयण नयणउल्हासिहिं गोयम ।
जाणइ जइ वि सुयत्थ तह वि उच्छइ पहु कहु किम ।
भद्दकचित्त पवित्त पढम गणहर सुयनाणी ।
न करइ गव्व अपुव्व करवि मनि मच्छइ वाणी ।
छंडीइ मान ज्ञानहतणउ विणउ अंगि इम आणीइ ।
गुरुभत्ति कह वि नवि मिल्हीइ ग्रंथकोडि जइ जाणीइ ॥ ४ ॥
दहिवाहणनिवधूय वीरजिणपढमपवत्तणि ।
चंदनबाल विसाल गुणिहिं गज्जइ गुहिरप्पणि ।

अहनिसि रायकुंयारिसहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
दिणदिक्खिय देक्खिय आवतु द्रमक साधु सा ऊठि करी ।
अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५ ॥
वाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
पुर अंतेउर पवर अवर हय गय बहु साहण ।
कन्नासहस सुरूव अछइ पुण पुत्त न इक्कय ।
राय पत्त पंचत्त लच्छि लिवइ रिउ ढुक्कय ।
नेमित्तिवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्टिहिं ठविउ ।
तिणि अंगवीरि अरि त्रासुवी रज्जबंध सहु राहविउ ॥ ६ ॥
कियसिंगारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।
पाणी पडी मुंद्रडी सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।
अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।
भरहेसर वरझाण नाण केवल संपत्तउ ।
एउ चक्कवट्टि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
सेणिय करइ पसंस दुमुहदुब्बयणि निवारइ ।
रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
सिरकक्कजि सिरि हत्थ घल्लि संजम संभालइ ।
मनिहिं बद्ध बहु पाप आप आपिहि पक्खालइ ।
गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
भरहसरिसु बल झुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।
हुण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
इह ऊपानं नाण माण धरि वच्छर रहियु ।
सहइ भुक्ख बहु दुक्ख तह वि न हु केवल लहियु ।
नियवहिनिबंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जव परिहरइ ।
रिसहेसरनंदणबाहुबलि सयल कज्ज तक्खणि सरइ ॥ ९ ॥
कहिय इंदि अनिरूप सुणिय सुर बंभणवेसिहिं ।
पुहवि पत्त मज्जणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणगार सणंकुमार नरलाह निरंतरु ।
इक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु ।
ख्वणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम ग्गहिउ ।
सयसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लद्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥
करइ रज्ज कंपिल्लनयरि छखंडनरेसर ।
जाइसमरणि जाणि पुव्वभवबंधव मुणिवर ।
बोहइ बहु उवएस सहसि पुण सोइ न बुज्झइ ।
भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारम मुज्झइ ।
सो बंभदत्त बंभणि किउ अंध अधिक पातग करी ।
संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरगि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥
सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय निवइ उदाइय ।
पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय ।
ख्वत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कड्ढिउ ।
उज्जेणि पज्जोयराय ओलगइ अणिड्डिउ ।
इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस बार घन भारयुं ।
तिणि दुट्टि तह वि अवसर लहवि निव उदाइ निसि मारयु ॥१२॥
चंपापुरि सुंनार नारिसयपंचह सामी ।
सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी ।
तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ ।
पदम भज्ज नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ ।
सगपंच भज्ज जे चोर तस घरणि इकु सा नारि हुय ।
पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पधूय ॥ १३ ॥
कोसंबी समि सूर वीर वंदइ सविमाणय ।
मिगवइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ ।
निसि एकाकी जाइ पाइ लग्गेवि ख्वमावइ ।
पडिवज्जइ निवदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ ।
सुहभावि शुक्ल केवल भयु भुजग विनाणिहि जाणियउ ।
जिम पयसणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥१४॥
जंबूकुमर विलासभवणि पडिबोहइ भज्जह ।
प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परधणकज्जह ।

फणयनवाणुंकोडि छोडि व्रत गंठइ सुहमणि ।
सं पिरकवि तसु वयणि मगल पडिवुज्झइ नगरणि ।
सगवीसअभिकमगपंचसिउं रायगिहि संजम लयउ ।
सो दसमि पंचमगणहरह सीस चरिमकेवलि भणउ ॥ १५ ॥
सुंसुमरागिहिं रत्त पत्त गयगिहिनयरिहिं ।
दास चिलाइपुत्त जुत्त धणवरि बहुचोरिहिं ।
कुंयरि करीय करि नट्ठ दुट्ठ अडविहिं अणुसरिउ ।
बाहर पत्तउ पुट्ठि सिट्ठि पुत्तिहिं परियरिउ ।
सो रिकि दिक्खि त्रिहु अक्खरिहिं नागसीस छंडइ करम ।
कीडियहं कट्ठि अढइ दिवसि सहरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥
जायवपुत्त जिणिंदसीस ढंढण गुणजुगह ।
अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।
वारवई छम्मास भमइ गुणि रमइ समिद्धउ ।
सुक्क दुक्क बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।
मोदकसीहकेसरसहिय कर्म कूटि केवल कलिउ ।
संपत्त सिद्धि संपत्ति सुह तपनरु इम पुप्फिय फलिउ ॥ १७ ॥
हुंति जि पंडियपवर अवरदुव्वयणि न कुप्पइ ।
खंदगसूरिसुसीस जेम आयार न लुप्पइ ।
पालयकयउवसग्ग लग्ग मण तीहं सज्झाणिहिं ।
जंत्रिहिं जीविय चत्त पत्त सवि सिद्धह ठाणिहिं ।
सो अग्गिदद्ध नरगिहिं गयउ वाडव भव भमिसिइ घणउ ।
भो भविय भावि इम कोह अरि खंतिखग्गि हेलां हणउ ॥ १८ ॥
पुज्जइ सुरवर पाय राय नितु नमइं निरग्गल ।
तपि सिज्झइं नवनिद्धि सिद्धि सवि सरइं समग्गल ।
तपह लेस हरिएसबलह जिम जगि जस होवइ ।
न कुलक्कम न प्पसिद्धि रिद्धि नवि तसु कुइ जोवइ ।
तिंदुक्क जक्क पयतलि लुलइ बहुबंभण खोहिय बलिहिं ।
कोसलियधुयपरिणीति जीय भजीय सुद्धि अच्छिपकुलिहिं ॥ १९ ॥
एसु साहुआचारसार जइ लोभि न डुल्लइ ।
वयरसामि संपत्त नयरि पाडल सम तुल्लइ ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिट्ठिकुमारी।
कणयकोटिसंजुत्त पत्त सासइं घरनारी।
गुरुवयणवयणपडिबोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि।
जिम तेणि मुक्क तिम मुक्कइ रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
नंदिसेण दोहग्गनडिउ निद्धणदंभणसुय।
भयविरत्त चारित्त गहवि तव तवइ अचब्भुय।
वेयावचपसंम इंदकियकसिहिं पहुत्तउ।
बंधिय अंनि नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ।
दसचउरसारनरवयरभूयसहसबहुत्तरिरमणिवर।
सोहग्गसार वसुदेव हुय हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं।
गयसुकुमाल मसाणि रहिउ कासगि जिणवयणिहिं।
बंभणि बंधवि पालि सीसि वइसानर दिद्धउ।
सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि मुणि तक्खणि सिद्धउ।
तस दुट्ठदुरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय गामह।
जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥
थूलभद्द गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ।
चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ।
पुव्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ।
जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ।
खरखग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन।
जे सीलभाव दुद्धर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
तवसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अवमन्निय।
थूलभद्दमुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मन्निय।
अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंबल भणि चल्लइ।
सहवि अवत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्लइ।
चंपेवि खालि पडिबोहिउ सुगुरुपासि पराउ भणइ।
निंदोइ लोकि सो गुरुवयण अणमाण इह जो सुणइ ॥ २४ ॥
गुणिअणसरिसउं गव्व म करि मूरख मच्चरि धमि।
न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गदह गयमरकमि।

सुहडभणी संभूतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।
तसु सीसिहिं पुण थूलभद्दमुणिवरगुण गिंसिय ।
तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणनणइ ।
अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि रणझणइ ॥२५॥
म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
बाहुसुबाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।
तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।
परजम्मि बंभिसुंदरि सुधूय महि महिला महियलि सुणउ ।
सिरिरिसहभरहबाहुबलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २६ ॥
अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्कण ।
इण कारणि बहुकट्ठ अप्पफल कहइ वियक्कण ।
छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अन्नानिहिं ।
पारण पुण इकवीसवारजलधोइयधानिहिं ।
सो तामलि रिसि एरिस तपी मास दुन्नि अणसणि सरिउ ।
ऊपन्न इंद्र ईसाणि तिणि मुक्कमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥
कंबलरयणविनाणि जाणि जग उत्तमचंगिम ।
नरवरपिक्कणि जाइ माइ पुत्तह पभणइ इम ।
आवि इक्क खण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।
लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।
न क्रयाणउं कुइ एउ सामि तुम्ह सालिभद्द य वयण सुणि ।
भववासविरत्त चरित्त लिइ छंडि सुक्क सहु कणयमणि ॥ २८ ॥
अयवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि पसिद्धउ ।
नलिणीगुलमविचार सुणवि तक्कणि पडिबुद्धउ ।
अज्जसुहत्थिमुणिंदहत्थि वय लेवि मसाणिहिं ।
कासगि रहिउ सीयालि खद्ध मण लग्गु विमाणिहिं ।
सुहझाणि ठाणि तिणि सुर हुओ रमणि बत्तिसे व्रत लिउ ।
तसु नंदणि तिणि थानकि पछइ महाकालदेउल किउ ॥ २९ ॥
रायगिहि मेयज्ज भज्जनवयर विवहारिउ ।
पुव्वमित्त सुरि बोहि दिक्क दुक्खिहिं लेवारिउ ।

विहरंतउ सिरि वच्छ सुद्दसेणारह मंदिरि ।
पंचंपि कणय जय लक्ख लक्ख वरसउ तिणि नयर सिरि ।
छट्ठणाइ दिट्टि सुइ नीयकम्मीय हलिय धरणि निवम्मु भणउ ।
सग पंचियमाण रसा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥
धणगिरिसिरिगिहनंदउयरि आयउ जाईसर ।
छम्मासिउ पिउपासि वयर संपत्तउ वयधर ।
सम सम्भवि मुणिकज्जि गुरिहि पायण अणुजाणीय ।
भत्त संतगिरिसीस ऊंहि मसिय इग पाणीय ।
जं भाणगण मनि परिहरी सुगुरुवयण इम सदहइ ।
ते सुक साधु सुकृतीण सविगुणनिलाण सुकगति लहइं ॥ ३१ ॥
संगमसूरि गिलाण वासि संजमविहि रसइ ।
धम्मनत्तकि नगर मांस दत्त गुरुदोस निरिक्खइ ।
विनाविहार सपिञ्च पिट अंगुलि दिप्पंतिय ।
निम्मयास नितु सरउ अमणु दीवय मणि चिंतिय ।
ससंकउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।
पोरंघगार घण सह करि सम्मदिट्टि सुर सिरवइ ॥ ३२ ॥
वद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहि आवइं ।
गोसालउ चउसाल आप जिणवर भणावइ ।
सव्वलिपुत्तासम्म करइ पहु पुच्छिउ सामिहिं ।
जिणवरसंमुह मुक तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।
सं पिरिख सुगुरुपरिभव असाह सुनक्खत्त मुनि विवि थयउ ।
तिणि तेजि दहु आराधना करवि सग्गि अच्चुति गयउ ॥ ३३ ॥
नालियवादि नरिंद नयरि सेतंबी पएसी ।
पासर्सीस विहरंत पत्त तहिं गणहर केसी ।
नरयगमणि इककित्त सुगुरुवयणिहिं पडिबोहिउ ।
सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं सोहिउं ।
सहूकालि काल करि सु जि मरिउ सूरिआभसुविमाणि सुर ।
इम सुरियद्गुरु दृगिहि हणी सयल सुरक साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥
तुरमिणिपुरीनरिंद दत्त बंभणकुलि बहुबल ।
माउलकालिगसूरिपासि पुच्छइ जन्नह फल ।

अंगपीड अंगमिय सुगुरु सच्चं चिय जंपइ ।
जागि जीववधि नरय सुणवि सु जि कांपइं कंपइ ।
अहिनाण जाण सरामदिवसि मलप्रवेश मुहि तुझनणइ ।
दक्खिन दुट्ठभय परिहरिय धम्मवयण मुणि इम भणइ ॥ ३५ ॥
आमि मरीइ मुणिंद भरहसुय नियवय छंडइ ।
कियपरिवायगवेस रिसहपहुसरिसि त हिंडइ ।
पडिबोहइ बहुलोय दिक्ख जिणपासि लियारइ ।
अन्नदिवसि अतिकुटिल कपिल तसु वयण विचारइ ।
तसु सिष्यकाजि कूड नवि फलइ इत्थ उत्थि बहु धम्म छइ ।
भय कोडिसागर भमिउ हुउ वीरजिण नउ पछइ ॥ ३६ ॥
जन्ममरणि पच्छाद नयर नव तुंगियगिरिसिरि ।
जाइ मरण इम हरिण रहइ अहनिसि रिसिपरिसरि ।
[illegible] पस घनि माग्ग करावइ ।
जिमणवेल जाणेवि लेवि मुणि मृग सहिं आवइ ।
ओ दियइ दान ओ सुझमण ओ त्रिहुगुण मति भिमयइ ।
गिरि पडइ डाल समकाल त्रिहुं पंचलोय सुरगति हयइ ॥ ३७ ॥
[illegible] लिइ [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] पुच्छिउ ।
[illegible] ॥ ३८ ॥
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥ ३९ ॥
[illegible] ।
[illegible] ।

दीवअवधि काउसग्ग करिय निचल हुइ पालइ ।
दासी पुण दीवेल घल्लि चउपहर उजालइ ।
पूरिय प्रतिज्ञ प्रह्उग्गमणि परम प्रीति पामिउ पवर ।
सुकुमालअंग सुहझाणमण सग्गलोइ संपन्न सुर ॥ ४० ॥
सावय सागरचंद रहिउ काउसग्गि महावनि ।
कमलामेलाहरणवैर नभसेन धरइ मनि ।
घल्लइ सिरि अंगार तह वि सो झाणनिरत्तउ ।
पोसहवय दृढ पालि टालि दुह सग्गि पहुत्तउ ।
जइ छूंति दुसह उवसग्ग सहइ स गिहत्थ सुकुमालतणु ।
ता अइदुक्करचारित्तधर साहु धेम न सहंति पुण ॥ ४१ ॥
चंपापुर अठारकोडिधणवइ कोडुंबिय ।
पोसह करि काउसग्गि रहिउ निसि भुज आलंबिय ।
इंद्रप्रसंस असद्दहंत अमरेहिं परिरिक्खिय ।
मत्तगइंदभुयंगघोररक्खसभय दक्खिय ।
न हु चलिउ मेरुचूलाअचल कामदेव गिहवइ सुथिर ।
पहुवीर पयासिउ सहसमइ सोसवग्गअग्गलि सुविर ॥ ४२ ॥
रायगिहि इक रंक अछइ अइदुक्खिउ अग्गइ ।
उज्जाणी जण जत्त पत्त तहिं भिक्ख सु मग्गइ ।
अलहंतउ अइरोसि दोसि नियकम्मिहिं नडिउ ।
चुरिसु लोग समग्ग एम चिंतिय गिरि चडिउ ।
ढोलेइ ढोल परवसतणा गडयडाट सुणि नट्ठ सहु ।
पापाणि तेणि सो चंपिऊ नरयदुक्ख पामिऊ दुसहु ॥ ४३ ॥
चउमाण पय लिऊ जाव धीजऊ घरसालऊ ।
मुंड तुंड मंडेवि पुंठि विलगऊ गोसालऊ ।
जिणवयणिहिं विधि जाणी तेजलेसा तपि साधी ।
तह अट्ठंगनिमित्त पढ़ वि विद्या तिण लाधी ।
उम्मग्गचारि अनरथभरिउ गुरुद्रोहि गरविहिं नडिउ ।
मंखलिसुय मोघ विशेस करि दुहसायरि दुत्तरि पडिउ ॥ ४४ ॥
दढपहारि घट चोर जाइ कुसथलिमिडं चोरिहिं ।
खीरकज्जि धावंत विप्प मारिउ तिणि चोरिहिं ।

वंभणभद्र सगब्भ हणिय बालक फुरकंतउ ।
पिक्खवि भववेरग्गि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।
अक्कोस बंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
वीरसेणसेवक सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।
कालसेनरिउराय जेण विहुबाहिहिं बद्धउ ।
तिणि गुणि संघनरिंदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।
वेरग्गिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्तउ ।
पचारिय पूरव बाहुबल कालसेनि कुट्टाविउ ।
सव्वट्ठसिद्धि सुरवर सरिउ कोह कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
सावत्थीनियकणयकेतुसुय खंदग नामिहिं ।
दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
तन लिखइ तस ताय नेहि सिरि छत्त धरावइ ।
तह वि अवक्कउ बंधुपासि कंतीपुरि आवइ ।
तस बहिन सुनंदा रायघरि भगिणि जंतु तिणि दिट्ठ सुणि ।
नरवरि अलीकशंका धरिय हरिय प्राण तस तिणि खणि ॥ ४७ ॥
दीसवसिउं रहरत्थगिरि सुकुमाली सयणातुरि ।
वंसदत्तनिवपुत्तदहण दुखइ लक्खाहरि ।
सत्थन मंत्रि सुरंगसंगि रक्खिउ परपंखिहिं ।
खिलिय खिलिय महिमंडलि रत्त पुण लहइ सुगंधिहिं ।
इह काम कोइ न हु चहडउ भवगरुय नडविडणउं ।
मुहियां जि मूढ मोहिय भणइ हणइ कम्म पर नडतणउ ॥ ४८ ॥
नेयरिपुरि निव कणयकेतु पउमावइ राणी ।
मंत्री तेयलिपुत्त तत्र तस पुट्टिल नाणी ।
जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
राणी मंत्रि कहेवि एक सुय छन्न रहावइ ।
सामाइ तस दंसण सु जि कुमर राय सहसइ किय उ ।
सहसइ पुत पुट्टिलसुरवयणि पडिबुद्धउ केवलि हियउ ॥ ४९ ॥
स्वयंप्रभ सवि परवि मागह पहुत्तउ सयसंगणि ।
बहुवर्गिहि सहि दिक्खिसुहिसुणिहिं जिणउ मणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह भाइसिरि मिल्हइ ।
धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सासयसुह छिल्हइ ।
इम चिंति चिति संजम सबल बाहुब्बलि कासगि रहिउ ।
भरहेसर पत्त अवज्झपुरि आयनेह किंत्तिम कहिउ ॥ ५० ॥
भज्जा विसयविकारिभारि पइमारणि चल्लइ ।
सूरियकंत कलत्त भत्तभीतरि विस घल्लइ ।
रायपएसि सुधम्म रम्म पोसहवय पारिय ।
करइ पारणउं जाव ताव तक्खणि विसि धारिय ।
सुहझाणि ठाणि निअ आणि मण सग्गलोइ संपत्त सुर ।
दुक्कमचारि मा नारि पुण भमइ भूरि भव भीडभर ॥ ५१ ॥
वीरवयणि जाणेवि नरय सेणिय चिंतइ मनि ।
कोणिय रज्ज ठवेसु लेसु संजम जाई वनि ।
हल्लविहल्लहं हार गुरुयगयवरसिउ दिद्धउ ।
कूड करी कोणिकि रायसेणिय तव बद्धउ ।
नियताय कट्ठपंजरि धरी त्राण पाण वे राहवइ ।
सयपंच घाय दिणि दिणि दियइ पुत्तनेह एरिस हवइ ॥ ५२ ॥
वणियपुत्त चाणिक्क कवड बहुबुद्धि वियाणइ ।
चंदगुत्तमाहिज्जकज्जि पव्वयनिय आणइ ।
तस्ससरिसी अतिप्रीति करीय अरिकंटय टालिय ।
नंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उद्दालिय ।
विसकन्न जाणि परिणाविउ सो वि मित्त जमपुरि लयउ ।
नियकज्ज करवि विहडिउ पछइ मित्तनेह एरिस भयउ ॥ ५३ ॥
परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुयअंगुब्भम ।
कत्तविरिय नरनाह हणइ मासीसुय दुद्दम ।
अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।
खत्तियवंस असेस फरसुझालिहिं तिणि दहियउ ।
नियघरणि नट्ठ पच्छन्न ठिय तस सुभूम सुय चक्कवइ ।
निद्दलइ वंस बंभणतणउ निययनेह एरिस हवइ ॥ ५४ ॥
अज्जमहागिरिसूरि भूरिभवपावनिवारण ।
गिइ जिणकप्पि करंति तस्स तुलणा अइदारुण ।

कुलघरनियसुहृसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।
अपडिवद्धविहारसार संजमगुणमंडिय ।
सावयघरि अन्नसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।
अइआदर दिक्खि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥
सेणियधारणिपुत्त मेह भज्जट्ठ विमुक्किय ।
वीरपासि वय लिद्ध वुड्डि निसि संजम चुक्किय ।
पुव्वजम्म परिकहिय पुण वि थिर किद्धउ वीरिहिं ।
बहुजइजणसंघट्ट सहइं अइदुसह सरीरिहिं ।
सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।
चापरइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥
चेइयधूयसुजिट्ठसुद्धमहासइअंगुब्भम ।
विज्जाहरपेढालपुत्तु विज्जावलदुद्दम ।
खायगसम्मद्दिट्ठि अंग इग्यारइ जाणइ ।
तह वि विसयरसरंगि अंगि अतिदूषण आणइ ।
उज्जेणि उमावेसाबसिहि करवि कूड हेला हणिउ ।
सो सव्वइ सचइं नरय गय विसयदोस एरिस भणिउ ॥ ५७ ॥
वारवईपुरि पत्त नेमिपहु केवलनाणी ।
दसदसारनरनाह कन्ह निसुणइ जिणवाणी ।
सहसअढार मुणिंदचंद विधिवंदणि वंदइ ।
नरयभूमि चिहुदुक्खक्ख निम्मूल निकंदइ ।
तित्थयरगुत्त बंधइ सुदृढ असुहकम्म हेला हरइ ।
पूजापणामवंदणविणय सगुणसाहुसंगति करइ ॥ ५८ ॥
चंडरुद्द गुरु रुद्दरोसि रीसाल विदित्तउ ।
उज्जेणीउज्जाणि सगुणसीसिहिंसिउं पत्तउ ।
नवपरणीन कुमार हसिय पभणइ दिउ दिक्ख ।
सूरि सीस तस चंपि केस लुंचिय दिय सिक्ख ।
सो सीसभावि संजम लियइ मग्गि लगिग गुरु सिर धरी ।
निम सहइ घाय दुव्वयण जिम लहइ वेउ केयलसिरि ॥ ५९ ॥
गयकलगे परिवरिउ सूयर सुमिणइ मुणि दिट्ठउ ।
तिणि अहिनाणि सुसीससहिय पुण कुगुरु अणिट्ठउ ।

निसि चंपइ अंगार सुणवि मन्नइ प्राणिउ ।
तय अंगारयमद्द सूरि अभविय इम जाणिउ ।
ते सीस सवे नियपुत्त हुय सूरि करह घरहरभरिउ ।
तिहिं देखि सयंवरि आवते पुव्वजम्म नरकणि सरिउ ॥ ६० ॥
पुप्फचइसुय पुप्फचूल भइणी तह भज्जा ।
सुमिणि नरयदुह देखी पुप्फचुला पव्वज्जा ।
अग्नियसुयगुरुकज्जि खीणजंघाबल जाणी ।
आणंती सा भत्तपाण हुय केवलनाणी ।
पुच्छेइ सूरि मह नाण कहि सु पण गंगाभीतरि कहइ ।
तय दुट्ठदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥
सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंबणि ।
के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।
जिणि कारणि पुव्वंमि जम्मि थावरत्तभीमरि ।
घोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।
सुहभावि पावि परिसुद्धमण सरलसार संतोससमय ।
जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥
लद्धि पत्त पत्तो य पुरु सुहसिद्धि समाणइ ।
अच्छेरयसमतुल्ल बुद्ध चिंति ते मनि आणइ ।
निहिसंपत्ति स भित्ति भरवि थियसाय ति छंडइ ।
सामग्गी परिहरिय करिय पानग निय दंडइ ।
करकंडुदुमुहनमिनग्गइ पिहुचरित्त चिंतिय सुपरि ।
धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय गुरु माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥
ससगभसगनियपुत्तबहिणि सुकुमालिय कुमरी ।
चंपापुरि चारित्त लेइ रूपिहिं किर अमरी ।
फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणा ।
रक्खइ बंधव बेउ लेइ तिणि अणसण समणी ।
बहुदिवसि साधि तपि मूरछामुइय जाणि बंधि परठवी ।
ओसहविसेसि सु जि सत्थ करि सत्थवाहि गेहिणि ठवी ॥ ६४ ॥
सु बहुसीसपरिवारसार सिरिसंभविदिक्खिउ ।
महुरापुरि सिरिमंगुसूरि दर्सणिहिं सिक्खिउ ।

नयरग्वालि उप्पन्न जक्क बहु दुक्क निहालइ ।
सुविहियजणपडिबोहकज्जि नियजीह दिग्वालइ ।
जिप्पइ मुणिंद रसणिंदियह अणजित्तइ एरिसु हुउ ।
जग्गइ जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्रां सुउ ॥ ६५ ॥
गिरिसुय प्रहिउ पुलिंदि पुप्फसुय तयसी सेवइ ।
सुयडा अडवीमज्झि अछइ पद्मोदर वेयइ ।
इक्क भणइ लिउ मारि अवर पुण विणय पयासइ ।
अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।
इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुद्द नक्कणि तरउ ॥ ६६ ॥
सिरिथावच्चापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।
सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुद्दमि ।
गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
खामंतइं पगि लागि पव्ववासरि तिणि कहियउ ।
मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।
सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सित्तुंजय सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥
सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।
वीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
दस प्रतिबोध्याविणु न लेइ आहार निरंतर ।
इक्क न बुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।
इय जस्स सत्ति देसुणतणी अहह सो वि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥
वरससहस तव कट्ठ करिय कंडरिय न सुद्धउ ।
अंति दुट्ठपरिणाम कामवश नरयनिबद्धउ ।
अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
पुंडरीक सव्वट्ठसिद्धि सुहबुद्धिनिरुत्तउ ।
बहु दुक्क सहवि नवि लद्ध सुह अप्प दुखि बहुसुग्व लहिउ ।
बिहु बंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवति कहिउ ॥ ६९ ॥
नयरि कुसुमपुरि राय भाय दुइ ससि सूरप्पह ।
ससी न मग्गइ धम्म रम्म मग्गइ विसयासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि सीजइ दुहतत्तउ ।
करवि सुर दुइ पुर सगि सत्तमइ स पत्तउ ।
सनि रहइ सुरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खयउ ।
सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुरुक्ख किम रक्खियउ ॥ ७० ॥
सुग्गइमग्गपईव नाण जे दियइं निरुप्पम ।
तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जगमज्झि जगुत्तम ।
दिक्खउ जेम पुलिंदि सिवगजरकइ नियलोयण ।
तिण सरिसउं सुर यत्त धरइ भत्ताइ दिय भोयण ।
वेयल्लइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
तिणि कारणि बिहुपरि करि विणय जिम बाहिरि तिम अंतरइ ॥७१॥
अंवचोर चंडाल चडिउ अभयटकारि कंपइ ।
दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।
विणयविवज्जिय विज्जकज्ज करियइ नवि जग्गइ ।
सिंहासणि यइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल बिहुह कज्ज तक्खणि सरिउ ।
इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुपामि करिउ ॥७२॥
दगसूयरउ तिदंडि तामलित्ती पुरि अच्छइ ।
नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
महिमा मोहिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सचउ नवि कहियउ ।
गुरुलोपि कोपि विज्ञा गई गयणदंड गडयडि पडिउ ।
लज्जियउ लोकि हसिउ सयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥
थंभण एक अनेककुडकवडाइनिरुत्तउ ।
उज्जेणिहिं कड्ढियउ देसि सम्मारि स पत्तउ ।
बिहुं गामहं विचालि करइ मप थेसि त्रिदंडी ।
भगतलोकघरसार मुसइ निसि सु जि पाखंडी ।
अहन्य छिउ हत्थि नरवरतणइ नयण कड्ढि नडियाै घणउ ।
बहु झुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ नियकुडरक्खणउ ॥ ७४ ॥
दुहरंग वरदेव कुट्टिरूपिहिं पहु वंदइ ।
छींक करइ जव वीर नाम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियपमनि निर जीव अभयपमनि जा पड विहुपरि ।
कालसूरपमनि कहइ म मरि म म जीविस अणुसरि ।
मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एम परमन्थ पुण ।
जिण भणइ विप्पसेडुयचरिय निहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
यरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।
जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किज्जइ ।
कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव निवारउ ।
परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।
कुलकारण किं पि म लिक्खयउ गुणह रूप गुरुयडि धरउ ।
परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥
हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
तं पुण दिइ उपदेस जेण किंडइ सुख आवइ ।
जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
जं भरहाहिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
जं जं अवर वि सुरअसुरनरमुक्ख सुक्ख माणइ घणउ ।
तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥
खत्तियकुंडि जमालि वीरजामाइ खत्तिउ ।
सुदंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
नवि मन्नइ किज्जंत किड इय आगमवाणी ।
निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।
नियकित्ति मुसिय सुर किव्विसिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
सयपंच साहु साहुणि सहस ढंकसड्ढि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥
जिम मासाहस पंखि मुखिहिं मा साहस जंपइं ।
वग्धवयणि पइसेवि मंस लिंतउ नवि कंपइ ।
तिम अवरह उवएस दिंति किवि फुडवयणकरि ।
पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
वेरग्गवाणि नड उचरइ जलहि जालि पाणी गलइ ।
इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलतलइ ॥ ७९ ॥
धम्मबीय जिणराइ आणि दीवंतर दिद्धउ ।
अविरति सयल वि खद्ध देसविरते अध खद्धउ ।

पासत्थे पुण खुद्दि विन्ति न्हाइव सहु द्दारिउ।
संजमि ए सुभभिंगिरि सव्व वावीय पब्बारिउ।
त्रिहु भेदि जीव ते फरसणी राजदंडि अप्पउं दहइ।
सुविहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
इणिपरि सिरिउवएसमालकहाणय।
तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय।
सावयसंभरणत्थ अत्थपय छप्पयछंदिहिं।
रयणसींहसूरीससीस पभणइ आणंदिहिं।
अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं।
भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥
॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वस्थानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव आदीसर सेत्तुजसिहरे।
अनु अरिहंत सव्वे वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय।
जसु पयकमलपसाय मूरखु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
संघपतिदेसलपूतु भणिसु चरिउ समरातणउ ए।
धम्मिय रोलु निवारि निसुणउ श्रवणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥
भरह सगर दुइ भूप चमवनि न हुअ अतुलबल।
पंडव पुहविप्रचंड मीरधु उधरइ अतिसबल ॥ ४ ॥
आवइतणउ संजोगु हुअउं सु दूसम नय उदए।
समइ भलेरइ सोइ मंत्रि वाहडदेउ ऊपजए ॥ ५ ॥
हिव पुण नवी य ज वात जिणि दीहाडइ दोहिलए।
खत्रिय खग्गु न लिंति साहसियह साहसु गलए ॥ ६ ॥
तिणि दिणि दिनु दिखाडउ समरसीहि जिणधम्मवणि।
तसु गुण करउं उद्योउ जिम अंधारइ फटिकमणि ॥ ७ ॥
सारणि अमियतणी य जिणि पहावी मरुमंडलिहिं।
किउ कृतजुगअवतारु कलिजुगि जीतउ बाहूबले ॥ ८ ॥

ओसवालकुलि चंदु उदयउ एउ समानु नहीं ।
कलिजुगि कालइ पाखि शांतिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुण्यवंतलोयह निलउ ।
मोटइ पाल्हविहारु पासभुवणु नहि पुरतिलउ ॥ १० ॥
भास—ठाइ ठाइ रूअडा ए मढमंदिरह नियेसु त ।
वाविकूवआरामतणा घरपुरसरसपएस त ।
उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
[illegible] तहि नगरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
तसु पयकमलिसिरिमउडो गणहरु जयदेवसूरि त ।
हंसनेमि जगु जगु रमए गुरुगरीमजलपूरि त ॥ २ ॥
तसु पयकमलभमरकुलउ ए ककसूरि मुनिराउ त ।
[illegible] तिणि संठियउ ए [illegible] त ॥ ३ ॥
[illegible] तसु [illegible] त ।
[illegible] त ॥ ४ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ५ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ६ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ७ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ८ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ९ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ १० ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ ११ ॥
[illegible] त ।
[illegible] त ॥ १२ ॥

ीयभाषा-रतनकुखि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया ।
सहजउ साहणु समरसीहु बहुपुन्निहिं आया ॥ १ ॥
लहुअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।
रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥
तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सघन्न ।
रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कन्न ॥ ३ ॥
गोसलसुति आवासु कियउ अणहिलपुरनयरे ।
पुन्न लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥
चउरासी जिणि चउहटा वरवसहि विहार ।
मढ मंदिर उत्तंग चंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥
तहिं अछइ भूपतिहिं भुवण सत्तखणिहिं पसत्थो ।
विश्वकर्मा विज्ञानि करिउ घोइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
अमियसरोवरु सहसलिंगु इकु धरणिहिं कुंडलु ।
कित्तिखंभु किरि अवतरेसि मागइ आखंडलु ॥ ७ ॥
अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्मु कलिकालि अगंजिउ ।
आचारिहिं इह नयरतणइ सचराचरु रंजिउ ॥ ८ ॥
खानसाहि सुरताणभीचु तहिं राजु करेई ।
अलपखानु हींदूअह लोय घणु मानु जु देई ॥ ९ ॥
साहु रायदेसलह पूतु तसु सेवइ पाय ।
कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥
मीरि मलिकि मानियइ समरु समरथु पभणीजइ ।
परउवयारिपमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥
जेठसहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजू ।
दक्षणमंडलि देवगिरिहिं किउ धम्मह वणिजू ॥ १२ ॥
चउवीसजिणालय जिणु ठविउ सिरिपासजिणिंदो ।
धम्मधुरंधरु रोपियउ धर धरमह कंदो ॥ १३ ॥
साहणु रहियउ खंभनयरि सायरगंभीरे ।
पुव्वपुरिसकीरितिनरंडु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥
ीयभाषा-निसुणउ ए समइप्रभावि तीरथरायह गंजणउ ए ।
भवियह ए करुणाराचि नीठुरमनु मोहि पडिउ ए ।

समरऊ ए साहसधीरु बाहविलग्गउ वहू अ जण ।
बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
अभिग्रहू ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्वणबाहवलि ।
उधरऊ ए आदिजिणबिंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
भेटिऊ ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
वीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कज्जे ।
सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हतणउ ए ।
भइली ए हुनिय निरास ह ज भागी य हींदूअनणी ए ।
सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
आपिऊ ए सव्ववयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
अहिदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
पनमन ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो नहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
संघिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमामिय वहुयपरे ।
मासण ए यर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही मसुनणउ ए ।
इह जुग ए नही य धीमासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
तउ तुहू ए पुन्नप्रकासु करि ऊधरि जिणवरधरमु ॥ ६ ॥
चतुर्थभाषा–संघरनिदिमन्दु हरषियउ अनि धरमि सनेमो ।
पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहिनो ।
वीनती अम्हसणी प्रभो अवधारउ एक ।
तुम्ह पसाइ सकल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
सेत्तुजतीरथ ऊधरिया ऊगउ भावो ।
एकु सरोवनु आरगउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
मदनु पंडितु आइसु सवि आगमणि पहुतइ ।
गुणुरयणु मनमाहि धरिउ गाढउ अनि रुणइ ॥ २ ॥
रानेरा महि सानु वसइ महिपालदेउ गाणउ ।
जीवदया जगि जागिअए जो धीर मराणउ ।

पालउ नामिहिं मंत्रिवरो तसुनणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोर जिसउ मारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहिं उपकंठे ।
टंकिय याहइ मुग्गहार भांजइ घणगंठे ।
फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजपणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाधा रयणा ॥ ४ ॥
कूआरसि उछवु हुअउ त्रिसंगमइनहरे ।
फलही देषिउ धामियह रंगु माइ न सहरे ।
अभयदानि आगलउ कमणारसचित्तो ।
गोत्ति मेल्हावइ पहराकुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥
भांहू आव्या भाउघणउ भवियागण पूजइ ।
जिम जिम फलही गुजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरवु झमकइ ।
अचरिउ देषिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
बालचंद्र मुनि वेगि पवर कमठाउ करावइ ।
किं कप्पूरिहिं घडीय देह षीरसायरसारिहिं ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरषु न माए ।
देसलउअह चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भाषा-संघु बहुभत्तिहिं पाटि बयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहिं विचारिउ ।
पोसहसाल च्यमासण देषए ।
सुरितेयंबरमुनि मयि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि बयसयि फरी के वि मसाविया ।
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय घाइया ।
बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ बहुभत्ती य गरुआइया ॥ २ ॥
सुहगुरुगिभसुरियासि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

कुन्देवत मम्भिगा वि भुजि अवतरइ ।
गृहव सेम भरइं निन्कु मंगलु करइं ॥ ३ ॥
पोमवदि सातमि दिवसि सुमुहुत्तिहिं ।
आदिजिणु देवालए ठविउ सुहगिरिसिहिं ।
पम्मधोरी य धुरि धवल धुर जुराणा ।
कुंकुमपिंजरि कामधेनुपुराणा ॥ ४ ॥
इंदु जिम जयरणि पडिउ संगारए ।
गुरुवणिगि माणिगाल्लु निलालए ।
ता किर हयवरो नगहु रागिउ हुउ ।
करइ मराविनि नडुनु इह लडर ।
अमरि य मुनिवरवेरु मागपजणा ।
सिन्दु व सिरइ सिम जिनिण लोग गणा ॥ ५ ॥
कम्पुणवंसविगायहुणि बराए ।
पुरिसभेगायरि ओयरो गरुराए ।
बहुभारहरणि बणा देवु अवनारिउ ।
मुरिंदि देवाल्लड संभारि संभालिउ ॥ ६ ॥
दुरि कणयनि कलि के वि गयाहिणा ।
नवतरुणि रंगिड निरुवड तडिगर ।
जलनु वालु हर संतानि पाडिणा ।
हरिणारुधी संदुरो मराउ हर तिणा ॥ ७ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आगेवाणिहिं संचरए संघपति साहुदेसलु ।
बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चलु ॥ ३ ॥
पाछेवाणिहिं सोमसीहु साहुसहजापूतो ।
सांगणुसाहु ह्लणिगह पूतु सोमजिनिजुत्तो ।
जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।
चरीप हींड चहुगमे जोइ जो संघअसुहकरु ॥ ४ ॥
सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सकलो ।
सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
धंधूकउ अतिकमिउ ताम लोलियाणइ पहूतो ।
नेमिभुवणि उछवु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
सत्तमी भाषा- संघिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।
पूजिउ परवतराउ पणमिउ बहुभत्तिहिं ।
देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
पणमइ सेत्रुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
पालीताणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
वज्रसहाय सहुभाय लहु आवियउ मिलेवि ॥ ३ ॥
महजउ साहणु सीहि थिन्हइ गंगप्रवाह ।
पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरतीरिहिं ।
पंपि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
सेत्रुजसिहरि चडेवि संघु सामि ऊमाहिउ ।
सुललितजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।
सीपलो पापए पाजो भयदाहु ओलहावए ।
मार्डीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
जिणबिंबइ पूजेवा कवडिजखु जुहारए ।
अणुपमसरतडि हांडै पहुता सोहदुवारे ।
तोरणतलि वरतंते घणदाणि संघपत्ते ।
भेटिउ आदिजिणनाहो मंडिउ पर्छाटमरूपवो ॥ ६ ॥

आगेवाणिहिं संचरए संघपति साहुदेसलु ।
बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चलु ॥ ३ ॥
पाछेवाणिहिं सोमसीहु साहुसहजापूतो ।
सांगणुसाहु लूणिगह पूतु सोमजिनिजुत्तो ।
जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।
चडीय हींड चहुगमे जोइ जो संघअसुहकरु ॥ ४ ॥
सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सफलो ।
सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
धंधूकउ अतिक्रमिउ ताम लोलियाणइ पहुतो ।
नेमिभुवणि उछवु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
सप्तमी भाषा-संघिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।
पूजिउ परवतराउ पणमिउ बहुभत्तिहिं ।
देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
पणमइ सेत्रुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
पालीताणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
फल्लसहाय लहुभाय लहु आयिपउ मिलेवि ॥ ३ ॥
सहजउ साहणु तीहि त्रिन्हइ गंगप्रवाह ।
पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरतीरिहिं ।
पंथि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
सेत्रुजसिहरि चडेवि संघु सामि ऊमाहिउ ।
सुललितजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।
सोपलो पायए पाओ भयदाहु ओल्हावए ।
माडीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
जिणबिंबइ पूजेवी कवडिजक्खु जुहारए ।
अणुपमसरतडि होइ पहुता सोल्हुवारे ।
तोरणतलि वरसंते घणदाणि संघपत्ते ।
भेटिउ आदिजगनाहो मंडिउ पर्व्वोठमहछवो ॥ ६ ॥

१

अष्टमी भाषा-चलउ चलउ सहियडे सेत्रुजि चडिय ए ।
आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोइसउं ए ।
माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अवाह॥१॥
माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जचारा ।
अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥२॥
देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।
लगनमहूरतु सुरगुरो साधए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥
भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ ध्रिवु धरमकंदो ।
दुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अमियरसे ॥ ४ ॥
देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।
सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि धनि चीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥५॥
रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंवर चामरजुयल अनु दिव्वदुंभि ।
आदिजिणु पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥
आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगि रंजियले ।
दानमंडपि थिउ समर सिरिहि वरो सोवनसिणगार दियइ याचकजन ॥७॥
भत्ति पाणी य वरमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ थाहइ दुहियदीण ।
धाविउ सुधम वितु सिडखेत्रि इंद्रउच्छवु करि ऊतरए ॥ ८ ॥
भोलीयनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।
तेरहकहत्तरइ तीरथउद्धारु थउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥
नवमी भाषा-संघवाछलु करी चीरि भले माल्हंतडे पूजिय दरिसण पाय ।
सुणि सुंदरे पूजिय दरिसण पाय ।
सोरठदेस संघु संचरिउ मा० चउंडे रयणि विहाइ ॥ १ ॥
आदिभक्तु अमरेलीयह माल्हं० आविउ देसलजाउ ।
अल्वेसरु अलु जवि मिलए माल्हं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥
ठामि ठामि उच्छव हूअइ माल्हं० गढि जूनइ संपत्तु ।
महिपालदेउ राउलु आवए माल्हं० सामुहउ संघअणुरत्तु ॥ ३ ॥
महिपु समरु बिउ मिलिय सोहइं माल्हं० इंदु किरि अनइ गोविंदु ।
तेजि अगंजिउ तेजलपुरं मा० पुरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥
चउपथरलोभेयस्रवाहिं करं माल्हं० नरहरी य गडमाहिं ।
उजिलऊपरि चालिया ए माल्हं० चउविहसंघउमाहिं । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपालु। सुणि०।
सुवनरेहा नदी तहिं वहए माल्हं० तम्बरतणउं झमालु ॥ ५ ॥
वाज वहंता धामियइ मा० कमि कमि सुकृत विलसंति। सुणि०।
ऊंची ए चडियए गिरिकडणि मा० नीची ए गति पोढंति ॥ ६ ॥
पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देइ।
सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० ऊतरिया मढमाहिं। सुणि०।
कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेइ।
पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्हेइ ॥ ७ ॥
अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांबिपज्जूनि चडंति। सुणि०।
सहसारामु मनोहरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ। सुणि०।
कोइलसादु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु। सुणि० ॥८॥
नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुट्ठ जिय ठाउं न लहंति। सुणि०।
इम्मइ मीरथि निद्धणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दियंति ॥ ९ ॥
समुदविजयरायकुलनिलय मा० वीननडी अवधारि। सुणि०।
आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चउगतिफेरडउ वारि। सुणि०॥१०॥
जइ जगु एकु मुहु जोइयए मा० त्रिपति न पामियइ लोइ। सुणि०।
सामलधीर तउं सार करे मा० वलि वलि दरिसणु देजि। सुणि०॥११॥
रलीयरंगयगिरि ऊतरिउ ए मा० समरडो पुरुषप्रधानु।
वोहउ सीकिरि सांकलिय मा० राउलु दियइ बहुमानु। सुणि० ॥१२॥
दशमी भाषा-रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह वाजिय विजयडक्क।
सागुमेलुसहडसच्छाया वेलुयकुडयकयंबनिकाया
संघसेनु गिरिमाहिइ वहए।
वालीय पूछइं तरुवरनाम वाटइ आवइं नव नव गाम
नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥
देवपटणि देवालउ आवइ संघह मरथो सह पूरावइ
अपूरवपरि जहिं एक हुईअ।
तहिं आवइ सोमेसरछत्री गउरवकारणि गरुउ वहूतो
आपणि राणउ भूपराजो ॥ २ ॥
पान फूल कापड बहु दीजइं दूणसमउं कपूरु गणीजइ
जगधिहिं सिरु ठिपियए।

ताल तिविल तरविरियां वाजई ठामि ठामि थाकणा करीजई
पगि पगि पाउल पेषण ए ॥ ३ ॥
माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु करीजइ
हयगय सूझइ नवि जणह।
दरिसणसउं देवालउ चल्लइ जिणसासणु जगि रंगिहिं मल्हइ
जगतिहिं आव्या सिवभुवणि ॥४॥
देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडिवारि जलनिहिं जोएवी
प्रियमेलइ संघु ऊतरिउ।
पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणभुवणे
उच्छवु कियउ ॥ ५ ॥
सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे वत्तसमिद्धी अपूरवु उच्छवु
कारविउ।
जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बद्धी दीनु
पयाणउं दीवभणी।
कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीवि
वेलाउलि आवियउ ए ॥ ६ ॥

एकादशी भाषा–संघु रयणायरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि।
आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसबदु सुणि ॥ १ ॥
हरपिउ हरपालु चीति पहुतउ ए संघु मोलविकरे।
पभणई दीवह नारि संघह ए जोअण ऊतावली ए।
भाउलां वाहिन वाहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेडुली ए ॥ २ ॥
किमउ सुधुसपुरिपु जोइउ ए नयणुलां सफल करउ।
निवछणा नेत्रि करेसु उतारिसु ए कपूरि ऊआरणा ए।
वेडीय वेडीय जोडि वलियऊ ए कीधउं वंधिपारो ॥ ३ ॥
हेउ देवालउमाहि घडटउ ए संघपति संघसहिउ।
लहरि लागई आगामि प्रवहणु ए जाइ विमान जिम।
ऊलटलनाटकु जोइ नयरंग ए रास लउडारस ए ॥ ४ ॥
निरुमु हीर प्रवेसु दीगरे ए नयहला पथलहर।
मिरां अच्छइ कुमरविहार कमाहऊ ए कमड्ला जिणभुवण।
तीर्थंकर सोह वंदवि वंदिऊ ए नयंग आदिजिणु।

दीठउ धेणिवच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि धरिउ ।
अपूरवु पेषिउ संघु उत्तारिऊ ए पहली तहि समुदला ए ॥ ५ ॥

द्वादशी भाषा—अजाहरवरतीरथिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।
पूज प्रभावन तहिं करहिं अच्छिउ ए अच्छिउ ए अच्छिउ सफल सुछंदो ॥ १ ॥
गामागरपुरवोलितो चलिउ सेतुजि संपत्तो ।
आदिपुरीपाजइ चडिऊ ए चंदिऊ ए चंदिऊ ए चंदिऊ ए मरुदेविपूतो ॥२॥
अगरि कपूरिहिं चंदणिहि मृगमदि मंडणु कीय ।
कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।
जाइयउलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमलहारो ।
मणुयजनमुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुकृतभंडारो॥३॥
मोहग ऊपरि मंजरिय धीजी य सेत्रुजि उधारि ।
........ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समरु आविउ गुजरात ।
पिपलालीय लोलियणे पुरे राजलोकु रंजेई ।
छट्ठे पयाणे संघरए राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥
घडयाणि न विलंबु किउ जिमिउ करीरे गामि ।
मंडलि होईउ पाटलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेमि सु जीयतसामि ।
संखेसर सफलीयकरणु पूजिउ पासजिणिंदो ।
सहजुसाहु तहिं हरषियउ ए देपिऊ ए देपिऊ ए देपिउ फणिमणिवृंदो ॥ ५ ॥
डुंगरि हरिउ न थोहि खलिउ गलिउ न गिरवरि गव्वो ।
संघु सुहेलइ आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपवरिहिं अपुव्वो ॥ ६॥
सज्जण सज्जण मिलीय मारि अंगिहि अंगु लियंते ।
मनु विहसइ उलटु घणउ ए नाटक ए नाटक ए नाटक, कंठि ठवंते ॥ ७ ॥
मंत्रिपुत्रह सार मिलिय अनु ववहारियसार ।
संघपति संघु वधावियउ कंठिहि ए कंठिहि ए कंठिहि घालिय जयमाल ।
तुरियघाटमरयरि य माहि समरउ करइ प्रवेसु ।
अणहिलपुरि वद्धामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुरनिपासो॥८॥
संघचउरि इयहरवारा थापिउ रिसहजिणिंदो ।
चैत्रवदि सातमि पहुत घरे नंदउ ए नंदउ ए नंदउ जा रविचंदो ॥ ९ ॥
पासडसूरिहि गणहरह नेऊअगच्छनिवासो ।
... सीसिहि अंबदेवसूरिहि रचियऊ ए रचियऊ ए रचियऊ समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।
श्रवणि सुणइ सो बयठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १० ॥

इति श्रीसंघपतिसमरसिंहरासः ॥

सिरिथूलिभद्दफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।
थूलिभद्दमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥
अह सोहगसुंदररूववंतु गुणमणिभंडारो ।
कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।
थूलिभद्दमुणिराउ जाम महियलि बोहंतउ ।
नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥
वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया ।
लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।
अज्जविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ ।
तसु आएसि मुणीस कोसवेसाघरि आवइ ॥ ३ ॥
मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरू पिरेखेवी ।
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।
वेसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती
आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥
भास—धर्मलाभु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।
रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हियइ धरेवी ॥ ५ ॥
झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति ।
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति ।
झबझब झबझब झबझब ए वीजुलिय झबकइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥
महुरगंभीरसरेण मेह जिम जिम गाजंते ।
पंचबाण निय कुसुमबाण तिम तिम साजंते ।
जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विहसावइ ।
तिम तिम कामि य चरण लगि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते ।
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।
तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥
भास—मेहारवभरऊलटि य जिम जिम नाचइ मोर।
तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीना जिम चोर ॥ ९ ॥
अह सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनऊलटि ।
रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसऊगटि ।
चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि खुंप भरेइ ।
अतिआछउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥
लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो ।
रणरण रणरण रणरण ए पगि नेउरसारो ।
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल ।
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥
मयणखग्ग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का ।
कुसुमबाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥
भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई ।
वोरीयावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥
कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा ।
कोमल विमलु सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥
लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ ।
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ ।
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥
नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिल्ली ।
परिमललहरिहि मयमयंत रइकेलिपहिल्ली ।

अहरबिंब परवालखंड वरचंपावन्नी ।
नयणसलूणी य हावभाववहुगुणसंपुन्नी ॥ १६ ॥
भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणिपासि ।
जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥
अह नयणकडक्खइं आहणए वांकउ जोवंती ।
हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।
तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।
तवणुतुल्लु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥
बारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
एवड्डु निठुरपणउ कंइ मूंसिउ तुम्हि मंडिउ ।
थूलिभद्द पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।
लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९ ॥
मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।
एरिसु पावसु कालु सयलु मूसिउ माणीजइ ।
मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।
मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥
भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।
मूं मिल्हिवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥
उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।
चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थर गिह्नेइ ।
तिम संजमसिरि परिवएवि बहुधम्मसमुज्जल ।
आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहाबल ॥ २२ ॥
पहिलउ हियडा कोस कहइ मुक्खणाफलु लीजइ ।
तयणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।
मुणि बोल्लइ जि मइ लियउ मं लियउ ज होइ ।
कवणु सु अच्छइ भुवणतलि जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥
भास—इणवरि कोसा अवगणिय थूलिभद्दमुणिराइ ।
तसु धीरिम अयगारिकरि चमकिय गिरि सुराइ ॥ २४ ॥
अइचलथंभु सु मोहराउ जिणि नाणि निवाडिउ ।

झाणखडग्गिण मयणसुभड समरंगणि पाडिउ ।
कुसुमवुट्ठि सुर करइ तुट्ठि हुउ जयजयकारो ।
धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीतउ मारो ॥ २५ ॥
पडिबोहिवि तह कोसवेस चउमासिअणंतरु ।
पालिय भिग्गह लिय चलिय गुरुपासि मुणीसरु ।
दुक्करदुक्करकारगु त्ति सूरिहिं सु पसंसिउ ।
संघसमुज्जलजसु समंतु सुरनरहं नमंसिउ ॥ २६ ॥
नंदउ सो सिरिथूलिभद्द जो जुगह पहाणो ।
मलियउ जिणि जगि मल्लसल्लरइवल्लहमाणो ।
खरतरगच्छि जिणपदमसूरिकियफागु रमेवउ ।
खेला नाचइं चैत्रमासि रंगिहिं गावेवउ ॥ २७ ॥
॥ सिरिथूलिभद्दफागु समत्तु ॥

जंबूसामिचरिय

जिण चउवीसह पय नमेवि गुरुचलण नमेवी ।
जंबूसामिहिंतणउं चरिय भविउ निसुणेवी ।
करि सानिध सरसत्तिदेवि जिम रयं कहाणउं ।
जंबूसामिहिं गुणगहण संखेवि वखाणउं ॥ १ ॥
जंबूदीवह भरहखित्ति तिहिं नयरपहाणउं ।
राजगृह नामेण नयर पहुवि वक्खाणउं ।
राज करइ सेणियनरिंद नरवरहं जु सारो ।
तासुतणइ पुत्त बुद्धिमंत मंति अभयकुमारो ॥ २ ॥
अन्नदिणंतरि वद्धमाण विहरंत पहूतउ ।
सेणिउ चालिउ वंदणह बहुभत्तितुरंतु ।
मागि वहंतु माहाराज देखउं पेखेइ ।
भोगविरत्तउ पसनचंद बहुतवण तवेइ ॥ ३ ॥
धनु धनु माया एहरसि पसंसिउ वंदइ ।
दुमुहवयणि सो चलिउ ध्यानि कुमारगि चल्लइ ।
धम्मलाभ नवि दीयइ जाम मुनि हूउ अभाओ ।

ईहं सहू को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
सामिय वंदिउ वद्धमाण सेणीयं पूछीइं ।
जइ पसनचंद हिय करेइ काल कींछे ऊपजइ ।
मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ ।
नरगावासइ सातमए नींछइं ऊपजइ ॥ ५ ॥
बीजी पूछइं मणुय होइ त्रीजी अणउत्तर ।
दुंदुहि वाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर ।
सेणिउ पूछइ सामिसाल कांहां जईजइ ।
केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी वलि पूछइ ।
जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।
सेणिय तम्हि बूझियउं तओ तिसउं त होए ।
मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
केवलनाणउ भरहखेति केतूं वरतेसिइ ।
सामी दाखीउ विज्जुमालियउ छेहु होसिइ ।
चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।
अतिसइं दीसइ देहकंति सेणीचिनि चडीउ ॥ ८ ॥
देवहं नवि छुइ एहु नाणु यउ किम होएसिइ ।
आजूना दीह सातमए इणि नयरि चयेसिइ ।
किंकारण पुण एहकंति किह्यह अतिसउ ।
कवणह धम्महतणइ भावियउ देवभइसउ ॥ ९ ॥
ठवणि—महाविदेहतणइ विजय वीतसोय नयरी ।
पद्मरथ नामेण राउ वनमाला घरणी ।
तास ऊपरि ऊपन्न पुत्तु सुरलोयहहुंतु ।
वडइ नामिइं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
पुव्वभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पहुतु ।
आवीउ वंदण सिवकुमार बहुभत्तिसुरंगइ ।
हउं जाणउं तू मुणिहिं नाह कीहे मइं दीठउ ।
एह जन्मह नइ परभवि मुझ माइ य हूंतउ ॥ ११ ॥
ऊहापोह करेहि जाम पाडिम्मउ भय देवइ ।

जा मइं मूंकी सुरह रिद्धि मा कीणाइं लेवइं ।
तु पिनाविउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।
भवनिसामण लेइसिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥
माइ न मेल्हइं एकपुत्त सो मुनिहिं धाई ।
दृढधम्मेण सावएण जापवि बोलावीउ ।
पारि पारि दृढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।
दुल्लभ वेटी मणुयजम्म जननिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥
घरह धम्म सो मुणिहिं जाम तसु वयण मनेई ।
बिहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।
फासुयवेसण भत्तपाण दृढधम्मो आणइ ।
माहि थीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
नवकरवालीनीपधार करमं सवि सुटइ ।
निहणइ मोहपंदप्पराउ भवपरीयण मोडइ ।
बारहं वरसहंतणइ अंति आऊपूं पूरीजइ ।
पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
कयणह नारिहितणइ उयरि एह जीव पवेसिइ ।
कयणह बापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।
उसभदत्तसेठिहिं घरणि धारणिउरि नंदण ।
होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥
ऊठीउ देव अणाढिउ हरपिइं नाचेई ।
धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।
चविउ विमाणह बंभलोय धारणिउरि आविउ ।
सुमिणप्रभाविइं उसभदत्त अंगेहिं न माईउ ॥ १७ ॥
जायउ पुत्त पहाण जाम दसदिसि उदयंतउ ।
वड्ढइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
अठवरीसउ हूउ जाम गुरुपासि पहुतु ।
ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥
जोयणवेसह पहुतु जाम कन्ना मग्गावइ ।
बीजा धूया पाठवए तस विवारा घय ।
मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि हसउं करेसाउं ।

सांझहं परणी प्रहह जाम नीछइं ग्रत लेसिउं ॥ १९ ॥
माय दुल्लंघीय तणइं वयणि परिणेवउ मन्नीउ ।
आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आवीउ ।
आठइ परणी मृगनयणी वूझवणइ वइठउ ।
पंचसएचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पइठउ ॥ २० ॥
नीद्र अणावीय सोयणीय आभरण लीयंता ।
ते सवि अछइं थंभीया टगमग जोयंता ।
प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक साठि ज कीजइ ।
बिहुं विद्यावडइं एक विद्य थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
हिव हूं कहि नवि ज लेवि पुण किसउं करेसो ।
आठइ परिणी ससिवयणी नीछइं व्रत लेसो ।
रूपवंत अणुरक्त रमणि एउ एम चएसिइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस मुद्ध जीव करेसिइ ॥ २२ ॥
एयहु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।
संवेगरमि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।
सिद्धिरमणिऊमाहीया ए तम्हि संजम लेसिउ ।
कारणइं विलवइं माइबप्प किम किम मेल्हेसिउ ॥ २३ ॥
ईंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
अढार नात्रां एकभवि जंबूस्वामि कहेई ।
पितर नरकारा जंबुसामि किम तृपति लहेसइं ।
पिंड पडइ लोपहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
बाप मरवि भईंसु हुऊ पुत्रजन्मि हणीजइ ।
इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि धीयरि कीजइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस हूं मउं छांडेसिउ ।
निज कारणि जिम कलत्र भणइ अवसरता करेशिउ ॥ २५ ॥
नरइ नरिहिं हउं लोभ करउं देपि मणहर रूपडउं ।
हस्तिकलेवर काग जिम भवसायर निवडउं ।
वांनी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
निशि वानरि जिम पल्लुनाथ पहु पांनि पडेसिउं ॥ २६ ॥
विद्युन्मालई विनयगुरु आदर किम कीजइ ।

इंगालवाहग जेम तुम्हि तृस किम न छीपइ ।
बीजी कलत्र भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
तिणि जंबुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥
उत्तर पडि उत्तर बहु य संखेवि कहीजइं ।
विलखी हुई ते सव्वि बाल जंबूसामि न बूझइं ।
आसानस्वर सुघ जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
नेमिहिम्मिउं राइमइ जिम पयगहण करेशउं ॥ २८ ॥
आठइ कलत्रह बूझवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।
माइ बाप बेउ भणइं ताम अम्ह साधुसरीखउ ।
ठवणि—प्रह विहसइ सुविहाण प्रभवु विनयइ जंबुसामि ।
सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
खण एक पडपाएवि राय मोकलावण चालीय ।
तु सुहडसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडवइं ॥ ३० ॥
जस भय प्रसकइ राउ जस भय नींद्र न पयरीयइं ।
एसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
पहुतु रायदुवारि पडिहारिइं बोलावीउ ।
बेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥
पुत्तनणउ विस राय तुम्ह दरिसणि ऊमाहीउ ओ ।
कारण जाणीउ राय बेगिहि सो मेल्हावीउ ओ ।
देठि न खंडइ राउ प्रभवउ देषी आवतउ ।
साचउ ए भडिवाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।
सोहइ पूनिमचंद जइखय कोणी प्रणमीउ ।
नुलउ अक्कसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
नयणे छुडुं नीर संवेगजलहरि परिसिउ ।
सामी खमि अपराध अम्हे लोक संतावीया ए ॥ ३३ ॥
पडिवज बोलइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
धन्न पनुती माइ इम्सिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।
तो मोकलावी राउ चोरपल्ली सामंचरए ।
सजनह कहीइं एउ अम्हे संजम लेस्यउं ॥ ३४ ॥

सप्तक्षेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेवी सिद्ध सूरि उवझाय ।
पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥
जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।
समरिउ पंचपरमिठि नवकारो सप्तक्षेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥
धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।
गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्मु सुगइगामी ॥ ३ ॥
चारि अंगि दुलहु मणुजम्मु अनी अ विशेषिहि जिणवरधम्मु ।
सम्मत रयणु चिनि निवसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥
पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संभलि कथनु निरूपमु ।
नाणुपहाणु एकु जिं जिनवरधम्मु ॥ ५ ॥
भरहखित्ति खट्खंडह थिक्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।
पैनाढ्यपरहां खिति खंड होइ तहि धरमनामु नियरतन तोइ ॥ ६ ॥
उल्या विहु खंडि थिक्ति केवलि इम आपइ ।
तीहमांहि पुनि पंदने पटिया पापह ॥ ७ ॥
मज्झिम पंड इकु वइनी मध्डिउ तेउ त्रिहुभागि पाळइ पडिउं ।
चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ नवमइ भागे ॥ ८ ॥
ते अ नवाणवइ भाग साहू मिथ्यातिहि जडिउं ।
थावनउं कुमतिकुबोधिकुगुरुगहि पडिउं ॥ ९ ॥
थोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।
हिव तिहूयणिहि साह समकितु पामिउ जीवि जिनभणिउ नवतत्तु ॥१०॥
बार वरत नई पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।
सुगइनिबंधण सत्ता जीव सुगति दीयंता ॥ ११ ॥
प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होई बीजउ सत्यवचनु जीव जोई ।
त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।
इणपरि भवह समुद्दो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छहउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।
अनरथव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूल्‌ ।
पोपधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूल्‌ ॥ १५ ॥
व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।
जे ईणइ मारगि चालइ संसारे धनु सक्रियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥
समकितमूल व्रतु बारइ गहियधरमि पालेवउ ।
सप्तक्षेत्रि जिनभणिया तिह वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥
सप्तक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वितु वावेजिउ विवहपरे ।
जिनवचनु आराधीउ अवक्रमु साधिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥
सप्तक्षेत्रि जिनसासणिहि सयली कहीजइं ।
अथिरु रिधि धनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।
तेहि क्षेत्रि वावेत्रणा धानकि लाभइ देवलोको ।
कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥
पहिलउं क्षेत्र सु जिणह भुवण करावउ चंगू ।
जीछे महिमा करइ सहु श्रीचउविहसंघू ।
मूलगभारउगूढमंडपुछकुचउकीसहिउ ।
आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥
तहिं आनरइ बलामणु कीजइ आवेरउ ।
जिम जिनभवनह नालिमाहि दीसइ नींकेरउं ।
उत्तंगतोरणु थंभथोरु घांटु अनिनीकउ ।
कर्हावइ नानाविधि रूपि सारु चारु तहि नीमलु जडिउ ॥ २१ ॥
बिहु पक्ष फरती देहरी कीजइ अनिरूडी ।
टवीजइ मूर्ति जिनहतणी माहि तेवड तेवडी ।
कणयकलस दंड धांटीइं धज पूरीय किपजइ ।
छोहपकनमामाडु भलउ जीव नीपाइजइ ॥ २२ ॥
तहि जिनवारि कमाड भलां कीजइ अनिसुयिपद ।
सारूआर दृढ प्रागृ ए जो आयइ संपुट ।
ताला कूंची सांकली अनिनीमल कीजइ ।
जउ आपमणह जाइ सूर मउ संपुट दीजइ ॥ २३ ॥
प्रनिमउ जिणह भुवणु किरि अमरविमाणु ।
दीसइ मूरनि धांमराग माहि निहुपणुभाणु ।

कवणु रूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु ।
अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ असोकु ॥ २४ ॥
भामंडलुसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्र ।
भेरिचमरदेवदुंदुभिध्वनि जोइ कवणु प्रमुत्तु ।
ए थिति एसी वीतराग मेल्ही अवर न होई ।
सुरादिक जिनसेव करइं नवि भगतइं जोई ॥ २५ ॥
तउ जिनजीर्णउद्धार भवि जीव विशेषिहिं करीयइ ।
भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ सोइ समुद्धरियइ ।
लीपिउ धउलीउ भीतु देह चीत्रासु लिपीजइ ।
इणपरि भुवणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥
अनीउ जु काइं किंपि ठामु जिणभुवण सीदाइ ।
तं निश्चिइं करावीयए वहुफलु बोलाइ ।
आपणि सामिउ वीतरागु ईणपरि भणेइ ।
जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
बीजं खेत्रु सुजिनह बिंबु ते इहां विचारो ।
मणिमय रयण सुवर्णमए बिंब रूपम कारो ।
हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा घ कराीयइ ।
कीजइ कणयभिंगार कलस जे नीर भरीयइ ॥ २८ ॥
सउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
पारइ पीतलमइ भलां मिहचंनि पूजीजइ ।
घरि देवालाइं करावियं नीकाइ मणोहर ।
जीते तिहुयणसरण स्वामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
सुगंधि नीरि स्नात्रु करइ जिण जीणि आणंदिहिं ।
ते संसारह कसमलह नवि छीपइ बिंदिय ।
अंगलूहणे सूक्ष्म करउ सुपरां बहुमूलां ।
नियनियसत्ति करावियइ कीजे देवंगमूलां ॥ ३० ॥
कीजइ ओरसु रूपडा सिरखंड घसेवा ।
कपूरपटे पाटीइ कपूर जिनरवांगुणि देवा ।
मुंकइ जिणभुयणिहिं धोति अनिर्वाण धूपा ।
पाल्हाकुंची पूंजणीइ वीणाणी वूंघा ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहि सिरखंडिहि कपूरिहि आंगी ।
कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
कस्तूरिहिं कुंकुमिहि तिलउ निलाडिहिं सामी ।
ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
तउ आभरण चडावियइ सोव्रणमय घडिया ।
हीरे माणिकि मोतीए बहुरयणे जडिया ।
अतिरूयडउं आभरणउ भलउं कीजइ संपूरउ ।
नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
कानिहि कुंडल सिरि मुकुट किरि ऊगिउ भाणूं ।
जाणे तिहूयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
नयणि निहालिन वीतरागु रूयडउ सुरसार ॥ ३४ ॥
बाहुजुयलि बेउ बहिरखा अतिनीका सोहई ।
टीलूउं श्रीवत्सु सारूयार भवियण मणि मोहइ ।
सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
सोहइ बीजउरउं रूयडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥
इणि विवेकिहि बहु य विशेषिहि जिणवरपूज सलक्खणी य ।
करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्रीसंघनयणसुहामणी य ॥३६
एती अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपन्नी ।
हिव आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमन्नी ।
कीजइ कुसमे चंगेरीपए पूज कारणि रूयडी ।
पाघरीइ दीठ्ठ देवकाजि अछइ छाजी छयडी ॥ ३७ ॥
रायचंपु केतकी जाइ सेवत्री परिमल ।
बउलि सिरीवालउ बेअलु अनु करणी पाडल ।
नीलउत्री विधि पूजमाहि सोहइ अतिचंगी ।
वितपति दीसइ रूयडे तिणि नयनवभंगी ॥ ३८ ॥
नीकउ कणयर पूजमाहि वरणकि सोहंती ।
परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाडइ विहसंती ।
कुंद अनइ मुचकुंद वाल्ड जूई परिजाते ।
एसे कुसुमि करउ पूज तुम्हि तिहुयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सल्यउ यावची अनइ कल्हार ।
सहुपइ सोहइ वीतराग सामी सुरसार ।
नीलउग्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।
ईणपरि पूजइ सामिमाल नरनारी धन्न ॥ ४० ॥
एहि रामणीयइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।
तउ नक्षत्रहतणी माल दीवाग्रु चंगी य ।
देलीयइ माहि भुयण जिणबिंबहकेरी ।
आणी फुलुगे पूजियइ ते नवि संनेयी ॥ ४१ ॥
समोसरणु जो पूजीयए जो निसिपयागे ।
चिहु पखि दीसइ वीतरागु जहि तिहुयणमाल ।
तउ पूजा नीपजी पूठि धूपउटजउ कीजइ ।
वीजणिय उजेविनु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥
धूप अगुरु सातिवारेसि डावडी जि कीजइ ।
दंडामणे अनिल्पडे जिणभुवणु पुंजीजइ ।
आरोरिहिं मंजूस भली अराय चउकीयट ।
ढोइउ आगे फरउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
वद्धमाणु वरकलसु अनइ भद्दासणु छत्रू ।
दप्पणु नंदावरतु तहि साथिउ श्रीवत्सु ।
अष्ठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
इणपरि जं धन वेचीइ ए सं लेखइ लागइ ॥ ४४ ॥
दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रप्रउ दीजइ ।
चमर ढलंते वीतराग तेहि धनु वेचीजइ ।
ते उलोच करावियइ जिणभुवणमज्झारे ।
चाचोटा मरयर अ लंब कीजइ जिनवारे ॥ ४५ ॥
तोरण चंद्रुरवाली वारि साथि जिणभुवणि ।
पूजा जोइ सहु कोइ आवइ नीजि विधि ।
पूजा जोइया जिणह भुयणि तोइ गुरुगुरु आवइ ।
तउ संधिहि आमए करीउ नाहे रावियइ ॥ ४६ ॥
पडपउ वेला एक प्रभु आरं उच्चपु हंसिइ ।
संघयपणु मानेवि गुरुक निसि सिरि पइसइं ।

तिणि वेलां बइसणां पाटि जोइ पाटल्ला।
चउकीवटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ भल्ला ॥ ४७ ॥
वइसइ सहूइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता।
जोयइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरष धरंता।
तीछे तालारस पडइ बहु भाट पढंता।
अनइ लकुटारस जोईइ खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
सविहू सरीषा सिणगार सवि तेवड तेवडा।
नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रूडा।
सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता।
तालमानु छंदगीत मेलु वाजित्र वाजंता ॥ ४९ ॥
तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइं।
पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ।
पंचशब्द वाजंति भाडु अंबर वहिरंती।
इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीसंघु करंतउ ॥ ५० ॥
तउ आरत्ती पग्गुणउं कीउं आरती पटऊपरि।
ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि।
नीर लुण उतारियए कुसुम ऊतारी।
संघपति ऊठी सेसि भरइं सइहत्थिहि सारी।
संघपति आरती लिया हुइ जउ वार वहेरी।
आरती जोगी थांभली अ आगउ गरूरी ॥ ५१ ॥
पाछइ जिणगुण गाइ पढइ सहू पालउ लोक।
श्रीसंघु सीह अ दानु दियई जीह जेसा जोगु।
उतारीइ आरतीअ तोइ संघपति सइ हरखिउ।
रोमांचीसारीर तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
मंगलीकु उतारीयए धंट वाजइ गरूई।
श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूई।
तइ विधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु उतारीउ।
इणपरि सुकृतभंडार सोइ सफलजीविहि भरियउ ॥ ५३ ॥
जे जिन भुवनतणां गुण्य इंद छेदइ कहिया।
ते सुद्धधम्म करावियइ सविशेषविहि गहिया।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हुइं वीसरियउं ।
तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहूइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥
उछवुं जिनभुवणि हरषि नियमणि करइ संघु जयवंतु ।
नितु हिव श्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्रू सुणउ जीव जे जिणभणितू॥५५॥
श्रीजउ क्षेत्रु सु संभलउ ए घरलोयणे जं भणिउं वीयराइ ।
गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि उपम काइ ॥ ५६ ॥
वचन इकेका मूलु नही घरलोयणे जं वोलइ भगवंतु ।
त्रिहु भुवणे चूडामणि य मृगलोयणे सहू जाणइ अरिहंतु ॥५७॥
पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ घर० वुज्झइ लोकु अलोकु ।
सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु॥५८॥
गणधर करइ जं पुव्वधर घर० सुयकेवलिहि करंतु ।
दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ यइ सिद्धिंतु ॥ ५९ ॥
त्रिहु भुवणहतणउ जाणियइ घर० आगममाहि विचारु ।
चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोतमु सुतिहारु ॥ ६० ॥
सूत्रहार तहि निउछणा ए घर० जिणि जाणिउ एउ सूत्र ।
त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आघउं गोतम वृतु ॥ ६१ ॥
केवलनाण वुच्छिति गयउं घर० गया सवि पूरवधर ।
जे हुंता गुरु प्रज्ञघणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥
अल्पप्रज्ञह नवि धाहरए घर० जिणवयणुं निरूपमु ।
मीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगमु ॥ ६३ ॥
भक्षाभक्ष सो वुज्झियए घर० अम्ही गम्मागंमु ।
कृत्याकृत्य परीछियए मृग० जाणीयइ धर्म्माधर्म्मु ॥ ६४ ॥
घन जीवी लाहुउ लिउ ए घर० वुज्झियइ एहु विचारु ।
श्रीसिद्धंतु लिखावियए मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥
श्रीजउ क्षेत्रु इम धावीयए घर० चित्ति संवेगु धरेउ ।
वेचीउ वित्त लिखावियए मृग० श्रीसिद्धान्त जएउ ॥ ६६ ॥
चाहूदंड पोथा कराउए घर० पोथीय लीकी य तोइ ।
ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥
पाठां दोरी वीटणां घर० वर सिद्धांतह भत्ति ।
पानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

श्रीजउ क्षेत्रु इम थावउ निरुपम लियउ लाभु हूंनानणउ ।
जिम अट्ठकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि सेमिहं मुणउ ॥६
हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासत्ति ।
पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेपिहि आयरियउवणा॥७
इणपरि श्रमणुक्षेत्रु धावीजइ निश्चय भवसायरु तरीजइ ।
जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ स्वरतर संजमि॥७
पंचमहव्वयभारु धरंता दस अनु च्यारि उपगरण वहंता ।
नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ७२ ॥
जे मुनि पंच समिति छइ समिना त्रिहुहिं गुत्तिहिं जे अछइ गुपिना ।
सीलंग सहसअढार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥
जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुविचार ।
जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ।
ईणपरि भल्ला क्षेत्र विशेपि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
जिम तु छूटउ भवना भार पामउ सिवसुखु निरुपमसारु ॥ ७५ ॥
जे जिनआण सदा छइ रत्त बावीस परीसह सहइ अपमत्त ।
जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ७६ ॥
बईतालीसदोपसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्ठउ ।
इंदियविपयव्यापि नवि गूचइ तवि नीमि संजमि स्वण वि न मूचइ ॥७७॥
किसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥
प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।
एकु विशेपु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥
चालइ खड्गधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइं सुरवरि ।
महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हूं तेहि पवित्त ॥ ८० ॥
जीह जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरह समी ।
जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥
जिणसासणु जेहि य इम उज्ञालिउ कसिमल पावपंकु पखालिउ ।
एउ साहू अनइ श्रमणी खित्त वाविन धामी हुईउ सवित्त ॥ ८२ ॥
जा हिवडां तूं संपति अच्छइ इसीय वराप न पामिसि पछइ ।
जउ भलखेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि॥८३॥

घराप टली चितु घाविसि साऊ ऊगिसि मटकल्लु थाइ फलघाऊ ।
जउ भलक्षेत्रि घरापइं घाविसि तउ इक्कुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
ए भलुं क्षेत्रं जिनवरि कहिया घाते धम्मी भावणसहिया ।
तउ सीचे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सफली गय निव्वाणी ॥ ८५ ॥
ईणपरि पावीजइ मुनिरेशु दीजइं भत्त पानु गृहंतु ।
विसादानुं जउ दीजइं साऊ जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पार ॥ ८६ ॥
ओषधआदि सहु सूहलतउ तं तं दीजइं निरगरिहंतउं ।
अनिउ ज्ञ काइं मुनि उपगरइ तं सूहतुं घहरउं करइ ॥ ८७ ॥
जं जं मुनि जोअइ सूहंनउं तं तं दीजइं निरगरहंतउ ।
गुरु आयंना कीजइ अभिगमणउं दीजइ भत्ति थोभवंदनउ ॥ ८८ ॥
विनउ वेयावचु अनीउ विशेषिउ कीजइ भणीउ महामुनि देसीउ ।
पर्युपासि तही कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय॥८९॥
एह ज परि श्रमणी जाणेवी करउं भत्ति तुम्हि हरिष धरेवी ।
ते सुह महामुनि दीजइ तं तं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥
आगइ सोइ पुर्विहि सुणीजइ धनु धनु सारथवाह कहीजइ ।
घीउ विहिराविउ जिणि मुणिंदउ तिणि फलि हुयउ पढम जिणंद ॥९१॥
हथिणाउरि नयरि श्रेयंसिहि पाराविउ रिषभु इक्षुरसिहि ।
तिणि फलि तिण भवि केवलु ज्ञानु दिइन भविय मुनि इणपरि दानु॥९२॥
वीर जिणेसर छट्ठा मास चंदण पारावइ कामास ।
तीणि दानि शिव संपत्ति पामी दियउ दानु तुम्हि अनुपम धामा ॥९३॥
जोइन संगमि कांउं मुनि पारावाउ थइ स्वाम धाउ ।
तिणि फलि सु सर्वार्थसिद्धि पामी पाउइ शालिभद्र शिवसुरगामी ॥ ९४
इउ भाइउ तेनूं पावउ पिनु अतिपकर्मइ सरवार्थनम् ।
सिवसुर संपत्ता देइन भत्ति स्वामिसरागं आगमि भणिलि ॥ ९५ ॥
हिव सोइ श्रावकगणउं क्षेत्रु भणुं करावइ ।
जउ जिणसासणमणा भूमि अतिभत्त पसाविस ।
किसउ सुश्रावक जाणियइ जिणसासणभवरि ।
श्रावकगणणी य आण मानइ सिरउपरि ॥ ९६ ॥
सम्यक्तिमूल बार व्रत पालइ नरनारि ।
निपसर हिपडइ वांसरासु तव सि सुरकार ।

कामदेव जिम चल्हइ नही वीतरागह धर्म ।
वीरनाहु जिणवरू दियइ तसुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥
सदाचारू सुविचारू कुसल्लु अनइ निरहंकारू ।
शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
जिनह वचनि निम मानवातु जीह श्रावक भेदी ।
जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ ९८ ॥
जाणइ ऊचितु सहू काय साचउ विवहार ।
त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारू ।
उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेषू ।
भणियइ श्रावकतणी भावीय मूलिइ सा जीह एहु विवेक ॥९९॥
जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिणमासणि ।
ते गुणु जिण भणइ श्राविवह जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीतरि जीह ।
सुलहउ सिवपुरतणउ वासु तो श्रावक तीह ।
पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संवेगि संपूरिय ।
सील सनाहि पहिरिइ कमऊपरि सूरी ॥ १०१ ॥
ईहं तु श्रावकतणउ क्षेत्रु वावु सवि दीस ।
जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस ।
जिम भरयेसरि वावी रिसहेसरनंदणि ।
गृहवासऊपरि ज्ञानु जासु पसरीउ तिहुयणि ॥ १०२ ॥
तिम तुम्हि बावेउ भलीपरि भविउ इउ खित्तु ।
लहिसउ फल निरवाणनयरि तिम तिहां बहुतु ।
पहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक जाणी ।
पाय पपालीय सइहाथि लेउ कुंकुम वाणी ॥ १०३ ॥
पाछइ भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सहियउ ।
दीजइ श्रावकश्राविकां एउ आगमि कहिउ ।
ऊपरि ऊगटि फूल पान कापड अनुमानिय ।
दीजइ निजभक्ति भलां गरूयइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
भरयेसर जिम श्रावकह दीजइ आवासे ।
लीणा जे जिनवयणि अछइ घणगुणह निवास ।

वाछिलनी परि एक कीसउ परि हुअइ असंख ।
विधिमानु फरसइ सहू कोइ नरनारी दुःख ॥ १०५ ॥
वाछिलनी परि एकजीभ हउं कहिउं न सकउं ।
एकहू वार सार सहू तुम्ह कहीउ अज मू किउं ।
जं जं कीजइ पुण्यकाजि अतिभलां भलेरां ।
ता कीजइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ १०६ ॥
कीधे काजे कुटुंबतणे अतिघणउ संसारो ।
जं कीजइ साहंमिअवेरउ काजि ते परल भंडारो ।
इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुरचंगू ।
हव ते कहीइसिइ जिणभवणि वाछिल अंतरंगू ॥ १०७ ॥
जिणपरि लोग समाराअए सवि साहंमिअवेरू ।
धावइ जिम संसारमहि वलि वलि एउ फेरू ।
कीजइ श्रावकश्राविकारहि वरपोषधशाल ।
जीहे करिसिइ परमध्यान तु इरवि सवि काले ॥ १०८ ॥
पडुजीवरक्षा मवि काल तीहे दीसंती ।
समकितमिउं वार य व्रत जीव अनेकिइ लहंती ।
प्रतिमा नाम अभिग्रह संपजइ तिणि हाट ।
अनेकि सुगुरु ऊपजइ कुलियाकहेवरमाट ॥ १०९ ॥
तीहे सुगुरु वखाणु करइ आगमभंडार ।
सहू समाधिइं सांभलइ व्यूथ नरनारे ।
थापनाचार्य चउकीवटउ सिंहासण कीजइ ।
नउकरवाली चिरवला महुपत्ती मूंकीजइ ॥ ११० ॥
संथारा उत्तरउट पाटि कीजइ पुंछणा ।
करे पोमाल पाटला अनइ दंडाछणा ।
काजामिल्णा य पउंजणा य काजाऊधरणां ।
पोषधमालहतणइ ठामि ए काजइ करणां ॥ १११ ॥
कीजइ कमली ठवणा य वाचीजइ सिद्धांतु ।
ज्ञान पढंता जीव तीहा कर्मक्षय अनंतु ।
जइ ज्ञान पडिलेहवा मोरवाली य ते तोई ।
दीसदे आगर पटवटा अनइ जइणा होई ॥ ११२ ॥

ईइ सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअणुसारे ।
पुण तुम्हे यावीयं भलीयपरि चित्त आपणरे ॥ ११३ ॥
न्यायनीति वितु लिउं तीउ थानकि यावे ।
जिणसासणि वेचीतु कुलि कमल सु चडावे ।
संघसमुदाइ सहू कोइ तीरथ वंदावे ।
देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणावे ॥ ११४ ॥
इम वितु सु वेचउ धम्म सु संचउ अप्पं जीव म वंचसुउ ।
वली न लहिसउ प्रस्तावु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
सातक्षेत्र इम बोलिया पुण एकु कहीसिइ ।
कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।
कांईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सूत्रु ।
ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥
मूं मूरष तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।
तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
संवत तेरसत्तावीसए माहमसवाडइ ।
गुरुवारि आवी य दसमि पहिलइ पखवाडइ ।
तहि पूरू हूऊ रासु सिव सुख निहाणूं ।
जिण चउवीसइ भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८ ॥
जां सिसि रवि गयणंगणिहि ऊगइ महिमंडलि ।
ता वरतउ एउ रासु भविय जिणसासणि ।
निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं ।
गयवंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्ररासः समाप्तः ।

कच्छूलीरासः

जिम दुरीउविहंडणु रोलनियारणु तिहुयणमंडणु, पणमवि सामीउ पासजिणु ।

...रसूरिहि घंसो धीजीसाहा घंनिघु रासो भणीय रोल्हु नियारीउ ।
जिम महीयलि जाणउं अठारमउ देसु धपाणउं गोउलि घणि रमाउलउ ॥

...ह्सम परमार राउ परदं नहिहे सविचार आबूगिरियर नहि पवरो ।
...यसहीं आदिजिणंदो अपलेसर सिरिमागिरि घंदो नागु नलि नयरी य पतीयण ।

...णनयणाह धम्मणभूली कच्छूली तिरि लंघविसाली मरमयधाधि मणोहरी य ॥

घत्त—नहि नयरी य नहि नयरी य धनइं घड लोय ।
चिंतामणि जिम मुच्छाणहं दीहं दानु सविवेय हरिसि य ।
सघई मीलि पयारहं कूटघपडु नवि ते य जाणहं ।
गर्लाउं जल्हु घाडी धीह धम्मधम्मि अणुरत्त ।
तकजीह जिम धरांह कच्छूलो सु पवित्त ॥

हिमगिरिधवलउ जिमु कविलासो गुरुमंडपु पुनलोयविणासो पासभुवणु रलीयामणउं ।
...मणाह जमदद्दनदणु म परिमाणह समरि सेदि मनमु परिपालइ ।
भवीयहं गुरु मणि आणंदु उपवास करेइ दीवा दिण आंदिल पालेइ ।
यिहिमणि सिरिपरसूरि गुण गाजह लाभर...कलिकालि धांप- सुरि विहरमं ।
सासणदेयनि हेरण आयइ ...पासवणि गुरु वदाइ ...नउइ घए य पयाण ।

मालारोपण कीयां तुरमइ मइ नर आर्यांय पच्छमयाइ समिकति नदइ घए य पयाण
...नंदणु वर गणधरु ठांण लाइ समारविरक्त ।
...परमाणपरिवरणु आगमसम्मविचारविदारणु ।
...ओसो गुरुगुणि गुणइ जाणीउ निवदहि हरि निकलइ ।

माणिकपहुसूरि नामू श्रीयसूरिप्रतीछीउ कछूलीपुरि पासजिणभुयणि अहिठीउ॥
सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहूसवजुत्ती।
श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहतउ सुरनाही।
निवीय आंबिलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि वंदउ पाया।
विणठदेह जस धवलह राणी पापपखालणि हुई य पहाणी।
माणिकसूरि जे कीध जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम वन्नउ भवपार पणासण।

कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकछुलि जाणवि गुणमणिगिरि।
सेठि वासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी।
संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपाटि गुरु ठविउ अइसइ परं।
उदयसिंहसूरि कीउ नामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए।
सूरु जिम भवियकमलाइं विहसंतओ नयरि चड्डावली ताव संपत्तओ॥
वन्न चत्तारि वरवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए।
कोइ कम्माली पाऊयारूढओ गयणि ग्रापरिथीइं भणइ हउं वादीओ।
पंडिते बंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चिंतियं।
वादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह माणु रहावइ॥
वस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह।
नीरंतइं नीरु पडो गरूयदंडडंबरु करंतइं।
धंधलु राउलु चिन्नवइ सामिसाल पइ मझि संतइं।
बंभण तपसीय पंडीया जं त न बंधई बाल।
सु गुरु कम्मालिउ निज्ञणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल॥
धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस।
उदयसूरि संघिहि सहीउ निवसइ ए निवसइ ए निवसइ वरहरि पीठि॥
सत्थिपमाणी हरावीउ मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं बालुकमठो॥
सेयंवर तउं हिय रहिजे जे गुरु सिद्धिहिं चंडो।
विसहरु आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउं दंड्ड पयंडो॥
तउ गुरि मुहंतां मिल्हिकरि होई गरड्ड पणेण।
धाईउ लीधउ चंचुपडे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो॥
पाउपिढ्ढि वि संमुहीय डरडरंतु धीउ वाघो।
जोवणहार सवि पलभलीय हीयडइं ए हीयडइं ए हीयडइ पडीउ दाघो॥

गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सीहु करालो।
ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सवालो॥
थंतरि मुणि गयणाठिय तसु सिरि पाडीय ठीव।
ालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं थाईय थूंव॥
ंडीउ माणु कवालघरो धाईउ चंदह पाय।
वमि सामि पसाउ करी जीनउं ए जीनउं ए जीनउ तईं मुणिराय॥
ताव संधीउ ताव संधीउ ठीव मंतेण।
गणहरि करि कम्मालीयह भिक्खभरीउ अप्पीउ मुहरिण।
रामिहिं जिम घायसह इक्कु निजुत्त सु हरीउ मत्तीण।
धारावरसि कयंतममि भिडीउ डिभीउ ताम।
प्रनपउ कोडि घरीम जिनउदयसूरिरवि जाम॥
पट्टावलिहिं विहरीउ प्रभु पहुतउ मेवाडि।
पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाडि॥
जाउ कुदालिय नीसरणी दीवउ पारउ पेटि।
धादीप टांटक पइ धरए पहूत्तउ पमणउ पेटि॥
केवलिभुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि।
उदयसूरि पमणउ पलीउ जयन ल रायअधाणि॥
केवलिभुकति म भ्रंति करे नारि जंति ध्रुव सिद्धि।
तिममयमिद्धा चक्कि जीय लीइं आहार विसुद्ध॥
धीय धीर दीठंतु दीउ जित्तु नंदिमुणिंदवि।
गयकुंभथलि आरूहीय पटमसिद्ध मरुदेवि॥
विवरणु पिंडविसुद्धि कीउ धमविहिप्रंगु प्रसिद्धु।
धीयवंदणदीवीय रचीय गणहर भुअणि प्रसिद्धु॥
अगहइं माजणारे छम्मासइं काली।
घससिणि ऊयरि ऊपनउ पदि ठाविजि पाली॥
तेरदुरोत्तरयसिरे अप्पउं साधइं।
पट्टावलि दिवियहो जगि लीह लिहावी॥
कहूली जाणवि परमकल सु गच्छभारधरो।
पंचम वरिस पहंति सजणनंदणु दीखीउ।
देवाएसु लहेवि गोठाय सत्तमे वरिस हरो।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरे ।
गोतमसामिहिं मंत्रु आपात्रीजइ दिणी दीइए ।
जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारइ सो पढए ।
त संजमि रणि जीतु सयरह चुकउ पंचसरो ॥
गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वहू य ।
सावय कीय उवयार संघपभावण तहिं घणी य ॥
सात्रीसइ आपाडि लखमण मयधरसाहुसूओ ।
छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥
कमलसूरि नियपाटि सइं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
पमीउ पमावीउ जीवु अणसणि अप्पा सूघु कीओ ॥
पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।
तासु सीसु चिरकालु प्रनपउ प्रज्ञातिलकसूरे ॥
जिणसासणिनहचंदु सुहगुरु भवीयहं कलपतरो ।
ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।
तेरत्रिसठइ रासु कोरिंटावडि निम्मिउ ।
जिणहरि दिंतसुणंतं मणवंछिय सवि पूरवउ ॥

कछूलीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्दकक्क

भलि भंजणु कम्मारिवल वीरनाहु पणमेवि ।
पउमु भणइ ककक्करिण सालिभद्दगुण केइ ॥ १ ॥
कलय वच्छ कुवलयनयण सालिभद्द सुकमाल ।
भद्दा पभणइ देव तुहु कइ थिउ हत्तियवार ॥ २ ॥
काकझामयनीरनिहि समयसरणि ठिउ सामि ।
अज्जु माइ मइं वंदियउ वीरनाहु सिवगामि ॥ ३ ॥
म्वरउं कुडु ता पुत्त कहि का देसण किय वीरि ।
कवणु अन्नु पच्चाणिइउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥
ग्यारसमुदह आगलउ माइ कहिउ संसारु ।
भंजमपयहणहीण तसु किमइ न लब्भइ पारु ॥ ५ ॥

गयममत्त धीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
सालिभद्द भद्दा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
गारवयक्निउ विस्रवउं काइउ मग्गउं माइ ।
जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
वयह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
घाणइ पीलिय पंचसइं खंदगसूरिहि सीस ।
साहु माइ दुस्सहु सहइं परिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥
नवि घउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद्द सुकुमाल ।
महु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥
नाउं गव्विहिं कुलतणइं पाविज्जइ भवछेउ ।
माइ मरीचि भव भमिउ वद्धमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
वरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपवीण ।
रोअंती भद्दा भणइं मइं किम मेल्हिसि दीण ॥ १२ ॥
चाक्कवट्टिवलदेव तह वासुदेव वलवंत ।
माइ तहि हिव परियणह कड्डिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
छण मइलंछणसमवयण तुह भज्जा वत्तीस ।
ते विलवंती पेमभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
छाक जेम उड्डइ सयलु अंतेउरु घरसारु ।
माइ जीवु जउ संचरइ छंडेविणु दंदारु ॥ १५ ॥
जणणि भणइ जां वालपणु तां पुत्तह पडिबंधु ।
नाम्मइ वुल्लाविअउ बहु उग्गाडइ कंधु ॥ १६ ॥
जाणिउ देह असारवलु भरहिं मूकउ मोहु ।
ताव माइ तसु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥
झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तभूमिपासाउ ।
विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ ऊणउ ठाउ ॥ १८ ॥
झाणानलि जिणि कम्मवणु वालिउ गहिउं नाणु ।
वीरनाहु महु हिव सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
नरवइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभद्दु सुताउ ।
निच्चु नवलं आभरणु कहि को चित्ति विसाउ ॥ २० ॥

नाइक्कु सेणिउ तुम्ह मह्रु जइ किरि कहिइउ माइ ।
ता धणु कंचणु गेहवलु खण वि न चित्ति सुहाइ ॥ २१ ॥
दलदलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिल्ला बाल ।
धम्म करेवा मह्रु समउ तुह्रु धणुरक्खण बाल ॥ २२ ॥
ढालिसि चरण म माइ मई देइ महावयसिक्ख ।
वद्धमाणजिणवरकिरिहिं पुत्तिहिं लब्भइ दिक्ख ॥ २३ ॥
ठणकइ पुत्त सु चित्ति मह्रु पुत्तविहूणिय नारि ।
विहवह मुचइ दुह्रु सहइ दीणी परघरवारि ॥ २४ ॥
ठामि ठामि जिउ हिंडिइउ भव चउरासीलक्ख ।
माइ जि सहिया नरयदुह्रु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
डरपिसि सुणियइ सीहसरि निसुणिसि सिवफिक्कार ।
भुक्खिइउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंडिसि नरसार ॥ २६ ॥
डालिहि चडियउ डालिसउ माइ म हल्लावेउ ।
पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वद्धमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
ढलइं चमर वर पुत्त तुह्रु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।
मणिसीहासणि वइठणउं किणि कारणि वइचित्तु ॥ २८ ॥
ढाउ विलग्गउ माइ मह्रु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
घोलावउ ठिउ वीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥
नवउं अंतेउरु नवउं घरु नवजोवणु नवरंगु ।
सालिभद्दु नवकणयवणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
नाणु रसायणु करिसु हउं कम्मिंधणदाहेण ।
तिणि आऊरिसु माइ तणु जरा न ढुकइ जेण ॥ ३१ ॥
तरुअरतलि आवासु मुणि भिक्खह भोयणु पाणु ।
भूमंडलि आसणु सयणु वच्छ सरणु दुहठाणु ॥ ३२ ॥
तालउ भंजिवि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।
छुट्टइ बालु न वुड्डु जणु पडइ अचिंतिउ घाउ ॥ ३३ ॥
थल डूंगर पाहण सयण कक्कर कंट तुसार ।
पाणहवज्जिउ पुरि महिउ हिंडिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥
थाहररहि न मज्झु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु जिणु वयहरउ लेसु सरणु धणु धम्मु ॥ ३५ ॥

दइयहि धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अंगु ।
पच्छइ तहं ता दोहिलउं होसिइ तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहिं हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
धम्मु विढ़उ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।
पहिलउं मागिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥
धाटउ जमरायहतणउ पडइ अचिंतिउ माइ ।
कढ़ि लिज्जइ जीवु तिणि खुंच न धाहर काइं ॥ ३९ ॥
नवकप्पूरिहिं पूरिया नंदण कोमल केस ।
केनगियालइं धासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
नारायणयंधवु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ बालु ।
सोसु अग्गि दुस्सहु सहइ माइ सु गयसुकुमालु ॥ ४१ ॥
पइ सुअ तहं पहरियां रमियउं दिव्व अहारु ।
सुअ उव्वासिहिं सोसिया केम करेसि विहारु ॥ ४२ ॥
पालिसु पंच महव्वइं बारस अंग पढेसुं ।
वीरनाहिसुं माइ हउं नवकप्पिहिं विहरेसु ॥ ४३ ॥
फणिरायह सिरि पुत्त मणि मुट्ठेण य बहुमुल्लु ।
सा गिण्हंता पावहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥
काढिज्जइ करयचु सिरि पाइज्जइ कत्थीरु ।
माइ दुक्कु मारण सुणिउ महु उल्लसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
वत्तीसइं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
डूंगरि कासुग्गि करिसि किम वलि किज्जउं तह काय ॥ ४६ ॥
बार मास कासग्गि रहिउ बाहुबलि मुणिराउ ।
नाणह कारणि तिणि सहिउ सीअ तुअ जलु वाउ ॥ ४७ ॥
भमिसि विहारिहिं भारिओ नंदण तुं सुकुमाल ।
वीर जिणंदह चरणु पुणु मुणि बावत्तउं कालु ॥ ४८ ॥
भारु माइ भुक्किय वहइ रासहवसहपमुक्क ।
आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्कु ॥ ४९ ॥
मयलंछण जिम तारयहं सयलहं किल भत्तारु ।
तं वत्तीसहं वहुअरहं गुणु देव आधारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि वीरुजिणु कुलगुरु मह मंनाणि ।
तसु मइं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ नियाणि ॥ ५१ ॥
गइ तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हिवि सयलु सिणेहु ।
ता गोमहु अभागिइउ हा पिगु छुट्टउ गेहु ॥ ५२ ॥
याइवनाहगु नेमिजिणु गुणसोहग्गनिवासु ।
माइ सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्हेविणु गिहवासु ॥ ५३ ॥
रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा मइं संताविं ।
तुह विणु नितु कुण पूरिसइ मुधाहरणह चावि ॥ ५४ ॥
राहडि पूरिय माइ तइं महुकेरी सविचार ।
दिक्ख दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार ॥ ५५ ॥
लहकइंसउं संजमु लियए नंदसेणु मुणिराउ ।
सो संजमुप्पव्वइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥
लाहइं विणिज्जु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु ।
ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥
वच्छ ति नारी दुक्खनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु ।
महुत्तइं नंदण जाइयइं हिंय आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥
वार स माइ सलक्खणीय तं सुहुत्तु सुपवित्तु ।
धन्न ति बंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥
सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण ।
नंदण तेण य नरइदुह पामिय भट्ठवएण ॥ ६० ॥
सारउं साटउं मिलिय मुह माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु किउ ववहरओ लेसु चरणु धणु रम्मु ॥ ६१ ॥
पलह मणोरह पूजिसइं सज्जण होसिइ सोसु ।
नंदण तुं थाइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥
पाससासवेयणपमुहवाहि माइ तणु मूलु ।
जीवु तेहिं धंधोलियइ उड्डइ जिम लहु तूलु ॥ ६३ ॥
समल देह कप्पड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।
होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।
संजमविणु भवभयहरणु ताणु न किज्जइ केण ॥ ६५ ॥
हसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।
सालिभद्द संजमु लियइ महु बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
हारमउडकुंडलकलिउ चडिऊ पुरिसविमाणि ।
धीरपासि पहुतउ कुमरु जण दिज्जंतइं दाणि ॥ ६७ ॥
क्षमासमणि भद्दाणणइं दिक्खिउ जिणिहिं कुमारु ।
सालिभद्दु बहु तवु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥
क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसणु गहिउ उचग्गु ।
सव्वट्ठह सिद्धिहिं गयउ सालिभद्द तहिं धन्नु ॥ ६९ ॥
महाविदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
सासयसुक्ख वि पाविसहि भवियह धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
इह कहियउ कयरह कुलउ इक्कहत्तरि कडुयाह ।
भवियउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकक समाप्त.

दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
जासु पसाईं मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
उँकारिहिं उधरउ परमिट्ठिहि नवकारु ।
सियमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुधारु ॥ २ ॥
नयनिहि धम्मिहिं संपडए सयलपयत्थरिद्धि ।
धम्मु इणा करि धीर जिय सइ कर आवइ सिद्धि ॥ ३ ॥
मणगयवरु हाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
जइ भंजेसइ सीलवणु करिसइ सियफलहाणि ॥ ४ ॥
सिज्झइ तसु सवि कज्जड जसु हियडइ अरिहंतु ।
चिंतामणिसारिच्छ जिय एहु महारुदु मंतु ॥ ५ ॥
धंधइ पडियउ जीव तुहुं गणि गणि तुट्टइ आउ ।
दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सयणु न बंधवु माउ ॥ ६ ॥

अणहुंता पयडेसि तुहुं दोस पराया मूढ ।
नियदोसण पच्चयसरिस ते सवि कारिस गूढ ॥ ७ ॥
आइ किजिय जिणधम्मु करि सुत्थइ संवन्तु लेवि ।
अग्गइ किंपि न पामिसए अत्थइ भरिया गेह ॥ ८ ॥
इण भवि लच्छी रिद्धि पइ परभवि केव लहेसि ।
अच्छिसि तिणि घणि मोहियउ जइ न सुपत्तह देसि ॥ ९ ॥
ईसरु देक्खिउ कोइ नरु नीचिणु मणि दूमेइ ।
एउ न जाणइ मूढ जिउ जणु वावियउं लुणेइ ॥ १० ॥
उप्पलदलजलबिंदु जिव तिव चंचलु तणु लच्छि ।
धणु देखंता जाइसए दइ मन मेलत अच्छि ॥ ११ ॥
ऊयरु जउ भरिवउं कुपुरिसह तो भरियउ भंडारु ।
इक्कि जीव पुन्निहि पवर लक्खह कोडि आधार ॥ १२ ॥
रिणि राउलि जलि जलणि घरि तक्करि घणु घणु जाइ ।
धम्मकज्जि जउ मग्गियए ताव परमुहु थाइ ॥ १३ ॥
रीस करंता जीव रीह अच्छइ अवगुण तिन्नि ।
अप्पउं ताविसि परु तवसि परतह हाणि करेसो ॥ १४ ॥
लिहियउं लब्भइ सिरतणउं जइ चालियइ समुद्दु ।
लच्छिहि केसवु संगहिउ तिणि विसि धारिउ रुद्दु ॥ १५ ॥
लीलइ धम्मु जु होइंसए सेवंता जिणनाहु ।
तं नवि मिच्छत्तिहि सहिउ जइ तपु करिसि अवाहु ॥ १६ ॥
एकहि ठावि वसंतडा एवड्ड अंतरु होइ ।
अहिडंकिउ महियलु मरए मणि जीवइ सहु कोइ ॥ १७ ॥
ए आणाइ समतण जीव न बूझइ हेव ।
हिंडइ रोसिं पूरिया न करइ उपसमसेव ॥ १८ ॥
ओदउ नहु लोभहतणउ जीव न फिट्टइ निच्चु ।
अहनिसि तेण भमाडियउ न गणइ किच्चु अकिच्चु ॥ १९ ॥
ऑसरि नेह अभिग्ग पुणु पिच्छिस हिय भजंति ।
चंदुपल किरणेहि तहि दूरठिया विहसंति ॥ २० ॥
अंधउ अंधइ ताणियए कवणु कहेसइ मग्गु ।

चेयलिपहु निव्वाणि गउ धम्मु मणंतरि भग्गु ॥ २१ ॥
अवगयधम्मि जइ माणुसह हुइ नवकार वि अंति ।
तिणि पुरिसिहि मह देवगइ अहवा मुत्ति न भंति ॥ २२ ॥
फलदिहि माया मूढ जिउ पंचइ लोउ अप्पाणु ।
तिणि पाविहि भवि भवि दुहिय नवि पावइ निव्वाणु ॥ २३ ॥
णस्नइ कालु कयंत जगि को अन्न वि को कह्वि ।
संजमि गयवरि आरुहिउ सिद्धिसरणि जिय पह्वि ॥ २४ ॥
गयवरमरहा जेम हिय मा हिंडसि नरसीह ।
हणि कसाय दमि इंदियइ गणिया लब्भइ दीह ॥ २५ ॥
घडिय न लब्भइ अग्गलिय इंदह अरहइ धीरु ।
यउ जाणिउं जिणधम्मु करि जावह घडइ सरीरु ॥ २६ ॥
दयि जाणिज्ञइ सो दिवसु जणु पुणु मरइ निरुत्तु ।
छंड्डेविणु घरहलोहलउ धम्मु करेवा जुत्तु ॥ २७ ॥
धंधलु निच्चु पयंगु जिम पयबंधण न धरेसि ।
धम्मारामि विणासियइ मूढा हत्थ म लेसि ॥ २८ ॥
ण्ग्रउ पयडउ जीय तुहुं उज्जमु करि जिणधम्मि ।
सुहियं दुहियं माणुसह पासु न मेल्हइ कम्मु ॥ २९ ॥
जरजज्ञरि देहडी हुई य पंडरि हूया केस ।
अरि जिय धम्मु करेजि तउं गइय स बालियवेस ॥ ३० ॥
झलहलंत जिणवरपडिम जेइ करावइ दव्वि ।
सग्गपवग्गहतणा सुह ते पामेसइ सव्वि ॥ ३१ ॥
ञ हु चिंतंता चित्तवसिण कज्जु अनेरउं होइ ।
राउलि बलियउ दुब्बलउ दैव न बलियउ कोइ ॥ ३२ ॥
टलइ मेरु नियठाणह जइ पच्छिम उग्गइ सूरु ।
पुव्व कियउं तो नवि चलइ कम्ममहाभरपूरु ॥ ३३ ॥
ठगियउ हिंडिसि जीव तुहुं धारिउ विसि मिच्छत्ति ।
सम्मत्ताह रयणह रहिउ न लहसि सिवसंपत्ति ॥ ३४ ॥
डणउ जेम्व गलि संकलिउ भवि भवि भ्रुणवउ जीव ।
नवि छुट्टिज्ञइ तो वि तह जइ लंघिजइ दीवु ॥ ३५ ॥
ढणहणंति इंदिय तुरय पाडेसइ भवखोहि ।

देविणु वरसंजमिकविउ अरि जिय सगि निरोहि ॥ ३६ ॥
णवि हसंतु वि जोइयए निचन्दु झाणु धरेवि ।
ता दीसइ जिम जगतगुरु सहजाणंदु सु देउ ॥ ३७ ॥
तउं एकल्लउ सहसि जिय खाएसइ परिवारु ।
विहवु विहंचिउ लेइ जणु पाव न विहचणहारु ॥ ३८ ॥
थक्केसइ घणु सयणु जणु कोइ न सरिसउ जाए ।
पावु पुन्नु तं अन्नियए तं परि अग्गइ थाइ ॥ ३९ ॥
देइ देइ मन आलसु करि महुरालाविहि दाणु ।
चलिय देह हिय विहवसिण करि सफलउ अप्पाणु ॥ ४० ॥
धर उप्पज्जइ केवि नर परउवयारसमत्थ ।
कइ देइ के कम्मवसि जणजण उड्डइ हत्थ ॥ ४१ ॥
नइ वहमाणी सघणजल सुक्कइ इयर तलाय ।
दायर वड्डइ रिद्धिडी मग्गण निधण थाइ ॥ ४२ ॥
पढिउ गुणिउ घणु तवु तविउ संजमु किउ चिरकालु ।
जइ कसाय नवि वसि करसि ता सहु इंदियजालु ॥ ४३ ॥
फलु दिक्खिउ तरवरतणउं दिट्ठि म घल्लिसि बाल ।
तं नवि पाविसि पुन्नविणु छड्डिसि पारी लाल ॥ ४४ ॥
वलि किज्जउं तह सुहगुरुह जा जगु मारगि लाइ ।
उम्मग्गह दंसणि गमणि जणु पुणु पुहवि न माइ ॥ ४५ ॥
भरहेसरि आयरिसघरे उप्पन्नउं वरनाणु ।
भावण सव्वहिं अग्गलि य तपु संजमु अपमाणु ॥ ४६ ॥
मयणु न खीणउ जाहतणि ते नवि वंभचारि ।
मयणविहूणह संजमि लुंचणि छारि न दोरि ॥ ४७ ॥
जसि धवलिउ जगु जेहि मुणि नाउं लिहाविउ चंदि ।
कम्म हणवि जे सिद्धि गय ताह चलण निलु वंदि ॥ ४८ ॥
रे वाहा मग्गेण वहि मा उम्मूलि पलास ।
कल्हे जलहरु थक्किसए कयण पराई आस ॥ ४९ ॥
लइ वयभरु परिहरवि घरु भंजिवि भवनिपलाइं ।
जाव न पहुच्चइ तुज्झतणि जमरावस्स दलाइं ॥ ५० ॥
ययणु न जंपउ दीणु कसु जं भावइ तं थाउ ।

अथिरकडेवरकारिणिहि कहि किम लिजइ काउ ॥ ५१ ॥
सुमिणंनरि मेलावडउ अहनिसि पहर चियारि ।
पसरिय निय निय दिसि चलए अरि जिय सुमणु विचारि ॥ ५२ ॥
परकिसोर मत्तकरि दमइ करि करेविणु कटु ।
निय जीवु कोवि न धरि करए थिउ गलियाक विगट्ठु ॥ ५३ ॥
संजमि नियमिहिं जे गया ते गणि सारा दीह ।
अवर जि पावारंभि गय ताह फुसिजउ लीह ॥ ५४ ॥
हिंडेविणु भवकोडिसइ लद्धउ माणुसजम्मु ।
तत्थ वि विसयह मोहियउ न करइ जिणवरधम्मु ॥ ५५ ॥
क्षणभंगुर देहहतणउं अरि जिय कोइ विसासु ।
भाव न मुयइ जिणु भणइ जाव फुरयइ सासु ॥ ५६ ॥
मंगलमहासिरिसरिसु सिवफलदायगु रम्मु ।
दुहामाई अरिहयह पउमिहिं जिणवरधम्मु ॥ ५७ ॥

इति श्रीधर्ममातृका समाप्ता ।

चर्चरिका

जिण चउवीस नमेविणु सरसइपय पणमेवि ।
आराहउं गुरु अप्पणउ अविचलु भावु धरेवि ॥ १ ॥
कर जोडिउ सोल्हणु भणइ जीविउ सफलु करेसु ।
तुम्हि अवधारए धंमियउ चचरि हउं गाएसु ॥ २ ॥
मणि उमाहउ अंमि हुए मोकल्हि करिउ पसाउ ।
जिम्ब जाइवि उज्जिंतगिरि वंदउं तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
नइ विसमी डुंगर घणा पूत दुहेलउ मग्गु ।
भूखडियह खणमि तुहुं दुयलि होसइ अंगु ॥ ४ ॥
चालइ जोयणि नं गिया अंमि जि नाहिं गिरिनारि ।
ते जंमंतरि हुत्थिया हिंडहिं परघरयारि ॥ ५ ॥
इंअ असारी देहडी अंमि जि विढवइ सारु ।
तिणि कारणि उज्जिंतगिरि वंदउं नेमिकुमारु ॥ ६ ॥
करि करयली कपडी सिरि पोटली ठवेवी ।

मिल्हिय पच्छिमगमणइड उज्जिलमग्गि चडेइ ॥ ७ ॥
इह पइवाणइ मउलइड दीसइ सीहविमाणु ।
रैवइन्दइ संडारी अंगु नागगेहाणि ॥ ८ ॥
इय पइवाणइ जि कइ हियडउं गइ न करेइ ।
दिणि दिणि मंडइ नेमिजिणु नडिया गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
पाइ पहुतइ कानगिउ उन्नाणइ जू चाईं ।
जे कायर ते गल्लिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
गाहिल्लडा मरहगसिहिं उगिउ दसणछंद्ध ।
उज्जिलि जंते धंमिए सुंणिउ नेमिहिं सउद्दु ॥ ११ ॥
साहजिणपुरि बोलेविणु गंगिलपुरहिं पहुत्तु ।
मादी कहियसि मंदिरसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
जइ सम्मसावक बोलियं पेक्खिवि वाहु य पलास ।
तउ हियडउं निवम थिउं मुरा कुडुंबह आस ॥ १३ ॥
विमसिय दोत्तडि नइ धणिय डुंगर नन्थि च्छेऊ ।
हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिव नेऊ ॥ १४ ॥
करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाइं ।
दिन्नउ तहि आवासडउ हियउं विअड्डि थाइं ॥ १५ ॥
नालियरीडुंगरितडिहिं वहुचोराउलिठाइं ।
धम्मियडा वोलिउ गिया अमुलतणइ सहाइं ॥ १६ ॥
भालडागदुसुंनउ अवियडउं वसेइ ।
धम्मिय कियउ वीसावइ सुरधारडीघरेहिं ॥ १७ ॥
ओ दीसइ उद्धुंधलउ सो डुंगरु गिरनार ।
जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहडेउ दिट्ठु ।
खडहड अंगु पखालियं गोवाडलिहिं पहुट्ठु ॥ १९ ॥
भाद्रनई जह वोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
धंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
ऊजिलमग्गि वहंता रजु लागइ जसु अंगि ।

बलि किज्ञउं तरु धम्मियह इंदु पसंसह सग्गि ॥ २२ ॥
जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
एउ धाउह लोट्टउं फोट्टउं तलि गिरिनारु ।
ओ दीसइ धवणधली धवलिपतुंगपयार ॥ २४ ॥
घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
धंमी मा धवणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
धउणथली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।
तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
गढु मोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
बलि किज्ञउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥
टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
पाउ खिसियउ विसमउ पडइ हियं विअव्हइं थाई ॥ २९ ॥
अंचणवार्णा नइ वहइ दिट्ठु दमोदरु देउ ।
अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
तरयन्नणइ पलांवडे रूढउ मागु जंघेवि ।
फालमेघु जोहारियउ वन्नापदि जाएवी ॥ ३१ ॥
अंवाजंबूराइणिहिं वहु वणराइ विचित्त ।
अंविलिए करवंदिएहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं धुकार ।
कोइलसद्दु सुहावणउ तहिं डुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
जउ मइं दिट्ठी पाजडी उंच दिट्ठु चडाउ ।
तउ धंमिउ आणंदियउ लद्ध सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
हियडा जंघउ जे वहइं ता ऊजिंति चडेजे ।
पाणिउ पीउ गइंदचइ कुण्ड जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
गिरिवाइं झंझोडियउ पाय धाहर न लहंति ।
फडि फ्रोडइं फडि धर्मी हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥
जाव न धंधलि घल्लिया लखुपत्तीपाण ।

सांव कि लब्भहिं गिंनिगा हिंगडा ऊगलाग ॥ ३७ ॥
डुंगरडा अगो फरिं लगाउ मीगन्हि घाउ ।
हूय पुणं नयसेहडी अंगुलि किगउ पमाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिट्टइ भवदुहं दुहदाहु ।
जिणि अरि आठ करम निर्दलीय नमो जिन जिम भवि नावऊ वलिय ॥ १ ॥
आंचली–सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उवझायय साहू गुणभूरि ।
माईयबावनअक्षरसार चउपईबंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥
भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहुयणमाहि सारु एतलउं ।
जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ मूकिउ अवरु असारु ॥ २ ॥
मीडउं पडिउं भवनागमा जउ समकित्ति लीणु आतमा ।
जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छह सिवसुहतणी ।
चहुंगति फीटइ फेरउ वडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥
लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु हीयडइ संभरे ।
क्षणु एकु मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवादु ॥ ५ ॥
ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।
अनु सिवसुखतणउ दातारु मनह म मेल्हिसि तिहुयणसारु ॥ ६ ॥
नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।
सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥
मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।
हणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयरि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥
सिद्धउं काजु सहू तीहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरभणिउं ।
छेदिउ आठकरमनी वेलि गया मुक्ति हुई पेलावेलि ॥ ९ ॥
बंधइं पडिया दीह मन भमउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।
भयह तापु नवि लागई अंगि उदु बहुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।
अरियणु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥
आन्तिरि आलीउ म ईर्पिसि किमइ जे जिनुवयणु हियइं तू गमइ ।
करमुबंधु पटनउ चींतवे भाषासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
इणि संसारि दुखभंडारि रहत जीव काप धम ऊगारि ।
वीतरागि जं आगमि कहीउ करे तइ जि पणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥
ईमइ म कारमि फूडउ सोसु मोचइ जिनह वयणि करि तोसु ।
ऊंडउ आगमतणउ विचारु पाच्छइ भरिल परतभंडारु ॥ १४ ॥
उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं चंचलु जीव सरीरु ।
धणु कणु रहणु सहणु तिम सहू दीसइ धम्मु पणु धर रहू ॥ १५ ॥
उपरि देखि दैव न हु हाथु तेरहि तिहुयणि कोइ न सनाथु ।
नासीउ पइसिजान जिनमरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥
रिकिहितणउ लाभु इम लेजि सानिहि पेति धीतु पावेजि ।
उपर सिंचे भावनानीरि धगामरु नोही जिम ताहरइ सीरि ॥ १७ ॥
रीणु दीणु ते चहुगति भमइ जे जिन वीतरागु नवि नमइ ।
नोही काइ धरमवासना ते नही जाइं मुक्तिआसना ॥ १८ ॥
लिपावीइ मुनु सींकंतु तेह लाभ नवि लाभइ अंतु ।
ज्ञानतणउ गुण एवडु कोइ वीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥
लीलअमन संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु परूणु लेसि ।
सुगुरनी जाम विलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥
एकइ परि पामिसि भवपारु जइ समिकत कर अंगीकारु ।
वीरनाथु कहइ आगमि तोइ विणु समिकत सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
ए अ वचनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हउं भणउं ।
जिणाहं वइरण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेह माहि ॥ २२ ॥
ओघइं पईउ पापु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।
जोईउ पणु सिद्धंत विचारु करिसि धम्मु तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
ओपधु करे जीव जिनि भणिउं अछइ दुपु अठकरमहतणउं ।
याहिजि ओपदि कांई तु थाइ धरमोपधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥
अंतु न लाभइं इह संसार कांइ तु जीव होइ न विचार ।
एक जु धमु करे हपाइ लेउ मेलहइ सिवनअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भत्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय।
मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥
कपटिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु।
भमडइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७ ॥
खज्जइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ भ्रंति।
जिणह वइणु विडिजा इकमणउ भउ फीटिसइ क्रितांतहतणउ ॥ २८ ॥
गब्भवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण।
फेडइ दुपु सहू जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥
घरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु।
जिनुधमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३० ॥
ङअइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि।
जे यणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥
चक्रवति पट्टपंडह धणी हंती रिद्धि तीहंनइ घणी।
जो रिद्धिहिं परिताणु होउ त वंधु संभुमु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥
छविह जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप।
आतमवत्तु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ मुणे ॥ ३३ ॥
जगगुरु अगरपणु जगनाहु जगवंधवु जगसथवाहु।
जगतारणु जिउ जगआधारु जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥
जडइ पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाझि वसइ इकु जिणु।
जापुलसेपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं मुकनि पामेसि ॥ ३५ ॥
झसिदिणु पंचप्रमिठि सुमरेजि इणपरि असुसुं करसु पपेजि।
सुभउं करसु धापजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३६ ॥
टलइ मेरु जो परपतराजु जो रवि पच्छिम ऊगइं आजु।
जो सायरु मिल्हइ मज्जाइ तोइ जिनभासिउं अलीउ न थाइ ॥ ३७ ॥
ठगीमि रापे कुगुरि कुवोधि जिनकसवटी लेजे सोधि।
पूजइयानी आम्रनणी रिधि मंगाहु सुकितनी घणी ॥ ३८ ॥
डसीइ कालभूअंगमि लोकु तेह नवि लागइं औपधजोगु।
वीतराग मंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमहतणउं ॥ ३९
ढलिइ पामइ देजे दाउ धणकणजोवन करिसि म गाउ।
जगमण्डु देपे इंदीआलु करे धमु परहरीउ टमालु ॥ ४० ॥

णवणवपरि भगवऊ भवनाग मांमीअ करिउ अम्हारी प सार ।
असरणसरणु हुइं जि जगनाहु भवि पडंत अम्ह देजे बाहु ॥ ४१ ॥
तनु धनु जीवीउ जोवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सहू कोइ ।
दिवस पांच मेल्हावउ होइ पाछइ वलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
धरधर बंधई काहरविरत देवीउ मुनिवर माहासत्त ।
धीरा सत्रावंम जे जाण पालइं दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
इमि इंदिअ दुग्गददुआर लूगीउ लिअइं सुविलु सविचार ।
जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देमिइं दुपु बहूसंसारि ॥ ४४ ॥
धरमझ्यांनि करि निमलु चितु जिम हुइ जीव जनमु सुपवितु ।
धमिहि मिपइ मोपमंपत्ति धमिहि वलीउ न भवि उतपत्ति ॥ ४५ ॥
नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्हौ दाउ ।
मोहराउ रिणि भंजीउ वरी मीलहं टई सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
वटइ गुणइ परयाणइं सुतु पुणु सुहइं नही लोइ ततु ।
रागु द्रेपु मनभीतरि धरइं ईमइ वेनविटंवउ करइं ॥ ४७ ॥
पलइ करमु परभवहतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीडइ घणउं ।
दुपु सुपु सहू पइ लागम आवइ सिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
वलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्रिढ चित्तमझारि ॥ ४९ ॥
भवि भवु बोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
न मुणइं अंतरु पावइ पुष्टु तीहं सोकल कांइं सिरिज्या कान ॥ ५० ॥
सइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं सइणि ते भूर ।
धीरा सुभट सतु ऊलवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
प करइं तपु नीमु संम्रमु तीहं दुर्गतिनउ नही कोइ संसु ।
जीहं मन रोईंउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥
रहिसिइं पूत कलत घरवारु रहिसिइ सइणु सहू परिवारु ।
रहिसिइ धणुकणुरइणुभंडारु जीउ एकलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥
लइ जिनदीप मुकि संभारु आठकरम दहीउ करि च्छारु ।
निरुपमु सुपु सिवलहरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणिउ ॥५४॥
वयनझ्याणु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीरु अच्छइ तहिं घणउ ।
जो साइरि जलबिंदहं पारु तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

दारउपरि मूढा मन मेलि जिनधम्मु लागउ पाइ म ठेली।
तिहअणचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंमु ॥ ५६ ॥
पणि पणि आउ गलंतउ देषि भवि पडंतु अपुं म ऊवेषि।
करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विगहीउ ॥ ५७ ॥
सहजि जीउ भवगूतलि करइ कम्मं पुहरादाणी घणु घरइ।
जे कम्मंतणउ नही य ऊधारु भवगोनिहिं दुरखु महिसि अपारु ॥ ५८ ॥
हरिपु विषादु करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपदं होइ।
अवशु फलीसइ पुवभवकिउं नं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ५९ ॥
जंपइ दीव पुहवि समुद गिरिकंदरा भमइ वहुरूद।
रिद्धिकाजि इत्तीउ रड्डभडइ न करै धम्मु जिणि रिधि संपडइ ॥ ६० ॥
क्षुणभंगुरु एउ सहइ जाणि म करिसि जीव धरमनी काणि।
विणसइ सहु कहइ आगम्मु अविनसुरु एकु जिणधम्मु ॥ ६१ ॥
मंगल करउं सवि अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत।
मंगल सिद्धि सूरि उवज्झाय मंगलं करउं साहुणा पाय ॥ ६२ ॥
मंगलमूलु सवहिं आगम्मु जो जगमाहि अच्छइ निरुपम्मु।
जसु अतिसइ न लाब्भइ अंतु मंगलु करउ सोइ जि सिद्धंतु ॥ ६३ ॥
जा ससिसूरु भूयणु व्याप्पंति जा ग्रह नक्षत्र तारा हुंति।
जा वरतइ वसुहव्यापारु तां सिवलच्छि करउ मंगलाचारु ॥ ६४ ॥

मातृकाचउपइ समाप्ता

सम्यक्त्वमाईचउपइ

भले भणउं माईधुरि जोइ धम्मह मूलु जु समिकतु होइ।
समकतुविणु जो क्रिया करेइ तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥ १ ॥
ऊंकारि जिणु पणमेसु सलगुरुतणउं वयणुं पालेसु।
आगम नवतत बूझिसि तिमइं समिकतु रयणु होइ तसु तिमइ ॥ २ ॥
नर नवकारु सुमरि जगसारु चउदह पुव्वह जो समुद्धारु।
समिकत जइ लाभइ संसारि जाणे छुरी पडी भंडारि ॥ ३ ॥
मनु चंचलु अदझाणि पडेइ घडियमाहि सातमिय द्र नेइ।
मनु मयगलु शुभ घ्यानु करंति प्रसंनचंद जिम सिद्धिहिं जंति ॥ ४ ॥

तिसिगुरु जगि माहू थी सहइ दसमसितु जइ हियइ रहइ ।
इह सम्मितु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिथंकर होसइ सोइ ॥ ५ ॥
धन जि गुरुपारपउ करंति गुरु विणु सम्मितु किमइ न हुंति ।
मुहुतु एकु सम्मितु फरसेइ पुदगल अरधमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥
अच्छइ मोक्खरहु इणि समइ सम्मितु रयणु न लाभइ किमइ ।
कुगुरु सुगुरु अंतरु न हु करइ इणि कारणि चउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥
आगमवयणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ ।
इसइ कालि सम्मितरहरिख ते नर जाणे जगह पवित्त ॥ ८ ॥
इणि भवि परभवि सुगुरु कहेउ सतगुरुतणउं वयणु पालेहु ।
वीतराग जउ वंदिसि पाय ऊतरइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
ईंदियालु जगि दीसइ सोइ मालहुडु न हु छूटइ कोइ ।
परमसंबलु जइ सरिसउ लेइ पार गया सउ सुगुरु भणेइ ॥ १० ॥
उगमइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि चडिया ते जंति ।
सुविय सुविय धे सरिसा चलइं सजनभीत घोलावी वलइं ॥ ११ ॥
ओसरि पावियइ लाभु न हुंति सजणु होइ वीजइ पूकंति ।
एथउं दानु मुनिहि जो देइ संगमनउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
रिद्धिसिनउ लाभु जगि लेहु दस गेंधे तुम्हि धनु वावेहु ।
दीन्हादानह मातु म लोह सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
दीनिहि दानह नथी विचार उचितु दानु दीजइ सविचार ।
कृमनभपविउ जउ न्हु वारंति पात्रविसेषिहि वीर स दिंति ॥ १४ ॥
निहिय जगि लोटइ सउ कोइ कुपात्रु विसहरसादसु होइ ।
वीर आणि जउ मुनि घातियइ पात्रविसेषिहि तसु विसु वियइ ॥ १५ ॥
गोह न लंघउं सतगुरतणी किया करउं जा आगमि भणी ।
विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छूटउं संसार ॥ १६ ॥
गहु करेयउं नर संसारि त्रिनि वार जउ चडिउ विहारि ।
वीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु टालेसु ॥ १७ ॥
ए वार मेलिहउ जिणु पूजेसु रयणिहिं रमणिगमणु वारेसु ।
न्हवणु तं दिजहि निसिभरि रहइं तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥
ओ दीसइ मंदिरु जगि सारु धम्मरयणकेरउ भंडारु ।
चउरासी आसातन नितु टालेसु मंदिरि दिवसह वलि होएसु ॥ १९ ॥

ओया दीसइं बहुत गमार धंमहतणी न पूछइं सार ।
जिण गुरि दीठइ दूरिहिं जंति दुलहु माणुसुजंमु आलि गमंति ॥ २०॥
अंतरु विधि अविधिहिं जाणंति मंदिर पइठ निसिहिं न कांति ।
तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारेइ ॥ २१ ॥
अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ घंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ ।
पंचममिद्धिंनी जापउ करउ संसारसमुद्रु जिम लीलइं तरउ ॥ २२ ॥
कहियइ थूलिभद्दु मुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ ।
छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभद्दु लीह लहइ ॥ २३ ॥
खडभड रापि न इणि संसारि जुगमधान जोइ धंमु विचारि ।
सुद्धउ धरमु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छूटिसि तिमइ ॥ २४ ॥
गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु ।
कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसणतणउं वखाणि ॥ २५ ॥
घडतउ फोडतउ वार न लाइ कम्मंतणी विसमी गति काइ ।
जं जं करमु करइ तं होइ लषमणि दससिरु जीतउ जोइ ॥ २६ ॥
निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।
सुर बे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं धडि चडइ ॥ २७ ॥
चल्लइ सवलवाहणु नरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ ।
दसाणभद्दु अतिगरवु करेइ इंदिहिं जीतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥
छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जीतउ तं न सुहाइ ।
वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥
जनमु वयरसामिउ त्तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।
धणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पूतु हिव झोली धरेइ ॥ ३० ॥
झटकह तउ झोली घालियउ भारि गुरुह लेउ समपिउ ।
गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥
निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवन्नणु सकइ न कोइ ।
पालणइ सुतउ श्रवणि सुणेइ इगारअंग तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥
टलइ न पावज कुमरह किमइ मायडी झगडउ मांडियउ तिमइ ।
राज विदीतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेतउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥
ठक्कर मिलिया उगटउ करइं कुमरु अणावी तउ विचि धरइं ।
वणफल रमणा सा ढोएइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

रगाडगनउ मनु रहइ न किमइ मायडी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिंति ॥ ३५ ॥
हाइसु घोयउ बालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरउ मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
न गणउं अवरसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस हुइ लीह ।
अभिनवदीपितु वयण यु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
तपु संजमु किउ वरिससहस्सु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।
अंतकालि अटसाणि पहुंति कंडरीकु सातमियहं जंति ॥ ३८ ॥
पुंडरीकु वरिससहस्सु कीउ रज्जु चिउ घडियहं तउ सारिउ कज्जु ।
पावज ले गुरु संमुहउ थाइ पंचविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगविवित्तिकरणु गुरुराउ ।
थंभणि थप्पिउ पासजिणंदु पणमहु सुहगुरु अभयमुणिंदु ॥ ४० ॥
धनु सु जिणवइहु वखाणि नाणरयणकेरी छइ खाणि ।
चउरासीसरुह पिंड विहरेइ त्रिविधु मंदिर जगि प्रगडु करेइ ॥ ४१ ॥
चउरासीसरुह पिंडु विहरेइ त्रिविधु मंदिरु जगि जाणु ।
नर निसुणहु मनगुर वखाणु अंतस बूझउ थिउ सु जाणु ।
कुगुरवाणि तउ विसु उतरेइ सुगुरवाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
परिणइ अट नारि करि लेउ बूझवणइ बइठउ कथा कहेइ ।
प्रभवु चोर मंदिरि पइसेइ असुयणनिंद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥
कहउ जंबुकुमर इम भणइ विवाहुमहोच्छवु प्रभवु न गणइ ।
जंबुकुमर जउ इसउ भणंति सवि थंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४
थंभव अम्हसउं साटि करेज विहुं विज्जाघटइ इक थंभणी देज ।
कुमर भणइ विद्या किसउं करेसु रिद्धि परिहरी प्रहह वतु लेसु ॥
भणइ प्रभवु नवजोवण नारि परणिय पुहवमिण संसारि ।
कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ व्रतु लेजे तिमइ ॥ ४६
सयणु वरहु सो मई थम्मि किउ मोहराउ पाडिउ नाधियउ ।
मधुबिंदमाहस इहु संसारु निसुणि प्रभव तुहु जोइ विचारु ॥ ४
जसु पिंडाणु सयलु वरतेइ तुह विणु पितरह पिंडु कु देइ ।
महेसरदत्तकथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥
रतिपति जाणउं तहं वनि कियउ नाग्रानणउं संबंधु किम थिय
अहगइ नाग्राकथा कहंति प्रभवु सांभली तउ बूझंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंबुसामिनरि रिद्धि न माइ ।
हूंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥
वयणु कहउ पुणु नीजइ वाइ जंबुकुमर तुह परिणिउं काइं ।
वालकुमारउ तउं व्रतु लियत निगनियमंदिरि अहय रहत ॥ ५१ ॥
सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत ।
कथा कहिउ प्रतिबोधेसु नारि वलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
पडभड केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइं घणी ।
जीमणइ हाथिहि तउ हउं देसु मणवंछिय मागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ ।
माय वापु अट्ठनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
हल्लिय सिविका गाजे रली वज्जिय ढक्क बुक्क काहली ।
सिविका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हथि व्रतु दिंति ॥ ५५ ॥
लेयिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ ।
जंबुसामिउच्छवु देखेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
खयउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचिंत तउ गई ।
मनि जीतइ ईंद्रिय वसि थाइं करम जिणिय नर सिद्धिहिं जाइं ॥५७॥
मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि ।
अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहिं हुंति ॥ ५८ ॥
गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजउउ जुगवरु जंबूसामि ।
त्रीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्जंभवु चउथउ जाणंति ॥ ५९ ॥
लंछणि सीह गोयमु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केता हुंति ।
विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
मंनउं जुगवरु जिणेसरसूरि पावु पणासइ दरिसण दूरि ।
संदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि वोधिवीजु जिउ लहइ॥६१॥
हासामिसि चउपईबंधु कियउ माईतणउ छेहु मइ नियउ ।
ऊणउ आगलउ किंपि भणेउ जगहु भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥
श्रीनंदउ समुदाघरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ ।
नंदउ जिणेसरसूरि मुणिंदु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंदु ॥ ६३ ॥
माईतणउ अवसरु धुरि कियउ चउसठिचउपइया बंधु थियउ ।
सुद्धइ मनि जे नर निसुणंति अणंतसुक्खु सिद्धिहिं पावंति ॥ ६४ ॥

सम्यक्त्वमाईचउपइ सम्पूर्णा.

श्रीनेमिनाथफागु

सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय ते तित्थयर नमेवी।
फागुबंधि पहुनेमिजिणुगुण गाएसउं केवी ॥ १ ॥
अह मयमुक्खण नेमिकुमर [illegible]
[illegible]
वसुदेवितणयसिवदेविपुत्तु [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥
[illegible]
[illegible]

अहर पवाल तिरेह कंठु राजलसर रूडउ
जाणु वीणु रणरणइं जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥
सरलतरल भुयवल्लरिय सिहण पीणघणतुंग ।
उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु ॥ १० ॥
अह कोमल विमल नियंबबिंब किरि गंगापुलिणा
करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।
मलपति चालति वेलहीय हंसला हरावइ
संझारागु अकालि बालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥
सहजिहिं लटहीय रायमए सुलखण सुकुमाला
घणउं घणेरउं गहगहए नवयुव्वण बाला ।
भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई
नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥
सावणसुकिलछट्ठि दिणि वावीसमउ जिणंदो
चल्लइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
अह सेयतुंगतरलतुरइ रहरहि चडइ कुमारो
कन्निहि कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
चंदणि ऊगटि चंदधवलकापडि सिणगारो
केवडियालउ खुंपु भरवि वंकुडउ अनिफारो ॥ १४ ॥
धरहि छत्तु विन्नु चमर चालहि मृगनयणी
लूणु उत्तारिहिं वरवहिणी हरिसुज्जलवयणी ।
चहुपरि वइसइ दसारकोडि जादवभूपाला
हयगयरहपायकचक्कसीकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो
उग्गसेणघरनारि वरो पहुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ
मालिअटालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ ।
गउखि वइठी रायमए नेमिनाहु निरखइ
पसइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कडक्खइं ॥ १७ ॥
किम किम राजलदेवितणउ सिणगारु भणेवउ ।
चंपइगोरी अइधोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

खुंपु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी
सीमंतइ सिंदूररेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥
नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणतिलउ तसु भाले ।
मोतीकुंडल कन्नि थिय बिंबालिय करजाले ॥ १९ ॥
अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो
नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो ।
मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला
करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ बाला ॥ २० ॥
रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए रुणुझुणु ए कटि घघरियाली
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली ।
नहि आलत्तउ वलवलउ सेअंसुयकिमिसि
अंखडियाली रायमइ प्रिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥
याडउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत ।
अट्ठकोटिहिं उद्धसिय देषइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
अह पूछइ राजलकंतु कांइ पसुबंधणु दीसइ
सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरखु हुस्यइ ।
जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
धिगु संसारु असारु इस्यउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥
समुदविजय सिवदेवि रामु केसवु मनावइ
नइपवाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ ।
धरणि धसक्कइ पडइ देवि राजल विहलंघल
रोअइ रिज्झइ बेसु रूपु बहु मन्नइ निष्फलु ॥ २४ ॥
उग्गसेणधूय इम भणइ दूयहि दाहइ देहो
कां विरत्तउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
आसा पूरइ त्रिहुभुयण मू म करि ऊयासी
दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी ।
सामि न पालइ पडिवन्नउं तउ कासु कहीजइ
मयगलु उवट संचरए किणि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
नेमि न मन्नइ नेहु देइ संवच्छरदाणुं
ऊजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणुं ।

राजलदेविमउं मिद्धि गयउ सो देउ गुणीजइ
मलहारिहिं रायसिहरसूरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥
इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटीपणांकथलीऊतरीठव
दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार ...
प्ररूपणु अश्रद्धानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु
उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्वु जिनभुवनआशातना अवीयति देवपूजा
ग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु बिंबआशातना स्थापनाचार्
तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिप
पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अ
मैथुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अ
विरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसं
ए च्यारि सिक्षाव्रत; ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ
आलोयहं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु क
संलीनता षड्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्व
कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपलणइ विषइ जु अतीचारु सु हुं आलो
वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीर्जि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कि
हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु
णीत धर्म्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊ
पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संस
वारसमुतरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकवलनकला
केवलिप्रणीतुधर्म्मुसरणि सिद्ध संघगण केवलि श्रुत आचार्य उपा
सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती
मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वा
जीव वणस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रेंद्रिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर

जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं । छप्पनअंतरद्विपतणा मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं । सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध जोइसी द्वैविध वैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्र शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासी लक्षयोनि ऊपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता मइं दुमिया वंचिया सिहिया सारीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुक्कडं । अढार पापस्थान वोसिरावइ इहुसर्व्वू प्राणातिपातू सर्व्वू मृषावादू सर्व्वू अदत्तादानू सर्व्वू मैथुनू सर्व्वू परिग्रहू सर्व्वू क्रोधू सर्व्वू मानू सर्वइ माया सर्व्वू लोभू प्रेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशुन्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपरिवादु अढार पापस्थान त्रिविधिहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरहु अनागतु पावखउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु जिनशासनिसारु चतुर्दशपूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वनवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थंकरदेवि इसउ मर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ ष्ठिनमस्कारु इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समासेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
क्षन्तव्यं तद्बुधैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥
संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्येह आशापल्याम् ॥

अतिचार

(संवत् १३४० ना अरसामां लखायला जणाता ताडपत्रमांथी)

कालवेला पढ्यं, विनयहीणु बहुमानहीणु उपधानहीणु गुरुनिण्हव अनेराकन्हइं पढ्यं, अनेरइं कहइं व्यंजनकूडु अर्थकूडु तदुभयकूडु कूडउ अक्षर कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देववंदणवांदणइ पडिक्कमणइ सझाउ करतां,

पढतां गुणतां हुउ हुयइ, अर्थकूडु कहइं हुइ, सूत्र अर्थ वेउ कूडां कह्यां ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पगु लागउ लागउं पढतां प्रद्वेष मच्छरु अंतराइउ हुउं कीधउ हुइ, तथा ज्ञानद्रव्यु उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्य विणासिनउं ऊवेख्यं हुंती सक्ति सा.रस कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारिउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मबादरु मनि काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचित्तद्रव्यविगइ खासहाइ पाणही फोफलि वइसणि आसणि सयणि न्हाणुअइ अंगोहलि फलि फूलि आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

बारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसण इत्यादि उपवास नीविय एकासणु पुरिमड्ढ व्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु संखेवु । रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीधी नहि, तथा प्रत्याख्यान एकासणां बिपुरिमड्ढ साढपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंबिलि उपवासि कीधइ विरासइं सचित्त पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिषिद्ध जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतणइ अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धानि विपरीतपरूपणा एवं बहुप्रकारि जु कोइ अतीचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संवत् १३५८ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान चहुत्तरि तीर्थंकर सर्वपापक्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतर पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्टकालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौधर्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि अट्ठावीस लाख, त्रीजइ सनत्कुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहिंद्र देवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लांतकि

देवलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि त्रिसइ, दसमइ प्राणति देवलोकि त्रिसइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि बारमइ अच्युतदेवलोकि बिहु दउडु दउडु सउ, अनइ हेठिले त्रिहु ग्रैवेयके इग्यारोत्तर सउ, माहिले त्रिहु ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहु ग्रैवेयकि एकु सउ, पंच पंचोत्तरविमानि, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठि लाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्झे बहुत्तरि लाख, वायकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिहिकुमार विज्जुकुमार थुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहुत्तरि छहुत्तरि लाख, एवंकारइ पातललोकि सातकोडि बहुत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं । अथ मनुष्यलोकि नंदीसर वरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवलि, च्यारि रुचकि वल्लि, च्यारि मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरे, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरुपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीय क्षारसेलसिहरे, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया निचलुके शाश्वतानि महामंदिर त्रिकाल लोह नमस्कार करउं ॥

सर्वतीर्थनमस्काराख्यानम् ।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कार अरिहंत हउ । किस्या जि अरिहंत; रागद्वेषरूपविआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुष्षष्टि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ: जि उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि क्षेत्रि विहरमान लोह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कार हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कार सिद्ध हउ । किस्या जि सिद्ध: दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि गया । आठ कर्म किस्या भणियइ । ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्रु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्मक्षउ करिउ जि सिद्धि गया । किसी ज सिद्धि लोकमथाइ अग्रविभागि पंचतालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिनइं इत्यादु

तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलमंडाम जु अउगमन-स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमइ य विभागि जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ। तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ। किसा ति आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ। किसउ पंचविधु आचारु। ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ। तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ। किसा जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ। किसी ज द्वादशांगी; आचारांगु १ सुयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ। तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु। यउ लोकु च किसउ भणियइ। अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि। जि किसी; पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अछइ साधु। किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ। किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ। तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक। पंचमहाव्रत किसा भणियइ। प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु। जि विवर्ज्जइ ति साधु भणियइ। तीह साधु सर्वहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु। पंचपरमेष्ठि किसा। जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ। ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयइ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भणियइ। तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु।

ईणि कारणि सुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिव ति कार्य एहतणा प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। यउ नमस्कारू अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी आदिजिनोत्तसारु, सु तुम्हे विसेषइ दिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यानयु गुणेवउ पढेवउ। जु किसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ॥
अनइ एहु नमस्कारू स्मरता इहलोकतणा भय नासइ।
यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइं॥
वाहिजलजलणतक्करहरिकरिसंगामविसहरभयाइं।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं॥
हिययगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते। ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्तसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु। इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ।
नवकारपरममंतो संचियमित्तो सुहं देउ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम्॥

अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचारविषइया अतीचार आलोउ। ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउं अनेरउ कहिउ। व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिक्रमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट; ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडा सांपडी पतिआसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मत्सरू अंतराइ हुउ कीधउं

हुइ भवसगलाहइमांहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं। मृषावादि सहसात्कारि आलु अभ्याख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृषोपदेसु दीधउ, कूडउ लेखु लिखिउ, कूडी साखि थापणि मोसउ, कुणहइसउ राढि भेडि कलहु विढाविढि, जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइनाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। अदत्तादानि विराहउं छानउं फोडउं लीधउं दीधउं बाहिरिं घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चोर-प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइ-मांहि हुउ तेह सवहइ मिच्छा मि दुक्कडं। मैथुनव्रति लहुडपणि आपणा विराधी सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसिनणा नी-मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। हव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ। अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ। हिव अठार पापस्थानक वो-सिरावउ। सव्वू प्राणातिपात, सव्वू मृषावाद, सव्वू अदत्तादान, सव्वू मैथुन, सव्वू परिग्रहु, सव्वू क्रोधु, सव्वू मानु, सव्वू माया, सव्वू लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्या-ख्यानु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिसण-सल्यु ए अढारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविघनसमान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरा-वउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचक्खउ, वर्तमानु संवरु। सागारप्रत्याख्यानु।

खमिउं खमाविउं मइं खमिउ छव्विह जीवनिकाय।

सिद्धह दिन्ना लोयणा नइ मह वइरु न पावु।

हिव दुकृतगरिहा करउं। जु अणादि संसारमाहि हींडनइ हूतइ ईणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्ताविउ। कुतीर्थु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररूपिउ, सन्मार्गु अवलपिउ। हियु ऊपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्तिउ, जि अधि-गरण हलऊ खल घरट घरटी खांडां कटारी अरहट्ट पावटा कूप तलाव कीधां कराव्यां अनुमोद्या, ते सवे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ। देवस्थानि त्रवि वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिखाव्यां, साधर्मिकवाछल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वांदणांइ सज्झाइ अनेराइधर्मानुष्ठानतणइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ। इति भावनापूर्वकु अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुधा धेनुर्द्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यल निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अ गुरभोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण लगइ नवनवा रंग; पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइं चंदनछटा; पुण लगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिया प्रधान आवास, तुरंगम तणी लास, पूजइं मन चींतवी आस; पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भु स्फूर्त्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, घ किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबंध भणीयइ । स ईणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं । तीं माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाखलि लवणसमुद्र बिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेहपरइं धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाखलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह परइं पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाखलि पुष्करव-रसमुद्र बत्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । आगलि वारुणिद्वीप ६४ लक्षयो-जनप्रमाण जाणिवउ । तेह पाखलि वारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । ईणिपरि ठाण बिमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कवण कवण ।क्षीर-द्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसररद्वीप नंदीस-रसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभास-द्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइं सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तइं ।

किसा ते क्षेत्र। भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४ रम्यकक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७। किसी महानदी। गंगा १ सिंधु २ रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७ सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२ रक्तवती १३ रक्तानदी १४। किस्या किस्या वर्षधर। हिमवंतपर्वत १ महा-हिमवंत २ निषध ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६। हिव जे कहिउं भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढ्यपर्वत ३२ सहस्र देश। इहमाहि साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा। ऋषभदेवतणां पुत्रतणे नामिं सयलदेश जाणिवा। ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ काबेर ३ कांबोज ४ कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ क्राण ९ क्रथ १० कौशक ११ कोसल १२ केशी १३ कास्त १४ कारूप १५ कछ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ केकि १९ कौलगिरि २० कामरूप २१ कूंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५ करकंठ २६ केरल २७ पस २८ वर्पर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३ गांगक ३४ चौड ३५ चिल्लिर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडि-याण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६ देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पांडु ५३ प्रत्यग्रथ ५४ अर्बुद ५५ वभ्रु ५६ वंभीर ५७ भट्टीय ५८ माहिष्मक ५९ महो-दय ६० मुरुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकन ६६ मल्लवर्त्त ६७ महाराष्ट्र ६८ यवन ६९ रोम ७० राढक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८० वाल्हीक ८१ वल्लव ८२ अवंति ८३ वहि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७ सूर्पर ८८ सौवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्मोंक ९४ हर्मोज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अठ्ठाणू अनइ आदन हाबस मुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहूति भोट महामोट चीण महाचीण वंगाल पुरसाण मगध वच्छ गाजणाप्रमुख अनेक देश वर्त्तइं।

तीहमाहि वखाणीयइ मरहट्ठदेस। जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम; भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर। दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीपजइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर। जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक सुखइं निर्वहइं। इसिउ देश, पुण्यतणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश। तीणि देशि पइठाणपुर पाटण वर्त्तइं; जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइं नगरि कउसीसे करी सदाकार पाषलि पोढउ प्राकार; उदार, प्रतोली द्वार; पातालभणी खाई, महा-

काप पाईं, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेवतणा प्रासाद; करइं उल्लास, लक्ष्मेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन, गरुउं राजभवन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड। जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं। किस्यां ते चउहटां। सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सौगंधीयाहटी ४ फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पडसूत्रिया ७ घीया ८ तेलहरा ९ दंतारा १० वलीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६ फडीया १७ फडीहटी १८ एरंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ त्रांबहटा २२ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सीसाहडा २६ मोतीप्रोयां २७ सालवी २८ मीणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तूनारा ३२ कूटारा ३३ गुलीयारा ३४ परीयटा ३५ घांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९ लोढारा ४० चीत्राहरा ४१ सतूआरा ४२ कागलीया ४३ मयपहटी ४४ वेश्या ४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाडभुंजा ४८ वीवाहडा ४९ त्रांबडीया ५० भईसायन ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ त्रांगडीया ५५ घाहीआ ५६ काटवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साथरीया ६० तेरमा ६१ वेगडीया ६२ घसाह ६३ सांथूआ ६४ पेरूआ ६५ अटीआ ६६ दालीया ६७ दुडहीआ ६८ मुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरथारा ७१ पीतलहडा ७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७ साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ बुद्धिहटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा।

जीणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न। किस्यां ते रत्न। अश्वरत्न गजरत्न पुरुषरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्पराग माणिक सींघलिया गुरुडोद्गारमणि मरकत कर्केतन वज्र वैडूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत जलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सौभाग्यकर विषहर धृतिकर पुष्टिकर शत्रुहर अंजन ज्योती रस शुभरुचि शल्यमणि अंशुकाल्ति देवानंद रिष्टरत्न कीटपंखि कसाउला धूमराइ गोमूत्र गोमेद लसणीया नीला तृणमर ब्यहगइ वज्रधार षट्कोण कणी चापडी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुख रत्नेकरी दीसइं भरिषां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहुली वाट, चालइ घोडांतणां थाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाल-

जिहां छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात दढ, तिसां अनेक मढ; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि; जिहां आनंद हूआ, तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि कीजइं रयवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; इसुं अन्यायरहइं दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपालइ, भुजवलिकरी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोठारि रुलइं, ढोरसमुद्रतउ ढोयणां ढोयइ, वावरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंगेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं किसुं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सर्वे निर्घाट्यां दुर्ग सर्वे आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपाल्इ। तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ सहिजिइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक ऊगारइ, वयरविग्रह वारइ; पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शस्त्रि शास्त्रि कुशल अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मींठउं भापइं, काज कीधां जि दापइ; चिहुं बुद्धितणउं निधान, सचिहुं अमात्यमाहिं मूलिगु प्रधान; रायनणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुपमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातिनणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मीठउं। किसउं ते स्वप्न। इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकांति, देवरहइं मन भ्रांति; पलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; रूपि विशाल, इसी वालदेवी देपइ भूपाल। जेतलइ तेहतणी वरमाला कंठिकंदलि लागी, तेतलइं रायनइं निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अल्वेसर। किसिउ स्वप्ननणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हूउ मांगलिकशंख भणउ ओंकार हूआ नियलिनणा दोंकार, मृदंगतणा धोंकार; महत्तणा मांगलिकस्वध्वनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्ननणउ मनि विचार धरी, पाल्यंक परिहरी; क्षणु एक राजा महापाटइ आव्या। मह-

सिउ विनोद नीपजाव्या पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकर-
हइ दान दीधउं । ति वारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक घटीवाहक
तलवर माडम्बिक कौटुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्र-
वादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठाबोला सुहाबो-
ला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सा-
मन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा
धर्माधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी
कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठि सार्थवाह पीठमर्द
वारवधू वीणकार वंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पहाउजी आलवणकार
लाक्षणिक तार्किक छान्दसिक मुखमाङ्गलिक वैद्य ज्योतिषी पाहरी पङ्गधर
छत्रधर धनुर्धर छत्रधर वालकहार सेजपाल धईयात पण्डित कवि लेखक
प्रमुख महायोध माल मसाहणी पाण्डव पउंतारप्रमुखसकललोकि करी सश्रीक
राजा राजसभां वईठा ।

राजसभा किसी छइ । जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधी छइ,
विविधमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा थांख आलिप्या छइं, कृष्णा-
गरुजवाधिनणा परिमल महमहइं छइं, मोतीतणी सिरि लहलहइं छइं, फूलपगर
भरिया छइं, कटीप्रमाणपादपीठसंयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन
मांडिउं छइं । तीणि सिंहासणि राजा वइठा । किसउ राजा दीसइ छइ,
मस्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विचित्र वादित्र;
मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हाराढहार, महाउदार, धनदतणउ
भण्डार, रूपतणु भण्डार । घणउं किसिउं कहीयइ । जिसउ पृथ्वीलोकतणउ
इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र ।
तिसइ अवसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ । राजांसाम्ही दृष्टि
करी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहूंतउ दूत सम्हारइ म्हारांनरि
आविउ मनितणइं उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेलहउं माहि । हूउ राजा-
नउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेस । रायरहइ कीधउ जुहार, अलं-
कर्यउं योग्य आसण उदार । राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न
पूछिउं । आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिव दूत वीनवइ कार्य विशेष धन्न ।
जिहां लोकरहइं नहीं किसिउ क्लेश, जिहा नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ
निवेश; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर छइ कोसलादेस

तिहां छइं नगरी अयोध्या। किसी ते नगरी। धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीरहइं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमणीयराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधावनितावलय, निरुपमनागरिकजनतणउं ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जीणइ नगरी देवगृह मेरुगिरिपरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवाक्ष वेदिका चउकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पढवां पटसाल अधहटां फडहटां दंडकलस आमलसार आंचली चंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं। सर्वोसर मंत्रोसर मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अखाडउ गुणणी रंगमंडप सभामंडपसमूहि करी मनोहर एवंविध आवास। जेह नगरिमाहि दोसी नेस्ती साह वसाह पटउलीया पडसूत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भणसारा मणारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक वसइ। पांचसइं व्यवसाईया व्यवसायविषइ उल्लसइ। जेह नगर पाषलीया अनेकि कूपा वावि सरोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंब नींब जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसांतणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिषिरि धजकलश झलकइ, धजऊड लरकइ। घणउं किसूं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वषाणीइ। तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतंस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संसालइ, अन्याय टालइ। जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम आपन्न जीमूतवाहन विद्या बृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप मार्त्तंड औदार्यि बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवकजनकल्पवृक्ष चतुरंगवाहिनीसमुद्र। घणउ किशिउ कहीइ महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ। तेह राजातणउ अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासावधानि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ। जेह राणी, सहिजि

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ चारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिका[illegible] धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र [illegible] चउसट्ठि विज्ञान ।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः ।

द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीड[illegible] नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ; क[illegible] घोर, पामनगउ निरोह; छाजि पाटी, पाणी थीपाइ माटी; वि[illegible] वर्षाकाल, जे पंथीनगउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मधु[illegible] मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां [illegible] वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आ[illegible] चंक्रमणं परिणाम; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, गरजण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सघर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा [illegible] खलहलइं, वाडीऊपरि वेला वलइं, चीकलि चालतां शकट स्खलइं, लो[illegible] नव धर्मऊपरि मन वलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ प्लावइं; नवां [illegible] गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुटुंबीलोक मातइ, महात्मा वइठा [illegible] रहइं; पर्वतनइ नीझरण विछुटइं, सरिखां सरोवर फूटइं । इसिइ वर्षा[illegible] राजा सामंतमनगई कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणुं; घणा[illegible] पावइ, गजघटा आवइ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोअवा [illegible] ईवइं क्रीडिइं नरवर, उपनउ आनंदभर; जोतां नेही महोत्सवनुं [illegible] [illegible], अखंड उवरइ नेवइं वीपइं; इसिइं कमलां आविउ आणी मान[illegible] [illegible] उल्लास, हंसतणु विलास; कादव मूकई, मइं निर्ग[illegible] सूचइं: विकसइं कुसुमश्रेणी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] अनेक [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गले लागा, वेदध्वनि उचरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शांखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

लिखिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुमरि आवी। जेहतणइ परिवारि, सखी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी प्रमुख अनेक सखी वर्णइ। तीहं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि बइठी, दिव्य रूप देषी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, वइठा कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, साप टलइं; मोर चामइं, सर्प नासइं; आदि पंखीआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीठां प्रीति पमाडइं मन; देहुरी ईंडकलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहुंतउ ऊडी बइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, कर्पूरासमवड, सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवनातणउ चमर, जोअतइं मोहइं अमर, कुंदकुसुमसमवडसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुलिकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि जिमणो पांव विस्तारीः कुमरि पांवमाहि पानी, अक्षरसहित वांची। ऊडिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धरममाहि ऊठिउ राउ, करइ घाउ घाउ, हणिउ ठाणि ठाउ। राउतपायक पत्रभणिया, वांच सवि मिलिया। पाटं गया, ब्राह्मण

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी आठा। बुंब पडी राउ धायउ हंस पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा सरोवर माहि तारू; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ । राणी ते वात जाणी, मूर्छा पामी समाणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या। कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया ।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहसइं वणराइं ।

सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल ।
जे दवि दाधा रूंखडां तींह माथइ फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल रव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं; सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकनणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइं भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र वाजइं, रमलितणां रंग छाजइं। एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव चूंटइं; हींडोलइं हींचइं झीलतां वादिइं जलिइं सींचइं; केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंन होयइ। वनपालकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्यु वनमाहि, तेह जि सरोवर देषी कुंअरि सांभली मनमाहि। तेतलइं पुण्य एकइं तेह सरोवरहुंतु एक कमल लेइ रायरहइ दीधउं, राजा हाथि लीधउं तेनलइं तेह जि कमलमध्यहूंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि, दुःस्वप्नतणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरियां। नगरमध्य वार्ता जणावी, राणी कमललोचना आवी। दीठी बेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी नेटी। तिह मांडिया वधामणां, महोत्सवि करी सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिया लागा ते कवण कवण। वीणा विपंची वल्लकी नकुलोष्ठी जया चित्रिका हस्तिका करचादिनी कुब्जिका घोषवती सारंगी उदंबरी त्रिसरी झंवरी आलविणी छकना गयणहत्था माल कंसाल घंट जयघंट झालरि डंगरि कुरकचि कमर धावरी डाक टार डाक धुंग नीसाण सांकी कडुआलि सेल्लक कांसी पाई

सांप मींगी मदन काहल भेरी धुंकार तरवरा। ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुख त्र घाज्यां, दुःग्व दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्छना इगुणपंचास तान, इस्यां गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र। सुधिला संग्रा- दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां रीयां कस्तूरीयां कृदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि जवडि उडसाला नर्म पीठ अटाण कताण झूना झामरतली भइरव सुरूभइरव लीयद्रप्रमुख वस्त्र जाणिवां। ईणिपरि महोत्सवभरि, साधि कुमरि, नरेश्वर हुना नगरि। मननणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइ कुमरीतणउं स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी। राजा तां आश्चर्य धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ। ते प्रणाम करी वइ- ठउ तउ राजां बोलाविउ। हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; जु को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ। नियारपूठिइं स्वयंवरमंटप सूत्रधारपाहिं करावियां मंडाविउ, हुं तुम्हकन्हइ आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए वीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणाइ मनि आनंद वधारउ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतहूइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेप नाग हालिउ। हाथीया घोडा, नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइ। सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीय, उच्छलितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता, आलि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता गजेंद्र मांचरियां, सर- लतेजी तरवरिया। किस्या ते। हयाणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा हपठाणा पइ- ठाणा सरसईया मींधउस केकाइला जाइला उत्तरपंथा पार्णापंथा ताजा तेजी तोरका कान्छला कांबोजा भाडजा आरट्ट वाल्हीकज गांधार चांपेय सैनिल ध्रुवारी आर्जनेय कांदेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल ताल उंचासणा परीछणा। जांघउं सहई. वपूकारिया रहइं: वांकी त्रेठी, सभर पठि छोटे काने, रूपइ वानि: सइरनी ललवलाइ, नीलटनी वलाई, पूंछनणी आ साहे: पलाणतणी सामग्राइं: वांकी तुंडवालि, वहुली पेटवालि, मुहि रू

आसणि सूधा; हसमंत हयहेषारवि अंबर बधिर करता। सुरवीर साहसिक काल्हूआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरीया बोरीया द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित। ससइं घसइं, सादि पइसइं, जुडइं, दउडइं। जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं तिस्या अनेक तुरंगम सांचरिया। तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक। सुरवीर विक्रांत दुर्दांत पङ्ग पेडे लीधे भ्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं जुडइं, सेल्ह कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लाभी, न मेल्हइं स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाड दिइ। किहांइ न दीसइ थाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे धाइं पुलइं ऊच्छलइं। इस्या पायदली मिली कोडि, जींह माहि नहीं पोडि। हिव रथ विस्तरिया। किस्या ते रथ। चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि वइठा सूता; छत्रीसे दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहिं रविबिंब रोलइं; ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं; घांट वाजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया रथ। ईणिपरि चतुरंग दल चालतां हूतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर आवइं, लोक नयनवां भेटणां नीपजावइ। मार्गि जातां आवी एक अटवी।

हिव ते किसीपरि वर्णवियी । जेह अटवीमाहि तमाल ताल हिंताल मालूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक बकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांबु जंबीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीयरि द्राख दाडिमी देवदारु अंकुल्ल कंकेलि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माधवी जाइ मरुवक दमनक पाडलि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री रातगिरि सिरीसां सींदरि सिन्धु सीसम साग टींबुरार आक आकमंदार कणिगर थोल बहेडां करण वरण धव खदिर पलास वड वेडस पीपल पीपरि ऊंबर कउंबर खाखरी धामण धाव वेजड वांसणी कयर करंज वाउल वांसुरी आमली आंबिली बोरि इंगोरि गोरडीगालमुख वृक्षावली दीसइं, जीहंनां गहनंतणां किरण सूर्य न पइसइं। अनइं किहांइ सियालणा फेत्कार, घूकतणा घूत्कार; व्याघ्रतणा घुरहाट, न लाभइं वाट नइ घाट; माहि वानरपंक्ति उछलइ, मदोन्मत्त हाथीइं गुलगलइं; सिंहनादभयभीत मृगगण थरहरइं । जिस्या दवि दाधा ईंधण, तिस्या भील। सूअर घुरकइं, चीता घुरकइं; वेताल किलकिलइं, डाकिनी डहकइं; रींछ खोंखरइं, विकराल भूत विचरइं। इसी महारौद्र अटवी।

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माग, न लहइ नदीनणा ताग; न सकइ चालों घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विषम पर्वतमाला, डाखो जिमणी दवनणी ज्वाला, जहं न सकइं चालिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लागा भील भयंकर काला। तिवारइं राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विषम वेला, जहं थाइं भील भेला; सु किम छूटीयइं, जइ परदल न कूटीयइं। जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइं ते कटक अटवीऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं। आगलि नगर एक देखइ, ते रूपं कुणनणइ लेखइ। सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइं, परस्परइं इसी वात करइं। कुणहिं कांई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; देव करउ, पुणि देव दाणव कोइ तूठउ; जीणइं एवडुं सानिध्य कीधउं, हेलामात्र कटक इहां लीधउं। अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउं पुण्य। जेह कारणि इस्युं कहइ। जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि; ताणीया पाणीनइ पूरि, भाखल्या सूरि; चांप्या मयरि, हसिया विषधरि; धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ; मुरडिया सोगे, पूहविया रोगे; उपाडिया वंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहुं-नइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकरहइं इसी वात करतां राजाइं तिहां आंबावृक्षहेठलि आव्या, उतारा नीपजाव्या। तेतलइ धातु, पुलतु; पाडउ सोनउ, कायरपणइ रोतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पइठउ। तेतलइ तरुआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केइं पुरुष आव्या। तेहइ राजा बोलाव्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं राषइ ते ढोर। तिवारइं राजातणे सेवके कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सकइं इंद्र। तिवा-रइं ते पुरुष कहिवा लागा। नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर ऊगारउं। अम्हे तलार, करउं नगरतणी सार। पुणि ए चोर, दुर्दान्त अपार; ए विवि-धवेषि हेरइ, घोलाविउ घोल फेरइ; चडइ मालि अटालि, पइसइ परनालि पालि; कमाट उघाडइ, पुणि सूतु कोइ न जगाडइ, अघोर निद्रा दिइ; कान-कोटना आभरण लिइ; कटारी पायबंधन वाढइ, पर्यंतमाय वेकाण काढइ; वहिउं चोर पचारइं, राउला भंडार फाडइ; दीसइ दिसि शांत, पुणि रात्रिइं साक्षात् कृतान्त; विणासीनउ न मानइं चोरी, बांधइउं वाढी जाइ दोरी; लोह सांकल त्रोडइ, घडी न रहइं पोडइ; हाकिउ ऊजाइ, रुंधिउ धसी धाइ, करि बांधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाडइं, भीजि अडइ। इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पइसतउ लाधउ, पाडी बांधउ, दांते दोर त्रोडि

नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ। पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी; ए तुम्ह म
थापउ, अम्हरहइं आपउ। नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं। अम्हा-
रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ। सांभलउ ए वात,
ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात। तिहां छइ राजा समरकेतु, अति
सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु। जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, तेतलइं
ताह्‌रा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ। एह कारणि चोर आपी निर्दोष थाउ,
पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ। इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं जोइ
राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या। ऊठिया ते वीर, ताकवा लागा
तोमर तीर। नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगरमा-
हिं पइठा, तु नाभिइं सास वइठा। जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देषाडइं आ-
पणउ घाउ। समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवई निरोप; तत्काल साम-
हिउं दल, मिलइं सुभट सबल; वाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी; पाटहस्ति गु-
डिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ। रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पाषरिया, पायक
सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रचमर,
ऊछलइं रज। तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात
कही। तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि
स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुम्हनइं होसिइं, लोक
कउतिग जोइसिइ। ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि
दल सामहाविउं, ए आपणइ पर्व आविउं। चाल्यां बेउ दल, ऊपडइं धूलि-
हल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं। न जाणीइं आपणां
दल, न जाणीइ पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइ
पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हूउं। बिहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढक
वाजी, रणवहण काहली वाजी; रणतूर वाजिया। त्यंयरत्नणे ब्रह्मब्रह्माटि आं-
फिल्हइ त्रिभुवन टलटलिया नागा, भेरीतणे भूंभूयाटि सुहि भिलिहि कांठा,
काहलतणे कोलाहलं कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उर्ध्वः श्रया ऊधाकिउ,
गगनतल ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिया, ढाकधूक वाजी, धुंवारव कारी, पिहुं दलि
पाखरे मेदनाग सलसलिउ, कुलाचलवत्त चलिउ, कूर्म कारोहि भागइ, अंबर
भारइ; अकालि अकस्मात् प्रलयकालनी शंका हूई। पाछा कांप, सुभट नांप; पाप
ऊतरइं, इर्यागम दूरादुत मानसइं। त्रियां मे। पत्र १ पत्र २ पतुर १ अंगुल

५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिंडमाल ११ मु-
१२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शवि-
१९ क्षणप २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरवारि २३ कुद्दाल २४ दुस्फोट २५
२६ मलय २७ फाल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ द्रम
दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ यष्टि । इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर
लइं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते
आकाश छाया । एकि घोडे चडइं, एकि उतावला पडइं; कायर रडइं, सुभट
भिडइं, योध जुडइं । घोटा मुह मूकी धाइं, छूटे पगि ऊजाइं; हस्तीनणा सुंडादंड
छूटइं, एकिना शिर फूटइं । इसिइ युद्धि प्रवर्त्तनइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं
दल थयरीए एकवार भागुं, नासिवा लागुं । समरकेतु हुउ सानंद, पृथ्वीचंद्र
हुउ निरानंद; चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं काइं हुउ उपघात ।
राजा चींतवतइ हुंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग नीपजा-
विउ । तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकतरइं
पडियां । राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगमली आणिउ, पुण ते वीर
नियारपूठिइं कुणहीं न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-
चंद्रनणउ वीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीअचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
द्वितीयोल्लास ।

तृतीयोल्लासः

जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहूंतउ छोडिउ. पिहरावी वोलावीउ ।
तुं मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे । किवारइ सूर्य पूर्व टाली पश्चिम उदय
मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ: मेरु टलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइं, पाषाण
परि धर्म्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलइ भ्रमइल पल्लवइं, कृपणि दान दीजइ, पुणि
गलइ; अमृतहूंतउ विष थाइ, कृत्री स्वामिद्रोह जाइ. कृपणि दान दीजइ, पुणि
मुग्धकलइ प्राणि शरणागत वारइ किम छांडइ । तिवारइं ते आविउ एक
शरणि, ते लागु राजानणे चरणि. स्यामी तु धन्य जीणि मइ हूं उगारिउ.
महीतु मल्हारे हुंतु मारिउ: वइमउ संसारि ईतम मनुष्यजन्मनणां हारि ।
....नि न किसिउ. जेहनुं मन हसिउ । तिवारि ते बलिया लागु । अग

देशि श्रीपुरिनगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइं सधर। तेहतणु पुत्र हुं श्रीपति, पणि विषम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि बापुजीसाथि पहुती। पिता परोक्ष हूआ पूठिइं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं; कई वाणउत्रे ग्रसिउं, हाट चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, कांई ठाकुरे ग्रहिउं; घर वलिउं, समग्र मंडाण टलिउं; समग्र द्रव्य निस्तरिउं, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउ। पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं। भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ, त्रिन्नि सइं साठि क्रियाणां चडाव्यां, सप्तविध पकवान चडाव्यां; सप्तविध करंवा लिया, पोतां सपाणी भरिया, देवसमुद्र वायस पूजाव्या। पाभिल मादल वाजिवा लागां, वावरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाहेल करवा लागा; कूउथंभउ ऊभउ कीधउ, नागरउ पाडिउ, सिढ ताडिउ; घामतीउ घामतउ लीचइचा लागु, वाऊरीऊ तलि पइठउ, नीजामउ नालि वइठउ। आउला पडइं, सूकाणी सूकाण चालवइं, मालिम वाहण जालवइं; सुरवर लहलह्या, वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या। हिव आगलि जातां हूंता चिली वाय वायां, आकाशि हूई मेघछाया; ऊडिउ पवन प्रवल, समुद्र हूउ उच्छृंखल; कल्लोल आकाशि ऊपडइं, यीहतां लोकरहइं डींवा चडइ; वेला लागी, वस्तु वामी; एक हा दैव करइ, एक देवध्यान धरइं। वाहणि पर्वत आफली भागउं, श्रीपतिइ हाथि पाटीउ लागउं। तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ त्रिहु दिवसि पारि आविउ, वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ। आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइ साचविउ नमस्कारतणउ विवेक। जोगी कहिउं तूं रहि एक देसु, बीजउ लेइसु। मइं कहिउं दिइ, पछइ मुज निर्धनकन्हइं जं देपइ तं लहिइं। जोगी वंधछोडणी विद्या देइ मस्तकि मागिउं। मइं चींतवइउं, वली पूर्वभवपातक जागिउं। जोगी धायु पूठि, मइ नासिया वांधी मूठि। नासतु इंणि नगरि आवी रात्रिइं गढतणइ पालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ; तइ राखिउ, मोटउ उपगार दाखिउ।

छासिइंकेरउ आफरु दासिइकेरू नेह।
कंवलकेरू मोलीउं खिसत न लागइ खेव॥

माहरी लक्ष्मी इहसरीषी हुई, तउ कहीइ। आभानणी छांह, कुपरिसनणी बांह; आहनउ तृण, नदीनूं पूर; ठाकुरनउ प्रसाद, मारूइनउ विषाद; वहीनउ पहीगणउं, गृपदानउ उठीगणउं; दीवानु तेज, माझीनु हेज; दासीनु स्नेह, दार-

...कालनु मेह; घोडा मेल्हउ ग्रेह, पहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय
...भीरनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-
द्रनिइं तिलक नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरू पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरूं अद्भुत भाग्य, मुझ-
नइ ऊपनु वैराग्य। विमासी जोयुं नउ असार, संसार। जिशिउं पीपलनुं पान,
जेशिउं गजेन्द्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ
सांकडनु वैराग; जिसिउ धांजनु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-
नउ टबकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ सं-
सार चंचल। हुं एक कहिउं करि, माहरूं राज्य अंगीकरी। हउं तापसी दीक्षा
...लेसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे
करवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत,
हाट ते जे वस्तुवंत. घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत. देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन
ते जे सत्यवंत. शिष्य ते जे विनयवंत. मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चाप-
वंत, राय ते जे न्यायवंत. व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत।
अहो महाभागउ. हीयानं लोचनं जागउ। जेतलुं अंतर गर्णा अनइ दासि,
जेतलुं अंतर दहो नइ छासि, जेतलुं अंतर मधुरध्वनि नइ धामि; जेतलुं
अंतर समुद्र नइ कूया. जेतलु अंतर सोनईया नइ रूपा. जेतलुं अंतर वाप
नइ कूया; जेतलुं अंतर नांभर नइ आहार, जेतलुं अंतर रूपा नइ कथीर
जेतलुं अंतर सुवर्ण नइ माटी. जेतलुं अंतर चाक भांति नइ घाटी; जेतलु
अंतर पटउल्या नइ छाटी; जेतलुं अंतर पट्टसूत्र नइ सूतली, जेतलुं अंतर जे
घना माणस नइ पूतली. जेतलुं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलुं अंतर तंदूल
पुरी; जेतलुं अंतर सूर्य नइ नाग, जेतलुं अंतर साकर नइ पारा; जे
अंतर सीह नइ सीआल, जेतलुं अंतर प्रभात नइ वीआल; जेतलुं अंतर
... जेतलुं अंतर सांवलि नइ साग. जेतलुं अंतर अलसला नइ

तेतलूं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ सूर जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ चोर जेतलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा; जेतलइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ मोट वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलूं अंतर अपरदेव नइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ। जिम श्री सूर्यपापइ दिवस नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरूपदेशपापइ विद्या नही, हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापिइ त्रिपति नही, साहसपापइ सिद्धि नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ सुगति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मनणी प्रशंसा। जेह कारणि इसिउं कहिइं। जिम विलंब विणसइ काज, कुठकुरि विणसइ राज, मार्जार प्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान, कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लूइं विणसइ मइपान, व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र, रसायणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आकधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु थाक, पापइप्रयोगि विणसइ रसवर्जीनणउ पाक; वरमालइ विणसइ शास्त्र, पगरी विणसइ वस्त्र; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ धर्म। राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइं कहिइ छइ। सांभलु परमार्थ देव, टालिउ मिथ्यात्वनणी टेव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव, करउ सद्गुरुनी सेव; जिम टलइ पापकर्मनणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली मांहि विहुंरहिइं मिथ्यात्वनणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा लेवा हुइं मनि रली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमणमाहात्मा एक तिहां आविउ, तेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ। पगि लागी, दीक्षा मागी; सीणि दीधी, पांछिलयार्त्ता सीधी। तियारपछिइं तेहे श्रीपीश्वरे राजा पारणार्थी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आवउ पीपाणउ दीधउ। पहिलुं पहुतु पद्मसरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णपारउ सार आपिउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहंना साते पीयाणे अयोध्या नगरी

हुआ, स्वयंवरि आव्या दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं भावी महोत्सवि परी माहि लिया, भला उतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोगणिने पाने छायु। कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि ध्वज लहलहइं; चंद्रूआनणी विचित्राइ, पूतलीनणी काविलाई; थंभकुंभीतणा मनोहर घाट, पटइ भाट; रत्नमई तोरण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे प्रकरि; वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां झांना नेउर पलकइं। इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण, नागगहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया; राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् हुइ इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ वांकाभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आविउं किसिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देषी सकललोक इसिउ विमासइं। जिम अक्षरमाहि ओंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंबरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, वस्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शूद्रकवीर, गढमांहि कालिंजर, पाणिमाहि पद्मरागरु; द्वीपमाहि जंबुद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण; तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि भूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल; जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागर-षंडउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सर्वार्थसिद्धि विमान; गरु-आमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवारपूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारत्नइं तेडउ दिवराविउ, तउ सधव स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगरू-क्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

धरियां । किस्यां किस्यां ते आभरण । हार अर्द्धहार त्रिसर प्रालंब प्रलंब कटीसूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट्ट शेखर चूडामणि मुद्रिका [illegible] दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुष्ठक हेमजाल मणिजाल रत्नजाल गोपुच्छक उरस्त्रिक तिलक कुंडल अग्रमेनक कर्णपीठ हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां । इसमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां मौक्तिकतणां जाल। कल्याणतणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; आविउं नरविमान, तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान । आगलि हुइ वादित्रध्वनि अनइ गीत गान । इणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; महोत्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपनाइ बारि । ते देषी नरेश्वर सवे मकरध्वजि मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमानणइ अवतारि । तेहतणा पाणिग्रहणतणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं । एकि राय आपणा हीयानउ हार हलावइं, एकि बांहतणा बहिरपा चलावइं; एकि रत्नमय दडा ऊलालइं, एकि छुरी ऊछालइं; एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप मांडइं, एकि हष्टिरहइं विनोद ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि विविध चेष्टा करइं राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाशि देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर । हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वयंवरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी । अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्षमगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अलवेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ । जेह राजातणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ; तूठउ दारिद्र्य हरइ, दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गाजइ, शत्रुभट भाजइ; इसु भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ वाणारसीतणउ राउ, भांजइ वयरीतणउ भडिवाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्धउ त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुंइ सपक्षपर्वततणी

शंका नीपजइं। जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ घइरीरहतइ प्रलयकालोद्-
समुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइ। इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल,
सकल; धर्मचंद्रनामा नरेश्वर घरि, मारूं कहिउं करि। अथवा विदर्भदेस कुं-
डिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; घहइ कर्णदानेश्वरतणउ
अवतार, धनुर्धरपणइं हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार,
प्रबलकोठार, शृङ्गारतणउ नहीं पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट कइवार; म-
करध्वज राजा अंगीकारि भर्त्तार।
हावार, महाउदार, कंठि घरमाल घाती ए मकरध्वज राजा जोइ, जीणि दीठइ
अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथ राजा जोइ, जीणि दीठइ
आणंद होइ। जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेलकीकर्पूरधवलि कीर्त्ति मं-
डलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी
पदवी आपी; यमुनानणइ स्थानकि कीघउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु;
सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइं नीलकंठपणउं
टालिउं, विष्णुहुइं कृष्णपणउं पखालिउ; बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं।
इंणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी। ईणिपरि
इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर। ईणिपरि
तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु
सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमां-
गद हेमरथ मणिरथ मणिशेखर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख
नरेश्वर वर्णव्या वषाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ सुषचंद्र,
उल्लटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ महा गुणतणउ आगर। निवारइं
प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्त्ति हूउ वि-
ख्यात वसुधातलि। जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ चउरासी लाप हस्ती, जीहतणि
गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाप तुरंग, ऊछलता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी
लाप रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाप नीसाण वाजइं, घयरीना भडवाउ
भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; गाम घोडउं कादतां छन्नू कोटि
साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संवाघ, चउद सहस्र
अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि
सहस्र नगर प्रधान; ...यायरहइं दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण: जेहं वस

अनेक कुटंब, इस्या चउवीस सहस्र मटंब; जीहना वर्णननणी कीजइ जेट, इस्या सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्तिनणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी; घरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर; विहिनोल्लास, अट्ठावीस-उ लाप पिंडविलास; वत्रीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय; प्रत्यक्ष, पंचवी-ससहस्र यक्ष; वीससहस्र सोनारूपानणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर, छत्रीस लाप दीवटीया उदार, त्रिनिसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंडभुजदंड, साधिउ भरतक्षेत्रषट्‌पंड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्त्ति। हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घालि राषिउ आप-णउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस। तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि ठाम। तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय हूआ, तेहना प्रबद्धक कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकनणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वीशे-पर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ। हिव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि सा-क्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधरू, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अश्वि-नीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयनणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस; पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एहऊपरि धरि तु अनुराग, इहां छइं ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कहीइं। एह राजा विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकलमहीपाललीला-ललितशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिवा योग्य छइ। ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा झमझमकार करती; हर्षभर वहती, राजाढूकडी पुहती। लाज ठेली, कंठकंदलि वरमाल मेल्ही; तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या; विद्याधर पुष्पवृष्टि करइं, भट्ट जयजयशब्द उचरइं; गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइं; वापरइ धवलमंगल, हुइं महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे
वाग्विलासे तृतीय उल्लासः।

चतुर्थ उल्लासः

हिव तिणिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-रहइं धूमकेतुदेवनणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइं जं चींतवइ तं करइ। धूमकेतुदेव अठ्यासीग्रहमाहिलउ जांणिवउ। कवण कवण। अंगारक १ विकालिक २ लोहितांक ३ शनैश्चर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९ विनानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ स्त १५ कर्योपग १६ कर्बुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१ शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाभ २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-भास २७ रूप्य २८ रूप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२ तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ वंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५ अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-काल ५८ स्वस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक ६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८ आभंकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक ७४ विनत ७५ विवस्त्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८० एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७ भावकेतु ८८। इह अठ्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ।

जिवारइ पृथ्वीचंद्रराजानणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-हुइं रीस चडी। रोसे हूउ विकराल, धूमकेतुदेवनानणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं करवाल। ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नयताल; कंठावलंबितरुंड-माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा; आंखि ऊंडी, पेटि फूंडी; आंखि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश; हडहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम सलकलइ। इसिउं रुद्र रूप, केतलुं वर्णावइ तेहनुं स्वरूप। इसिउ वेताल देखी सहू भयभ्रांत हूउ। तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाडी रथि घातिवा लागउ। तेतलइं राय राणा धसमसिवा लागा। तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अं

भूतनां पडइं, कायर रडइं। इम धूजि विछूटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यमयसारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीनणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू आश्चर्यपूरित हूउं। तीणं स्त्रीइं बिहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी वली निसोह जि हुई। असमाधि फेटी, राजा कुंअरि आघी तेडी।

निवार लोकनणा मेला, थान पूछिवानणी नहीं वेला। तिह हर्षपूर श्लोक कल्कलिया, विशेषतु उत्सव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय ऊनारे हूया। भोजन मंडपऊपरि ध्वज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुइं धवलगान, नीपनां पकवान; वेवईयाइं मान, स्वजनहुइं बहुमान; धापइं पान, जिमाडीयइं जान। कामकाजना वर्णा पलपटि बांधी हींडइ आकुला, मेलइं थाउरी थाकुला। भेलइं आइणी, तिह भोजननणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परीसणहार विहरइं पांति। पहिलउं परीसया फलावली व्यंजनपाक पकवान, पछइ परीसणां उत्तम अन्न। मां विशालथालि, परीसी सालिदालि; घृतनणी नालि, धावलि ढालनणी पालि; ऊपरि पूर करंबा दहीं धापरइं, ईणिपरि लोक भोजन करइं। आचमनअनंतर दीधां कर्पूरमिश्र बीडां, लक्ष्मीचंदनणं सवें वस्तु संपजइ मीठां। तिह वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुइं करावित मंगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरियां वस्त्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। मत्त गजेंद्र आरोहिउ, उत्तम स्त्री वधाविउ। गजेंद्रहूंतउं ऊतरी तोरण थकि विवाहमंडप चांपनउ माहि पहुतु। आचारविचार हूआ, चउरीमाहि च्यारि मांगलिक वर्त्या, हथमेलावणइं दान प्रवर्त्यां। राजारत्नशेखरि बहुइं गजरथ तुरंगमदान दीधइं, पृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीनणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ हिलेवयंत उत्तमवरसंयुक्त उभारागणी चालिउ, सकलारीय लोकना मिलिउ। तिहिं वधावइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वधावइ रत्नमंजरीनणउं रूप; एकि वधावइ भाग्य, एकि वधावइ सौभाग्य; एकि वधावइ शरीरनणा शृंगार, एकि वधावइ परिवार; एकि वधावइ उत्तमनणां कुल, एकि वधावइ विहुंनणां शील निर्मल, एकि वधावइ लावण्य, एकि वधावइ पुण्य। इणीपरि वधावणां स्थानकि आविउ, विश्वहुइं आनंद उपजाविउ। राजारत्नशेखरि सर्विहुं राजहुइं आदरिअ

कीधी। कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पटकूल। इणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजापृथ्वी-चंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शियमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा। जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वांस बइठा पुस्तक वांचइं; माल्ल मल्लविद्या मांडिया माचइं, रागज्ञ रागहुइं रंग रहाविया राचइं; गुणरंगीआ शुभ गोष्ठी स्वामीकन्हे पसाउ पामइं, कूडा डागडू चिरकालि कि-[illegible] [illegible] पामइ। इसी सभा, बिहुं नरेश्वरि करि वर्त्ती [illegible] हूता। तिणिइं अवसरि हर्षभरि पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोम-देव [illegible]। स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउ धारिया, जीणि दर्शनि त्रिभुवन आनंद पमाडिया। तिय अवसरि आविउं, श्रीजं-बूस्वामीइं कहिउं, चरित्र, महापवित्र। इणि भरतक्षेत्रि मध्यखंडि वडी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां निजभुजनिर्जितरिपुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर। तेह-नइ पट्टराणी, सुव्रता इणिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राणी आ-पणइ आवासि, मननइ उल्हासि, पाछिलि पउढी हूंती, [illegible] रात्रिनां त्रिहुं पहुर वर्त्तमान चउद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न। गज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलश ९, सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतु-र्दश[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। राणी [illegible] दीठउ [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible], तेजि करी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] ?। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]

धवललोचन; जिसिउ चालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ वाद। इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ वृषभ २। तउ राणीयइ दीठउ सीह्। किसिउ तें सीह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभाडंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तारुइ लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्णकेशरसटाशोभित-स्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडं-बितवदन, पराक्रमनणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीनलोचननि भूमिकांति निहालतउ, मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्ति-तणउं क्षेत्र; अकल अगंजित, सबल अपराजित; अबीह, एवंविध दीठउ सीह ३। तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महाप्रवरि; पद्म-द्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार; दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान; एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर अशोक चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही वेउल वउल श्रीदमणा मरूआ मंदार मुचकुंद केतकीप्रमुखवनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्य-मानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५। तउ दीठउ चंद्रमा। ते किसीउ चंद्र-मा। रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजी-वितेश्वर अमृतमयमूर्त्ति उज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६। तउ दीठउ श्रीसूर्य। किसिउ ते सूर्य। प्रभाततणइ समइ जेह आगमनतणइ उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइं, देवहुइं पूजा चडइं; पंथ सवे वहइं, मुनीश्वर धर्मकथा कहइं, लोक वादविशेष लहइं, मेघ मल्हार गाइ। भांति अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइं, चक्रवाक उल्लसइं; एवंविध प्रवरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७। तउ दीठउ ध्वज। किसिउ ते ध्वज। कृताह्लाद, कोई एक सरूउ प्रासाद; प्रवरि, तेहतणइ शिपरि; अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कलशमय कलश; भली, रत्नमय पाटली; तिहां जिसी स्वर्गमउ कदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सी-तणउं रूप। इसिउ घंटागणि गहगहतउ वाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइं ... ध्वज ८। तउ दीठउ पूर्णकलश। किसिउ ते पूर्णकलश। सुवर्णघटित रत्न-... कंठि पुष्पमाला स्थापित; माहि अमृतपरिम ...

कीधो। कुण हुइं घोडउं, कुण हुइं हाथिउ; कुण हुइं आभरण, कुण हुइं पटकूल। ईणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजापृथ्वीचंद्रहुइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजापृथ्वीचंद्र अनइ राजासोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा। जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वांस बइठा पुस्तक वांचइं; माल मल्लविद्या मांडिवा माचइं, रागज्ञ रायहुइं रंग रहाविवा राचइं; सुहावोला शुभ बोली स्वामीकन्हे पसाउ याचइं, कूडा झागड्ड चिरकाल विवाद करी स्वयमेव पाचइ। ईसी सभा, विहुं नरेश्वरि करि वली बाधी प्रभा। तिसिइ अवसरि हर्षप्रसरि पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोमदेव भूपाल। स्वामिन् आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थंकरदेव पाउ धारिया, जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्मनाथतणउं कहिवउं, चरित्र, महापवित्र। ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर भानुनामा नरेश्वर। तेहतणइ पटराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राणी आपणइ आवासि, मनतणइ उल्हासि, पल्यंकि पउढी हुंती विपहुर रात्रिसमइं निद्राभरि वर्त्तमान हुंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न। गज १ वृषभ २ सिंह ३ लक्ष्मी ४ पुष्पमाला ५ चंद्र ६ सूर्य ७ ध्वज ८ पूर्णकलस ९ सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नराशि १३ निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतुर्दशमहास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर। राणी प्रथम दीठउ गजेंद्र। किसिउ गजेंद्र। चतुर्दंत, विनयवंत, सप्तांगप्रतिष्ठित, गजशास्त्रगुणि अधिष्ठित; विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णांचल; उद्दंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड, मदजलवासित कपोलस्थल, भ्रमरकुल अनुकूल; परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकलजनतसंतोष, प्रधान, ऐरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय, अद्वितीय; जेहतणां गति प्रशंसा, एवंविध दीठउ हस्ती १। बीजउ दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ। निर्जलधाराधरधवल, विकसित काशकुसुमसमुज्ज्वल, विशालककुद, चंद्रकिरणतणी परि विशद; सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराजमान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; सुभगदृष्टिमनोज्ञशृंग, सुंदरसमस्तअंगोपांग; दृढदंत, दंतिशोभित प्रशस्तदेश, चारुचरणसंनिवेश; प्रसन्नवदन,

मलोचन; जिसिउ नाटनउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ पाद।
नउ अत्यंत शुभ, दीठउ पद्म २। तउ राणीयइ दीठउ सीहु। किसिउ
सीह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रमाडंबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, मादक
णी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्ण [illegible] विंट-
कंध, घनसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल [illegible] कोट, [illegible] पांगलांगलि
चेतनवदन, पराक्रमनणाउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, दीर्घपृथि-
भूमिकांति निहालतउ, सुयागनसुवर्णसमान पिंगलां [illegible] एवंविध दीठउ सीह ३।
मणउं क्षेत्र; अचल अगंजित, सचल अपराजित; अर्थात्, [illegible] पद्म-
तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वतनणाइ शिखरि, [illegible]
इहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, [illegible]
लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारमनंगविकार, अद्भुतशृंगार;
दिग्गजेंद्र अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, [illegible]; एवंविध लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर [illegible]
एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी [illegible] दीठउ [illegible]
चंपक नाग पुनाग प्रियंग पाटल सेवत्री जाइ जूई [illegible]
[illegible] मंदार मुचकुंद [illegible] सुगंधि [illegible] तउ दीठउ [illegible]
[illegible] दीठउ मालायुगल ५। तउ दीठउ [illegible]
[illegible] ६।
[illegible]
[illegible] तउ दीठउ [illegible]
उदइ प्रासादनणां [illegible]
धर्मकथा [illegible]
[illegible]
[illegible]
किसिउ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
दीठउ [illegible]
[illegible]

विराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विपइ अनलस, दीठउ पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षतणउ परिकर; पालिउन विस्तर, देहरीनउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंडी झलहलइं, परइ वाइ लहरि ऊच्छलइं, ऊपर जाण भरीयइं, पड कूइ तरीयइ। अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कपिंजल कलहंस कलगलइं, तापतणा व्याप टलइं; राजहंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंखीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइ; संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकइं; तडि कीर्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। वग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनखंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजल्ल, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रवहण संचरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं। इसिउ आश्चर्यनिलय, पृथ्वीपीठइइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलग्नाहूइं झुंबलमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमति करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्ष न माइं। अनेककुसुमतणा प्रकर, चंद्रआननणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीगणा परिमल महकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक पद्म धूर्प चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ सारप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अप-

राजित गंगोदक, मरकतगर्भ हंसगर्भ ज्योतिरसप्रमुखरत्नतणउ राशि विरचितविस्मयकारक देखइ राणी मनतणइ उल्लासि ११। तउ दीठउ निर्धूम वैश्वानर। किसिउ ते वैश्वानर। कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करीय रमणीय; मधुघृतघनसारविधिज्वल्यमान, कृष्णरहितदेवनागुणसमान; धूमरहित, तेजस्विन; मांगलिकरूप, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर ४१।

ए चतुर्दश स्वप्न देखी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी। मइं मां ए स्वप्न सुपिणां दीठां, एहनां फल हुसिइ अत्यंतमीठां। तउ स्वामीकन्हइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु। इसिउं विमासी पछइ न बोलावी दासी; सखी सहेली न वि पाली, राणी स्वयमेव चाली। हंसगति हरषिइं गहगहती, जिहां राजा तिहां पहुती जयविजय करती। राजाइं निद्रा टाली राजातणइ आदेसि भद्रासनि बइठी। स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फल कहिउं; राणी हृदयि ग्रहिउं। निवार पूछिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक बइसी सखीसहित धर्मजागरिका नीपजावी। प्रभाति नरेश्वरि सभामाहि स्वप्नपाठकपाहिइं विचार कराविउ, दान देउ निमित्तीयां अदरिद्र नीपजाविउ। संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हूंते परमेश्वरतणउ हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार।

इति श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे चतुर्थोल्लासः।

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली। ते कवण कवण। भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ तोयधारा ५ विचित्रा ६ पुष्पमाला ७ आनंदिता ८ मेघंकरा ९ मेघवती १० सुमेघा ११ मेघमालिनी १२ सुवत्सा १३ वत्समित्रा १४ वारिषेणा १५ बलाहका १६ नंदोत्तरा १७ नंदा १८ आनंदा १९ नंदिवर्द्धिनी २० विजया २१ वैजयन्ती २२ जयंती २३ अपराजिता २४ समाहारा २५ सुप्रदत्ता २६ सुप्रबुद्धा २७ यशोधरा २८ लक्ष्मीवती २९ शेषवती ३० चित्रगुप्ता ३१ वसुंधरा ३२ इलादेवी ३३ सुरादेवी ३४ पृथ्वी ३५ पद्मावती ३६ एकनासा ३७ नवमिका ३८ भद्रा ३९ सीता ४० अलंबुसा ४१ मितकेशा ४२ पुंडरीका ४३ वारुणी ४४ हासा ४५ सर्वप्रभा ४६

श्री ४७ ह्री ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ रूप ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ ऊर्ध्वलोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवासिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिकुमारिका आवी। तेहे सूतिकर्मतणी समग्ररीति नींपजावी। तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्रहहं आसनप्रकंप नीपनउ। पहिलउं इंद्रहुइं कोप ऊपनउ। वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि निहालिउं। जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार। इंद्र मनि गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थइ मस्तकि हाथ जोडी शक्रस्तव कहिउ। इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल आविउ। इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं। इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्वति आविउ। चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया। आठ सहस्र चउसट्ठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं। तदनंतर अंगरूक्षण करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पग्रह ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य १६ वादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। कणकवणपरिइं। उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुरवाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पंताणं तुंदुफीणं चिपाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं उत्तालिज्जंताणं तलाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंकिसिकाणं सुंसरिकाणं तुंदुकीणं फूमिज्जंताणं यंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं। ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोडि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ। राजा वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ प्राकार, शृंगारियां प्रतोलीद्वार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई। ध्वजपताका लहकई, पुष्पपरिमल वहकई। नाचई पात्र, राजाभवनि आवई अक्षतपात्र। सोमाई भणतां आवई छात्र, लोक अलंकरई आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात। तीणि वेलां न ऊऊई फोरण, बांधीयई तोरण; बांधीयई चंद्रवाल, उत्सव विशाल; गुलधीउ लाहीयई, मन ऊमाहीयइ। ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हूआ। नामकरणतणइ अवसरि माताहुई दोहलइ धर्म बुद्धि हुई। एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं। अढई लाप वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्तियुक्त हूउ स्वामी। नवविधलोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांवत्सरिकदान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। बि वरस छद्मस्थ काल अतिक्रमी, केवललक्ष्मी पामी; विहारक्रम करइं, भव्यलोक तारइं।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाख सुवर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिइं लेई परमेश्वर नमस्करिवा सांचरिया, सकललोक ऊलटि धरिया। पृथ्वीरहइं अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते। समग्र देव आवइं, समोसरण नींपजावइं। तां पहिलुं वायुकुमारदेवतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइं, ते तृण काष्ठ कचवर हरइं, आकाशि मेघपटल पसरइं, गंधोदकि वृष्टि करइं, फूलपगार भरइं। गरूअउं रत्नमय पीठ बाधीं ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइं, सिहुं दिसि दिव्य परिमल विलसइं। रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिणि प्राकार रूपि करी उदार, अनेक प्रकार; मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार। तिहां बिहु पासे उधेस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ; इंद्रधनुपमानमूरण, रत्नमय तोरण; प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसां चंद्रवालि। अनेकि विचित्र, विशाल छत्र; उदारस्वरूप, कनकमय पूतलीतणां रूप; जेहे लिपिन सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज। इस्या समोसरणविचालि, मणिबद्धपीठि विशालि: सकलमांगलिक्ययुक्त, गरूउ अशोकवृक्ष; जिसिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ बारगुण चैत्यवृक्ष। तेतलणी छायां रत्नमय

सिंहासण, जगन्नाथहुइं वइसण। तेजिइं जोईं सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय पादपीठ; जिस्यां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, देवहुइं ढालइं चमर; अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पूठइं झलकइं भामंडल। जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र झलहलइं; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोप गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिकतणउ भडवाउ भाजइ। सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रधज लहलहइं, धूपनणा परिमल महमहइं, वादित्रतणी कोडि हुहहुहइं। मनुष्यतणी कोडि आवइं,मनि रहरहइ। तिणि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थापतउ, पूछिया ऊतर आपतु; प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकहुइं पाप मूंकावतउ, पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि वइसइ चतुर्मुख होइ, भविकसंमुख जोईं। संपूरी, बारपरिषदपूरी; मिथ्यात्वमानमूरी, पापपटलचूरी, सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी; लाभ जाणी; वखाण करइ, धर्म मार्ग विस्तरइ।

हिव वेउ नरेश्वर मनि गहगहता, समोसरणिमाहि पहुता। श्रीधर्मनाथहुइं प्रदक्षिणा देउ, आगलि वइठा नरेश्वर वेउ। तिवारे राजापृथ्वीचंद्रि आपणइं विशेषवंनइं रूपि लावण्ये करी देवदानवइंद्रहुइं आश्चर्य कीधुं, श्रीधर्मनाथि तीर्थंकरि उपदेश दीधउ। किस्यु ते।

सद्वंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः।
पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोषाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि॥१॥

अहो भव्य जीव ए इस्यां धर्मनां फल जाणिवां। कवण कवण। पहिलुं तां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मनणां फल सार। जइ जीव नीचकुलि अवतरइ, तु किसिउ पुण्य करइ। एह विश्वमाहि एक माछीनणां कुल, भीलनणां कुल, कोलीनणां कुल। ईणिपरि धोहरी आहेडी वागुरी पाटकी मद्यप घांची तिर वेह्पा वावरी मेय डुंव पापपेरणीयंतणां पापतणां कुल जाणिवां। जीव एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ, लाधु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ। तिणि जीवहुइं उत्तिम कुल दुर्लभ। कुण तेउ उत्तम कुल।

वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं॥ २॥

वंश ते प्रशंसि लेखे जिणतणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार। इक्ष्वाकुवंश सूर्यवंश चंद्रवंश चाहुआण सोलंकीवंश पालावंश चावेला चावरोडवंश मरुवंश गुज्जरवंश सोभटा भाटीया नीदा चांदा दाहिणमा कच्छवाह मकवाल हूणवंश ईरीयट चाउड सिंघार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल दधिचाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैंधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश डाहीलाजरवंश मकूआणा राठउरवंश मोलणवंश बोडाणवंश दहीयावंश प्रमुख छत्रीसवंश प्रमुखवंश जाणिवा। अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष जाणिवा। जिम कलिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयइं। किसी ते ज्ञाति। श्रीश्रीमाली उसवाल घावेरवाल टींडू पुष्करवाल डीसावाल मेडतवाल भाभू गूगणा हरसवाल दोहिल मोनी पटवड पंढेरवाल पोरूआड गूजर मोढ नागर जालहरा पदामा कपोल जांबू वायडा वाव दसउरा करहीया नागद्रा मेवाडा भटेउरा कवरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला कंबोह रामसी अगरवाल जिणाणी थांभ थांव पाल्हाउत उचित वगडू अहिछत्रवाल श्रीगउड वाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवग्री लाडीसाखा वघनउरा सुहडवाल पंपू पद्मावती नीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा चित्रउडा गोला गलियरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कडफोलापुरी रायकवाल पेर्सीया पेरूया गोमित्री नारायणा टींडू गजउडा गोपरूआ अजयमेरा खंडेलीया कायस्थ सगउडा सोहउरा जेसवाल नादेया जाइलवालवाल। इणि सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वखाणीइ सुश्रावककुल। जीणि सुश्रावकतणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरीयइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ; पाणीं भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ; अथाणूं न राषीइ, अणंतकाइ न चाषीइं; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ; आलोअण लेई पाप धोईइ, परिग्रहप्रमाणि सुनीधि वित्त वावी लाभ लीजइ; त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार पुण्यवंत हूईइ; उभयकाल सामायक कीजइ, बावीस अभक्ष बत्रीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चउदसि पूनिम अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ। इसु श्रावकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल। उत्तिमकुलि लाधइ पुंनइ गृहस्थरहइं जय हुइ। कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग।

किस्यां ते कुकलत्र। जे चालती कउपछि, साची अलछि; आत्मकुटुंबभंजकि, परचित्तरंजकि; कपटविषइ पटिष्ट, अतिहिं अनिष्ट; बोलति छउट उतारइ, रीसइं छोरू मारइ; जीभइं जव छोलइ, अलषिइं असंबद्ध बोलइं, वगाई करती

गोदडु गिलइ, घरि चिखोड करी माहिरि मिलइ, गोलानी निगइं हाथ ऊलगइ; फ़ूहनी मापिणी, गालनी पीत्रिणी; पुण्यकारनणी आगल, नगरनणी मागल। घणूं किसिउं फर्मायइ। जिसी मिरिनणी ऊगटि, जिमिउं चाल्लनउं पलेवगउं; जिसी दावज्वरतणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पापकर्मि भारी। अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोनइ हुइ पुण्यपवित्र। किसी ते। सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती वोलवर्णी सुजाणि मधुरवाणि देवगुरुतणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त; सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोनइ पुण्य। अनइ जं शरीरि संपजइ लीलावंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण। जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ; सहजि विचक्षण, शरीरि बत्रीसलक्षण; अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्रसमान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आदर्शतलसमान कपोलयुगल; मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल; प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोनइ प्रचुरपुण्यपिंड। अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइं, मंत्रविद्या सघरपणइं साधइं; राजसभा बुद्धिवंत भणी वइसइं, रणक्षेत्रि पहिलां पइसइ; व्यापारकला केलवइं, धूर्त्तपणइं भलारइइं भोलवइं; जलमार्ग स्थलमार्ग आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भूजाबलि भमइं; जोगीपूठिइं लोभि लुबधा लागइं, एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा दैव भणी वइरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेडइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं; रसकारणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चडइं; एकि त्रिविसइं साठि क्रियाण वहुरइं, पिरायां कवित्व वहरइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतइं हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीनणा विलास सकल।

हिव जं संपजइ सत्पुत्र, एह पुण्यतणउं चरित्र। एकइं तणइ एकि कुपुत्र हुइं जे वालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइं यौवनभरि जाइं, तेतलइं मावीत्रसाम्हा थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडांतणां वचन निहणइं; मावीत्रसाम्हां नीठुर वोल भणइं, अहंकारि हणहणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइं, कुस्थानकि विलसइं, पिराई भूमि ग्रसइं; चाडूए वचनि उल्लसइं, रूडी वात कहतां साम्हां धसइं; स्वाननी परि भसइं, अपरहुइं हसइं; पापकरी ऊससइं, धर्मवार्ता हियइ न वसइं; इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणूं

। अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत, गरु-
ते भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विषइ तत्पर, सुपुत्र पामीयइ जइ
इ पुण्यतणउ भर।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम। एक
त्र सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति; मुहि मीठउ, चित्ति
पठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोईं; उपगारि केतलइं न लीजइं,
प्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किसिइं लेखइ;
सज्जन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ चानइ, देवगुरु अपमानइं; मूर्त्ति-
वंत अधर्म, बोलइ पिराया मर्म। जिसिउं विषवृक्षनउं घन, इसिउ जाणिवउं
दुर्जन। एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइं,
परमर्म हीयडइं धरइं; परदोष न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं; उन्मार्गि न
चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश हालइं, धर्मनउ न हालइं; नवे क्षेत्रे वेवइं धन,
जिसिउ बावनुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन। संपजइ
सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण। इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊवेषी;
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विषइ भावनासहित लाभ लेवउ।
जेह कारणि इसिउं कहीइ। जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय
शोभइं हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशपाश-
म्भारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि;
सरोवरि शोभइ कमलि, पुष्प शोभइ परिमलि; मुख शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि,
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ तूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी
शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ भावना।
एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेवउ। जिणिइं पुण्यप्रभावि स्वर-
लक्षेपकल्याण संपजइं।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रली, परमेश्वरप्रतिइं विहुं नरेश्वरि
वीनती कीधी घली। हे जगनाथ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; तुम्ह टाली
अपरि संदेह न भाजइं, संदेहभंजन बिरुद मूंरकइं छाजइं। जेरि कारणि
इसिउं कहीइं। समुद्रि उलंघीयइ भारंडि न मगरइ, गजेंद्र विदारीयइ सींहि न
ससइं; विषधरतणां विष जीरवियइं गुरुडि न कूकडइं, वृक्षमित्रतणां फल
लीजइं तडवडइं न ढूंकडइं; संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउत्ति न दयामणइं, मंदा-
रीतणा भार हालियइ अभीष्टि न अल्पामणइं; पर्वततणां टोल मालीयइं

नदीनणइ पूरि न वाहलइं, रागनणइ मनि रंगि रहावीयइं मधुराति न वाहलइं; समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते न फाकरइं; हडगलनणी पोलि भांजियइ गजेंद्रि न गाफरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुखि; सकलसंदेह भांजीइ केवलीए न छद्मस्थि। तेह कारणि तउं हूं स्वामिन् अम्हारा संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरनणि पालि; एक ऊपनउ अटवीटालि, एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए मने संदेह आहरि। इसी वीननी सांभली जगनाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ। हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिइ हुउं अनुभव। ईणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर; प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविपइ सस्पृह; जीणि नगरि महावर मंडलीक मेल-हत्थ वरवीर राउत टवइत भाथाइन ऊढणाइन फलहकार छुरीकार नलीकार कुंभकार सींगटीया सावलीया जेठी यंत्रवाह भंडारी कोठारीप्रभृति राज-लोक वसइं, सर्वज्ञभवन देवी मन उल्हसइ। जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर, महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर। तेहनणइ सागर अनइ पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, बि पुत्र। ते वेउ नर्मदानदीनाहि वेडी चडी मत्स्य विणासि वाप्रवर्त्तिया। निसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीहम तिइं वोलिउ। रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां हुसिइ संताप, नहीं छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ नउ पूछउ आपणउ वाप। ए वात सांभली वेउ कुमर भयभ्रांत हूआ। निसिइ नदीनइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर। तेहे वेडीनउ ऊतरी नमस्करिउ। वच्छउ तुम्हे म्हारा पौत्र, हूं पालउं चारित्र; तुम्हे करउ अक्षत्र। तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं त्रूटइं कान, तीणइं उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं जीणइं पामीइ पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं वाधइ मिथ्यात्ववाद, तीणइं वयरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइ ऊपजइ विषवाद, तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं कीजइं जेहमाहि फूकइ साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु संताप, तीणइं रामतिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप। वत्स मुझ भक्त व्यंतरि, मत्स्यमुखि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लगाडिया। हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ। तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कही, तेहे विहुं ग्रही। आव्या आपणइ घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि; दिइं दान, धरइं अरिहंततणउं ध्यान; करइ सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद,

पदाथइं मनूकारि स्याद्; पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; धरइं सामायक भार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, बे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार। अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजा नीत विहुंइं राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञीसहित चारित्र लीधउं। निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि धलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि थईनइ तेह जि अणसरिउ। हिव पूरणनणइ पद्मश्री इसिइ नामि हुई कलत्र, जे महासचरित्र। ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, भोग्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि। सगरतणउ जीव हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हुउ पृथ्वीचंद्र। पद्मश्री इहां रत्नमंजरी अवतरी। पूर्वनणउं धर्म फलिउ, सर्वसंयोग मिलिउ।

विहुं नरेश्वरि इणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं। हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह। जिसिइ समइ रत्नमंजरी सरोवरतणी पालिइं पितानणइ उत्संगि बइठी, कुणरहइं देवातणी चिंता पइठी; तिसिइ अवसरि, धर्लीद्रदानवेश्वरि; ज्ञानिप्रमाणि, पूर्व जाणी, पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त रापिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी। छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी। राजा पृथ्वीचंद्रहुइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासांनिध्य कीधउं। अनइ स्वयंवरि जेतलइ धूमकेतु राजा वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाती, तेतलइं धर्लीद्रनणी इंद्राणी ते मेलिहउ निपाती। छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति प्रकट करी दापी; उहे दिपाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह। अहो पृथ्वीचंद्र ताहरं विशेषवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य। जेह कारणि गृहस्थवेपि हायिइं चढतां इणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान। सोमदेवहुइं त्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति। ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; बे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम नीपजाव्या।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणइ पुहिठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या। सकल लोक हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण छूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; धसमसाटि जोइवा धाइउ राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ। रत्नमंजरी पट्टराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगव्यापी स्थापी। राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महोधर इसिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ । ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर विवेकबंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुष-सिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्रहइं राज्य करतां नवलाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइं अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहठाणपुरि पाटणि-ऊपरि चडी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वी-चंद्रहइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी । राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ । रे आत्मन् हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं । कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह—हुइं पर्वततनउं उपमान; जीनी जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया; जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आव्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेप दीधउ, राजऋषि लीधउ; हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यनणउ निवेश । एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोक-हुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं । पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मननणी रली, वली; वली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेय-कल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं ।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा ।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावण शुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

यावन्मेरुर्मही यावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।
वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात् ॥

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे पञ्चम उल्लासः ।

खरतरपट्टावलीपट्पदानि

जिण दिट्ठइ आनंदु चडइ अइरहसु चउग्गुणु ।
जिण दिट्ठइ फट्टइ पाउ मणु निम्मलु हुइ पुणु ।
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दालिद्दु पणासइ ।
जिण दिट्ठइ सुह परमपद अनुलहु काइं उइक्खवहहु ।
पहु नवफणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि किं न पिक्खहहु ॥ १ ॥
मयण म मारि धरि धणुहु बाण पुणि पंचम पयडहि ।
खिल्लिव पिम्मपयावि थंभइहरिहरु मन विणडहि ।
मउ विम्मु ता बाग मयण नापरिसहि धगाहरु ।
नवफणमंडिउसीस जाव न हु पिक्खिवउ जिणवरु ।
जइ पडिहविपासजिणिंदवसि नाणवंत णिम्मलरयण ।
मनु धणुहरु बाण न रूप नहि न मुयपिम्मु हुइ हयमयण ॥ २ ॥
नवफणिपासजिणिंदु गढिउ अग्रहि जु दिट्ठउ ।
अजयमेरि संभरिनरिंदु ता नियमनि तुट्ठउ ।
कंचणनउ अह कलसु सिहरि सोणउ रज्जविपउ ।
जणु सुनरणि मउ मचइ तिव्वु आयासिसउष्ठउ ।
जा युज्जुमिमिण दधारविण कर उज्झिवि फरहरइ धर ।
जिणदत्तसूरि धर धवलि जमि ना पसिद्धि सुरभवणि कय ॥ ३ ॥
हंचसूरिपहु नेमिचंदु बहुगुणिहि पसिद्धउ ।
उज्जोयणु नह वद्धमाणु खरतरयर लद्धउ ।
सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।
जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि नहि जिण उज्जोइउ जिणवलणु ।
सावइहि परिक्खिवि परिवरिउ सुद्धि सहगघउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
धणुहर धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।
मोहगिण गुरगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
निगट अ नेअ अग्गलिय विम्मपडिकारनिरूविय ।
रहरणरहसुथल्लिय गरुयमाणिण मइ अप्पिय ।
फरि कडयड मुणिमहिवइहि रहिअ रुअ संपुण्णभय ।
जिणदत्तसूरिसींहह भयण मयणकरडियड विहडि गय ॥ ५ ॥
जिणदत्तसूरिसींहह धम्मधोरिमसुविसालइ ।
…लक्खणीसणाह …

संजमसिरभासुरह दुसहवयदाढकरालह ।
नाणनयणदारुणह नियमनिसनहरसमिद्धह ।
कम्मकोवणिट्ठुरह विमलपुच्छपसिद्धह ।
उपसमणउपरधरदुव्विसह गुणगुंजारवजीहह ।
जिणदत्तसूरि अणुसरह पय पापकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥
जरजलवहलरउद्द लोहलहरिहिं गज्जंतउ ।
मोहमच्छउच्छल्लिउ कोवकल्लोल वहंतउ ।
मयमयरिहि परिवरिउ वंचवहुवेलदुसंचरु ।
गंथगरुयगंभीरु असुहआवत्तभयंकरु ।
संसारसमुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि सुदरियइ ।
जिणदत्तसूरिउवएसु सुणि त परतरंडइ सुतरियइ ॥ ७ ॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरहरिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियहि मूढ नियवित्तिविरुद्धिय ।
दरहि न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्पर जुज्झहि ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पटंतरु बुज्झहि ।
जिणदत्तसूरि जिन नमहि पयपउम सच्चु नियमणि वहहि ।
संसारउयहि दुत्तरि पडिय जि न हु तरंडइ चडि तरहि ॥ ८ ॥
तवसंजमसपनियमि धम्मकम्मिण वावरियउ ।
लोहकोहमयमोह तह व सप्पिहि परिहरियउ ।
विसमछंदलक्खणिण सत्थअत्थत्थविसालह ।
जिणवल्लहगुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ।
अत्तिहिवि गुणिहि संपुन्नतणु दीणदुहियउद्धरणु धर ।
जिणदत्तसूरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥
वक्खाणियइ परमत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आराहियइ त धीरनाह कइपल्हु पयासइ ।
धम्मु त दयसंजुत्त जेण वरगइ पाविज्जइ ।
धाउ त अणग्घंडियउ जु वंदिण सलहिज्जइ ।
जइ टाइ न उत्तिमसुणियरह पवरयसहिहिं चउर नर ।
निम सुगुरुसिरोमणि सूरियर खरतरसिरिजिणदत्त वर ॥ १० ॥

इति श्रीव्हावर्चरीस्तुपदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्वयुगसितपक्षे ११ तिथौ श्रीगवागनगर्यां
श्रीखरतरगच्छे विधिमार्गप्रकाशितपति श्रीजिनदत्तसूरीणां
शिष्येण जिनरक्षितसाधुना लिखितानि ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

अयं क्षुब्धक्षीरार्णवनवसुधासन्निभचिता-
नुपाकर्ण्याकर्णानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।
समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो
ऽकरोत्सुस्थं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥

श्लाघ्योऽतिसङ्घसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्तः ।
सम्भावनाद्भुतसुधाभववाक्चचार वाचालवारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥

सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रद्धूलीपटैर्झटिति कुट्टिमतामटद्भिः ।
मार्गे निरुद्धरवरदीधितिधाममङ्गे सङ्घस्तदा भवनगर्भ इवाबभासे ॥ ३ ॥

नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-
क्राशः कासहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थे निवासानसौ ।
चक्रे चारुमना जिनार्चनविधिं तद्वृन्दपर्यन्तता-
रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्मयः ॥ ४ ॥

पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हृततमःकदम्बया ।
एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समभिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥

ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुरःसंस्थितैर्मर्त्यगुच्छैः
यत्नसमावेशितविधिविनमा व्योम्नि पद्मपत्रमाकाः ।
मूर्ताः कीर्त्तीरयममनुत प्रोद्यदुत्थापपत्र-
व्यापद्दोलाङ्कितभुजलतावर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥

अध्यावास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीमल्लसंस्तम्भ-
स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमद्देवानुजः ।
श्रीनाभेयजिनेन्द्रदर्शनसमुत्कण्ठोद्गमन्मानस-
स्मरन्मोहमथारुरोह विमलक्षोणीधरं धीरधीः ॥ ७ ॥

तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्तण्डचण्डद्युति-
क्रान्तं सङ्घजनं निरीक्ष्य निखिलं सार्द्रीभवन्मानसः ।
सद्यो मण्डपमन्दमेदुरतरच्छायानिधिः शुद्धधीः
मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौली किल जिनपतेर्भिन्ननारिष्टपात्रं
स्नानं कृत्वा कलशकुटिभिः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।
भक्ते घनघनमृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-
वर्णैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥
मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-
क्षोदप्रेङ्खितधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।
यावद्भक्तमहाध्वजभ्रमणिनी स्वर्लोककल्लोलिनी
मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥
इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां
सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिक्यमष्टाह्निकाम् ।
विघ्नोन्मर्दिकपर्दियक्षविहितप्रत्यक्षसान्निध्यतः
श्रद्धावर्द्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥
अजाहराख्ये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।
अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमम्बाम् ॥ १२ ॥
देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।
अर्चयन्नुचितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलद्युतिम् ॥ १३ ॥
प्रीतस्फीतरुचिश्चिराय नयनैर्वामभ्रुवां वामन-
स्थल्यामेष मनोविनोदजननं कृत्सप्रवेशं पुरि ।
धीमान्निर्मलधर्मनिर्मितिमिमुल्लासेन विस्मापयन्
दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्घेन सङ्घेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषकम्)
गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।
चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥
जिनमज्जनसज्जसज्जनं कलशन्यस्ततदम्बुकुङ्कुमम् ।
अथ सङ्घमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपायमम् ॥ १६ ॥
संरम्भसङ्घटितसङ्घजनौघदृष्टामष्टाह्निकामयमिहापि कृती वितेने ।
सद्भूतभावभरभासुरचित्तवृत्तिरुद्वृत्तकीर्त्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥
लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीशपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।
सम्यक्त्वरोपणकृते वितताननन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥
दानैरानन्द्य वन्दिव्रजमसृजदनिर्वारमाहारदानं
मानी सम्मान्य साधूनुपदपि मुखोद्घाटकर्मादिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानर्चयित्वाथ सुचै-
रम्बाप्रद्युम्नशाम्बानिति कृतसुकृतः पर्वतादुत्ततार ॥ १९ ॥
असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।
अवाधि सा धिक्करणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥२०॥
पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन सांनिध्यकृता कृतीन्दुः ।
स्वकीर्तिवच्चन्दनदीर्ददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥२१॥
इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्तिप्रियः प्रयाणैरतिवाह्य वीथीम् ।
आनन्दनिस्यन्दविधिर्विधिज्ञः पुरं प्रपेदे धवलक्ककं सः ॥ २२ ॥
समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरधवल-
प्रभुः प्रत्युत्थानस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।
पुनः सद्गेनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-
स्ततः सद्धस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥
अथ प्रसादाद्भर्तुः प्राप्य धैर्यभवमद्भुतम् ।
मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥
भक्त्याखण्डलमण्डपं नवनवश्रीकेलिपर्यङ्किका-
पर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुञ्जये ।
यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाम्बिकालोकन-
प्रद्युम्नप्रभृतीनि किंच शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥
गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्तिकदम्बकम् ।
तुरङ्गसङ्गतं मूर्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥
शातकुम्भमयान् कुम्भानत्र तत्र न्यवेशयत् ।
पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥
सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।
श्रीकीर्तिकन्दयोरुच्छूनताङ्कुरयोदरम् ॥ २८ ॥
कुन्देन्दुसुन्दरग्रावपावनं तोरणद्वयम् ।
इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशायेव निर्ममे ॥ २९ ॥
अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।
श्रीवीरधवलक्ष्मापादापयामास शासने ॥ ३० ॥
श्रीपालिताख्ये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितार्कतापम् ।
तडागमागःक्षयहेतुरेतयकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केषां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-
स्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्थसन्तापपापः ।
साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितसुखं लोलरोलम्बशब्दै-
रब्दैव्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥
पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।
स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥
प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।
ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥
किञ्चैतन्मन्दिरद्वारि तोरणं तत्र पोरणम् ।
शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥
लोकैः पाञ्चालिकानृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।
इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥
प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसूनुप्रभो-
स्तस्याग्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।
श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नीलाम्बरालम्बिता-
मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥
अत्र यात्रिकलोकानां विशतां व्रजतामपि ।
सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥
यत्पूर्वैर्न निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-
र्द्वैतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।
आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा
श्रीनाभेयविभुप्रसादवशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥
तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।
श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥
समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा
यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।
क्षणेन क्षीणायामितरजनदानोदकततौ
दयावेलाहेलाद्विगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥
यश्चापथस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्धारात् ।
येनापनीय नवकरमनवकरः कारपाञ्चके ॥ ४२ ॥

पुण्योद्दामविलाससल्लकमिव येनात्र शत्रुंजये
श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमाश्रितम् ।
एतस्यानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासंचय-
ध्यानक्रोडमनल्पमुकुरपयःकल्लोलकुलक्रमम् ॥ ४२ ॥
स्फुरत्स्फटिकदर्पणप्रतिममानमिदं गाहते
सुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।
दिवाकरकरोत्कटप्रसरलक्ष्यतो लक्ष्यते
यदत्र सरिदालावदनविम्बनाडम्बरः ॥ ४४ ॥
शत्रुंजये यः सरसीं निवेश्य श्रीरैवताद्रौ च जडाधराणाम् ।
ग्रामस्य दानेन करं निवार्य सङ्घस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥
क्षोणीपीठमिवप्रजःकणमियत्पानीयविन्दुः पतिः
सिन्धूनामिवयद्बहुलं वियदिवत्ताला न कालस्थितिः ।
इत्थं तथ्यमवैमि यत्त्रिभुवने श्रीवस्तुपालस्य तां
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥
एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।
महाधीश्वरचरितं हृतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥
श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
र्जज्ञे क्षान्तिसुधानिधानकलशः पुण्याब्धिचन्द्रोदयः ।
सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः
सिद्धान्तोऽप्यविभेदतर्कविषमं यं दुर्गमाशिश्रिये ॥ ४८ ॥
तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्राप्तोदयः कोऽप्यभू-
द्व्याख्यानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रभुः ।
प्रत्युज्जीवितदर्शनद्युतिलसद्भव्यौघपद्माकरं
तेजश्छन्नदिगम्बरं विजयते तद्यस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥
आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्यः
पूर्वापरः शमधनोऽमरचन्द्रसूरिः ।
धर्मद्विपस्य दशनाविव पापवृक्ष-
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदौ विभातः ॥ ५० ॥
अस्तावबाह्यपयोनिधिमन्दराद्रि-
मुद्रापुषोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद
यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥
सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मभूस्तत्पदे
पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।
भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिरायस्मिन्नवस्थानतः
सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥
श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पट्टे जयति जलधरध्वानः ।
यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवथुविभवभिदः ॥ ५३ ॥
पद्मासराह्वनराजविहारतीर्थे
प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।
साक्षादधःकृतभवा तटिनीव यस्य
व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥
भवोद्भटवनावनीविकटकर्मवंशावलि-
च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।
असिश्रियमशिश्रियद्दितनभीव्रतं यद्व्रतं
क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥
शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणनिधिं रम्यदारण्यदाव-
ज्वालाजिह्वालदीप्तिर्भयिकजनविपद्विद्विपादः कपर्दी ।
देवो याम्या निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षी-
मेघश्रेयःसुभिक्षाविनि निजगदत्तुङ्गहृदोद्दामनादम् ॥ ५६ ॥
नाभूवन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के
किं न क्वापि कदापि सत्पुरुषाः श्रीवस्तुपालोपमः ।
यस्यैन्यं प्रहरत्यहर्निशमहो सर्वाभिसारोद्धुरो
येनायं विजितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥
तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-
च्छायास्मारकमीशया किल यथाप्यङ्गीकृतं सर्वथा ।
त्वं श्रीमत्सुदयप्रभ प्रथय तत् पीयूषमयैर्वचैः
श्रोत्रैर्निर्भर मारमा ममभव ……यते ॥ ५८ ॥
इत्युक्त्वा गतयोस्तयोरथ दृशौ हृष्टे प्रभातक्षणे
विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रोत्तमाङ्गेन ना ।

स्फारोदारम्यं प्रमोदविस्तरमामारैः समारोहुका
प्रागल्भ्यं प्रथमप्रयोग चरिते निरन्तरन्ती गिराम ॥ ५९ ॥
विश्व श्रीमल्लपालितस्य ज्ञानविहिमांशुरूपनयुते-
स्वच्छश्रीमन्मन्त्रीश्वरगुणैरंमीभिरमयमानायते ।
चन्द्रार्कविमलपदपाणविकसितकुन्दसंवासिता
सन्त: सन्तसमाधिना: किल मया भूरिव भान्ति दिशो ॥ ६० ॥
श्रीधर्माभ्युदयाख्यमत्र चरिते श्रीसङ्घभर्तुर्मया
दृब्धं काव्यमलानि सहृदयैर्नु कर्मान्तिकर्त्वं परम् ।
किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य सर्वं जग-
त्पाविषयारमपादपङ्कजरजःपुञ्जैः प्रतिष्ठापदम् ॥ ६१ ॥
नित्यं व्योमनि सोमतारकनाथो यावस्त्रिपार्थीश्वरो
दिक्पालादधिवसन्नुरो गुणवले यावच्च हैमाचल: ।
तावच्चं विदुषामिदं सुचरितं नायकपाधिर्भव-
त्सारस्वयमरं चिरं कलयतात् विज्ञानकलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमदुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्माभ्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपतिच-
रिते लक्ष्म्यङ्के महाकाव्ये श्रीशत्रुञ्जयतीर्थयात्रासमवर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

गुणमणौ यदेतद्विरचितमुचितं सङ्घभर्तुश्चरित्रं
तत्रं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।
अस्मिन्संरम्भगर्भामरसरसपरां सत्कथां पान्थसार्थाः
प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥
श्रीशारदाप्रतिपन्नतनयः सदयाशयः के नो सन्ति हन्त सकलासु कलासु निपुणाः ।
नाटकपरस्य ददतो सुकवित्वमस्वमोघाय युक्तिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥
नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकचर्यं
तेभ्यः सर्वाङ्गसिद्धं फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।
आकल्पस्थायि धर्माभ्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं
विश्वस्यानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीसकप्पंमि।
सिरिवइरसीसभणिअं जहा य पालित्तएणं च ॥ १ ॥

छत्तासिलाइसमीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो नेमी, सहसंबवणे केवलनाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उच्चसिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए कण्हो तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसामिणो अंबादेविं च कारेइ। इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणयं रुप्पमयं चेइअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अवलोअणसिहरं बलाणयमंडवे संबो पज्जुन्नो कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहाररूवो श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं [illegible] विअं। तहा सत्त जायवा दामोयराणुरूवा कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कवाड ४ सिंहनाद ५ खोडिअ ६ रेवया ७ तिव्वतवेणं [illegible] खित्तवाला उववन्ना। तत्थ य मेहनादो सम्मद्दिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो [illegible] गिरिविदारणेणं कंचणबलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ। तत्थेगं [illegible] उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा। तत्थ य उववासतिगेणं [illegible] सिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा। तत्थ य कमपण्णासं बलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण, उत्तरदिसाए [illegible] बारसनिगं। [illegible] कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं [illegible] उस्सग्गसंथगं समसरूवं दारुणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसयाओ [illegible] ऊसविऊण, बलाणयमंडवे इंदादेसेण धणयजक्खकारियं अंबादेविं [illegible]। तत्थट्ठिएणं [illegible] नेमिजिणिंदो [illegible] सगंधव्वयाए अहो [illegible] [illegible]। तत्थ [illegible] [illegible]। [illegible] अंबाएवीए न अत्तहा। [illegible]। तत्थ य [illegible] पियरं। तत्थ [illegible] [illegible]। तत्थ य [illegible]

अंबाएसेण पूयणेण बलिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णकूडे उववास-निगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य चिंतिअसिद्धी दिनमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पचक्खो हवइ तहा रायमईगुहाए कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तयवल्ली राइमईए पडिमा रयणमया अंबाया रूप्पमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तसिलाघंटसिलाकोडिसिलातिगं पण्णत्तं । छत्तसिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संबवणमज्झे रयणसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे बावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा पण्णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदिसाए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए पहवणं काऊण, बिए उववासपओगेहिं दुवारमुग्घाडेइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी, संघहेउं अंबाए विउव्विआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीवे । अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी ।
सिरिवइरोवक्कायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥
सस्सकुडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोटिविंदुसंयोगे ।
घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
विज्ञापाहुडुद्देसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीमकप्पंमि।
सिरियइरसीसभणिअं जहा य पालित्ताएणं च ॥ १ ॥

छत्तासिलाइसमीवे सिलासणे दिरक पडियन्नो नेमी, सहसंबवणे केवलनाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उच्चसिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए कण्हो तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतमाभिणो अंबादेविं च कारेइ। इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणयं रूप्पमयं चेईअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अवलोअणसिहरं बलाणयमंडवे संबो पयाई कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहारो; तप्पडिरूवं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण ठाविअं। तहा सत्त जायवा दामोयराणुरूवा कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिव्वनवेणं कोडणेणं खित्तवाला उववन्ना। तत्थ य मेहनादो समदिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो चिट्ठइ। गिरिविदारणेणं कंचणबलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ। तत्थेगं अंबापुरओ उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा। तत्थ य उववासतिगेणं बलिविहाणेणं सिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा। तत्थ य कमपण्णासं गए बलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण, उत्तरदिसाए पण्णासकमं बारीतिगं। पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं पविसिऊण, उपवासपंचगं भमररूवं दारूणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ अहोमुहं पविसिऊण, बलाणयमंडवे इंदादेसेण धणयजक्खकारियं अंबादेविं पूइऊण, सुवण्णजालीए ठायव्वं। तत्थट्ठिएणं सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो वंदिअव्वो। बीअवारीए एगं पायं पूइत्ता, सयंवरवावीए अहो कमचालीसं गमित्ता, तत्थ य मज्झवारीए कमसत्तसएहिं कूवो। तत्थ वरहंसट्ठिअत्तेण इहावि मूलनायगो वंदेयव्वो। तइअवारीए मूलदुवारपवेसो अंबाएसेण न अन्नहा। एवं कंचणबलाणयमग्गो। तत्थ य अंबापुरओ हत्थवीसाए विवरं। तत्थ य अंबाएसेण उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गयपंचगं अहो रसकूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घडइ। तत्थ य उववासतिगं काऊण

अंबाएसेण पूयणेण बलिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णकूडे उववास-
तिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य
चिंतिअसिद्धी दिनमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पच्चक्खो हवइ तहा रायमईगुहाए
कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तायवल्ली राइमईए पडिमा
रयणमया अंबाया रूप्पमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तासिलायं-
टमिल्लाकोटिसिलातिगं पण्णत्तं । छत्तासिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संब-
वणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे बावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा प-
ण्णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सट्ठकमसयनिगेण उत्तरदि-
साए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए ण्हवणं काऊण, विए उववासपओएहिं
दारमुग्घाडइ । मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी,
तइअदुवारे कप्पभंडारो । अण्णो दामोदरसमीवे
घेट्ठेउं अंबाए विउव्विआ । तत्थ पण कणयभंडारो । अण्णो दामोदरसमीवे
अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता ।
तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालोय संतु रससिद्धी ।

सिरियहरोवकायं संघसमुद्धरणयकज्जंमि ॥
ससकहाइं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिंदुसंयोगे ।
घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।
विज्जापाहुड्डदेसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो ॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।
श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां बिभर्त्ति भुवनेष्वसौ ।
यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति खङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूषितैनदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।
पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् ।
चारु चैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्रीशिवासूनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
बन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह ।
श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा सिद्धबुद्धसुतान्विता ।
कम्राम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सङ्घविघ्नहृत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्पद्मपूतमवलोकननामकम् ।
विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।
प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यद्दिव्यैतिह्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते ।
रथनेमिर्ययोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।
सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमावपि योऽत्राद्रौ काप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् ।
सोऽपि पश्यति चैत्यस्था जिनार्चाः स्नपिनार्चिताः ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन कूष्माण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि ।
विदाङ्करोत्वत्र मह्यां सङ्ख्यायानपि कः खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकरूपाय महातीर्थाय तायिने ।
चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णिनापूजिनप्रभः ।
गिरिनारस्मारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्तस्तवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरट्ठाविसए उज्जिंतो नाम पव्वओ रम्मो ।
तस्सिहरे आरुहिउं भत्तीए नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं पहयपयगोणपुरदूरिएहिं ।
पुत्तफलपणगामा सा जोअइ जेण अणवज्जा ॥ २ ॥
गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणलयाइविअदुमेहिं ।
जोएह सयाणं जह भणिअं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
कंदप्पदप्पकप्परणकुसलविउरगणनेमिनाहस्स ।
निव्वाणसिला नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
दारंमि तस्स लिंगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तस्स पसुमुत्तगंधो अत्थि रसोपलमएण सयनंयं ।
विंधेहि कुणइ तारं ससिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु नस्सेव अत्थि जागवई ।
पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो ।
विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
उज्जिंते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।
दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
सक्कावयार उज्जिंतगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।
सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
पंचगव्वेण बद्धा पिंडीधमिआ करेइ वरतारं ।
फेडइ दरिद्दवाहिं उत्तारइ दुक्कंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे विसालसिंगे दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ ।
तस्सासन्ने सिहरे कव्वडहडपासहो तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतरेवयवणे तत्थ य सुद्दारवानरो अत्थि ।
सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
हत्थसएण पविट्ठो दिक्खइ सोवण्णवण्णिआ रुक्का ।

नीलरसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो हणुवंतं छिवइ वामपाएण ।
सो दक्खइ घरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
उज्जितसिहरउवरिं कोहंडिहरं खु नाम विक्खायं ।
अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
तं अयसितिक्कुसमं थंभइ पडियायवंगिअं यंगं ।
दोगचवाहिहरणं परितुट्ठा अंबिआ जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
तो पिंडि धमिअ संते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥
उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी ।
बोकडयमुत्तपिंडी मइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्धा य पंचगव्वेण ।
हडपाए घसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरियरमासग्गठिअं आणीयं तिलविसारणं नाम ।
सिलवट्टगाढपीडे वे लक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लहुअपहाणा ।
पडियाएण य सुद्धं करिंति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
विल्लकयंमि नयरे मउहहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
तस्स य मज्झंमि ठिओ गणवइरसकुंडओ उवरिं ॥ २३ ॥
उववासी कयपूओ गणवइओ गहिऊण पयररसो ।
पामापेवी अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजगरेण मणहरं सम्मं ।
तत्थ य हुरयायारा पाहाणा तेसि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंधमूसाए ।
धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुरहकम्मारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
सुअपरकसरिसवण्णो करेइ सुद्धं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुसयारे अंबिअआसमपयं च नामेण ।
तत्थ वि पीआ पुढवी हिमपाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
नाणसिला उज्जिंते तस्स य मूलंमि मट्टिआ लोआ ।

साहामिअलेवेणं छायामुक्तं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जितपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
तिण्णि धणूसयमित्ते पूईकरं जं बिलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं बिलं दिरिकिऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
दंडंतराणि बारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
जउ घोलिअंमि भंडे महस्सभागेण विंधए नारं ।
· हेमं करइ अवस्सं हट्ठं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
कोहंडिभवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया वासुदेवस्स ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पव्वइ पडिमा ।
अवराहमुहरअंगुट्ठिआइ सा दावए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइं पविट्ठो दिस्कइ कूडाइं दाहिणुत्तरओ ।
हरिआलसरिसवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिते नाणसिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलुयवण्णो ।
अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुत्थं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उसहरिसहाइकुडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
गयवरलिंडाकिण्णा मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउई धणुहेहिं भूमिजलुअयरी ।
तिरिमणुअरत्तविद्धा पडिवाए तंवए हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
सुचस्स पंचवेहं सवंति धमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥
इय उज्जयंतकप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो ।
कोहंडिकयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

श्रीउज्जयंतमहातीर्थकल्पः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरट्ठाविसए रेवयपव्वयरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उत्तुंगसिहरं अच्छइ। तत्थ किर पुव्विं भयवओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि। अन्नया उत्तरदिसाविभूसणकस्मीरदेसाओ अजियरयणनामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया। तेहिं गरुयभत्तीओ घणघुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं। गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाहपडिमा। तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ। इगवीसउववासाणंतरं समागया भगवई अंबिआ देवी। उट्ठाविओ संघवई। तेण देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ। तओ भणिओ देवीए इमं बिंबं गिण्हसु परं पच्छा न पिच्छिअव्वं। तओ अजिअसंघाहिवइणा एगतंतुकड्ढिअं [illegible] सिरिनेमिबिंबं कंचणबलाणए नीअं। पढमभवणस्स देहलीए आरोविआ अइहरिसभरनिब्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो। ठिअं तत्थेव बिंबं निच्चलं। देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसद्दो अ कओ। एअं च बिंबं वइसाहपुण्णिमाए अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहं ठविअं संघवइणा। ण्हवणाइमहूसवं काउं अजिओ ससंघो निअदेसं पत्तो। कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणिऊण छायाछलिअमणिमयबिंबस्स वेला अंबिआदेवीए ठाइआ। पुव्विं च गुज्जरधराए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहिवो ठाविओ। तेण य अहिणवं नेमिजिणिंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे काराविअं। मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवण्णं आमलसारं कारिअं। चालुक्कचक्कवट्टिसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरट्ठदंडाहिवेण सिरिसिरिमालकुलुब्भवेण बारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ। [illegible] धवलेण अंतराले पवा भराविआ। पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए लक्खारामो दीसइ। अणहिल्लवाडयपट्टणे पोरवाडकुलमंडण आसरायकुमरदेवितणया गुज्जरधराहिवइसिरिवीरधवलरज्जधुरंधरा वत्थुपालतेजपालनामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ तेजपालमंतिणा गिरिनारतले निअनामंकिअं तेजलपुरं नवगढमढपवामंदिरआरामाभिरामं निवेसिअं। तत्थ य तणयनामंकिओ आसरायविहारो त्ति पासनाहभवणं काराविअं। जणणीनामंकिअं च कुमरसरु त्ति सरोवरं निम्माविअं। तेजलपुरस्स पुव्वदिसाए उग्गसेणगढं

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्जइ। तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं। तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा ज्जुण्णदुग्गं ति वा। गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलडुअओवरिआपसुवाडयाइठाणाइं चिट्ठंति। उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो। गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ। कालमेहसमीवे चिराणुवत्ता संघस्स वोलाविआ। तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ। कमेण उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कवडिजक्खमरुदेविपासाया य काराविआ। तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं, इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ। एरावणगयपयमुद्दाअलंकिअं गइंदपयकुंडं अच्छइ। तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्खाण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ। छत्तसिलाकडणीए सहस्संबवणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपईवस्स सिवासमुद्दविजयनंदणस्स दिक्खानाणनिव्वाणकल्लाणयाइं संजाआइं। गिरिसिहरे चडित्ता अंबिआदेवीए भवणं दीसइ। तत्तो अवलोअणं सिहरं। तत्थट्ठिएहिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति। तओ पढमसिहरे संबकुमारो बीअसिहरे पज्जुण्णो। इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमयजिणबिंबाइं निचन्दविअचिआइं दीसंति। सुवण्णमेयणी अ अणेगधाउरसभेइणी दिप्पंती दीसइ। रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति। नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति। अणवरयपज्झरंतनिज्झरणाणं खलहलारावा य मत्तकोपलभमरझंकारा य सुणंति त्ति।

उज्जयंतमहातित्थकप्पलेसलवो इमो।
जिणप्पहमुणिंदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं॥

श्रीरैवतकल्प. समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

गिरिउज्जयंतसिहरंसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।
कोहंडिदेविकप्पं लिहामि वुड्ढोवएसाओ ॥

अत्थि सुरट्ठाविसये धणकणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नगरं । तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगमो बंभणो हुन्था । तस्स घरिणी अंबिणी नाम महव्वसीलालंकारभूसियसरीरा आसि । तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो बीओ बुद्धु त्ति । अन्नया समागए पिअरपक्खे भट्टसोमेणं निमंतिआ बंभणा सद्धदिणे । कत्थ वि ते वेयसुचारन्ति, कत्थ वि आढवन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिंति वइस्सदेवं च । सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कन्नखीरखण्डपमुहा जेमणा । अंबिणीए अ सासुआ ण्हाणं काउं पवट्टा । तम्मि अवसरे एगो साहू मासोववास-पारणए भिक्खट्ठा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं अन्नपाणविसेसेहिं भत्त-पाणेहिं । जाव गहिअभिक्खो साहू चलिओ ताव सासुआ वि ण्हाऊण रसवई-ट्ठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा बहुआ । तीए जहट्ठिए वुत्ते अंबाडिआ सा अज्जूए । जहा पावे किमेयं तए कयं, अज्ज वि देवया न पूइआ अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना । तउ तीए भणिओ सव्वो वि वइअरो सोमभट्टस्स । तेण संरुट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कालिआ गिहाओ । सा पडिभवदूमिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चडाविता चलिआ नयराओ बाहिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ । जाव सा अंसुजलपुण्णलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तिस्सा अणग्घेणं सीलमाहप्पेणं तक्खणं जलपूरिअं जायं । पाइआ दोवि सीअलं नीरं । तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं । पुरओ सुक्कसहयारतरू तक्खणं फलि-ओ । दिन्नाइं फलाइं । अंबिणीए तेसिं जाया ते सुत्था । जाव सा चूअच्छायाए वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह जं तीए बालयाइं पढमं जेमाविआ तेसिं भुत्तु-त्तरं पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि ताओ सीलमाहप्पाकंपिअमणाए सासणदेवयाए सोवन्नथालयरूवाओ कयाओ । जे अ उच्छिट्ठसित्थकणा भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाईआइं । अग्गसिहा य सिहरेसु

दंसिआ । एअमचब्भुअं सासुए दट्ठूण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा वच्छ सुलक्खणा पइव्वया य एसा वहू ता पच्चाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुयं वालेउं सोमभट्टो। तीए पिट्ठओ आगच्छन्तं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ मग्गकूवओ। तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ। सुहज्झवसाणेण पाणे चइऊण ऊप्पन्ना कोहंडविमाणे सोहम्मकप्पहिट्ठे चउहिं जोअणेहिं अंबीअदेवी नाम महड्ढिआ देवी। विमाणनामेणं कोहंडी वि भन्नइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठुं अप्पा तत्थेव झंपाविओ। सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो। आभिओगिअकम्मुणा सिहरूवं विउव्वित्ता तीए चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति अंबिणी रेवयसिहराओ अप्पाणं झंपावित्ता तप्पिट्ठओ सोमभट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव । सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबिं पासं च धारेइ वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्तत्तकणयसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे। सिरिनेमिनाहस्स सासणदेवय त्ति निवसइ रेवइगिरिसिहरे। मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्घसंघायं। तीए मंतमंडलाईणि आराहित्ताणं भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धिओ, न पहवंति भूअपिसायसाइणीविसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्तधणधन्नरज्जसिरिओ त्ति ।

अंबिआमंता इमे ।

धयधीअसकुलकुलजलहरिहयअकंलपेआइं ।
पणट्ठणियायायसिओ अंबिअदेवीइ अह मंतो ॥ १ ॥
धुयभुवणदेवि संबुद्धिपासअंकुसनिलोअपंचसरा ।
णहसिहिकूलकलअउभामिरमायापरपणामपयं ॥ २ ॥
वाग्भवं निलोअं पासरिणीहाउ सहअवस्सम ।
कूहंटअंबिआए नमु त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अन्ने वि अंबादेवीमंता अप्परपराए वि मया सुरमणा गुग्गा मग्गमेलाइगोअग य सहयो चिट्ठंति । ते अ महा मंडलाणि अ इत्थ न भणिआणि गंथवित्थरभएणं ति गुरुमुहाओ नायव्वाणि ।

एअं अंबियदेवीकप्पं अविअप्पचित्तविसीणं ।
वायंतसुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

इति श्रीअंबिकादेवीकल्पः ।

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनारकल्पः ।

वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
शिश्राय शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुच्चशिरसि चक्राणः ।
प्रथमावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
यत्र सहस्राम्रवणे केवलमाप्यादिशद्विभुर्धर्मम् ।
लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बतुल्यमाप यच्छिखरम्बरशः ।
श्रीयदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
युक्ता कल्याणत्रयमिह कृष्णो रूप्यकनकमणिबिम्बम् ।
चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
काञ्चनबलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
श्रीनेमेर्मूर्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
स्वकृतैतद्बिम्बयुगं हरिरिति बिम्बं गुरुः समवसरणे ।
न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
शिखरोपरि यत्राम्बाऽवलोकनशिखरमपि रङ्गमण्डपके ।
शाम्बो बलानकोऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकपुरः प्रतीहारः ।
चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
यत्र हरिश्चकेऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
तीर्थेनिस्मरणाद् यत्र पाद्याः स्मर कामकोपाद्याः ।
क्षेत्रपनामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चैति मेघरवो बलानकं गिरिविदारणश्रमे ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राम्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवासूनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनबलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिषिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्निहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयाप्यैत यः ।
श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पश्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझर्यादौ ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरघण्टाञ्जनबिन्दुशिवशिलादि यत्रहार्यस्ति ।
कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
याकुड्यमात्यसज्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।
नेमिभवनोद्धृतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
यन्मेखलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

शत्रुञ्जयसम्मेताष्टापदतीर्थानि वस्तुपालस्तु ।
यत्र न्यवेशयदसौ गिरि० ॥ २९ ॥
यः षड्विंशतिविंशतिषोडशदशकद्वियोजनाऽत्रशतम् ।
अरपट्टक उच्छ्रितोऽयं गिरि० ॥ ३० ॥
अद्यापि सावधाना विदधाना यत्र गीतनृत्यादि ।
देवाः श्रूयन्तेऽसौ गिरि० ॥ ३१ ॥
विद्याप्राभृतकोद्धृतपादलिप्तकृतोज्जयन्तकल्पादेः ।
इति वर्णितो मयाऽसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ ३२ ॥

इति श्रीधर्मघोषसूरिकृतः श्रीगिरिनारकल्पः ।

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanâtha at Cambay.

ॐ अर्हं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तभूतलश्रीअलावदीनसुरत्राण-
प्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभो-
नभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसू-
रिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसा-
हजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारित-
श्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहकेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितस-
कलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्रयमुद्रापहारिगुणरत्नाकर-
स्य गुरुगुरुनरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्जयंतमहातीर्थयात्रा-
समुपार्जितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापिनकोद्दडिकालंकारश्रीशांतिनाथवि-
धिचैत्यालयश्रीश्रावकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसृमरयशःसंभारेण भ्रातृ-
साहराजुदेवसाहवोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणधरपुत्ररत्नसाहजयसिं-
हसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्र-
भावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोद्दडिकास्थापनपूर्वं
श्रीश्रावकपोषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामि-
देवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्कं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीर्भूयात
श्रमणसंघस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samará's installation of the image of Ádisvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रीयसा० सल्लणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-आसाधरानुजेन सा० लूणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा० सहज-पालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसा० सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन निजकुलदेव्या (सचि) कामूर्त्तिः कारिता। यावद्व्योमनि चंद्रार्कौ यावन्मेरुर्म-हीतले। तावत् श्री (सच) का मूर्तिः····

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे····ज्ञातीयराणकश्रीमहीपाल-देवमूर्त्तिः····संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रे सा० सल्लणपुत्रसा० आजडतनयसा० गोसलभार्यासा० गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ-पतिसा० आसाधरानुजेन सा० लूणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०-सहजपालसा० साहणपालसा० सामंतसा० समरसीहसा० सांगणसा० सोमप्रभृ-तिकुटुंबसमुदायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआसाधरमूर्त्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं-घ० रत्नश्रीमूर्त्तिसमन्विता कारिता। आशाधरः कल्पतरुखहोयमाशान्विकं पूरित····। ···· संभृतबाहुयुगो युगादिदेवं प्रयतः प्रणौति॥ चिरं नंदतात्॥ ॥ शुभं भवतु॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाषसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा० समरस-मरश्रीयुग्मं सा० सालिगसा० सज्जनसिंहाभ्यां कारितं। प्रतिष्ठितं श्रीककसूरि-शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः। शुभं भवतु॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि वीनवउं देवि सामिणि वागेसरि
हंसगमणि आकाशभमणि तिहूयणि परमेसरि ।
वीरजिणिंदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंघिहिं
कवडजक्ष जक्षाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
कोडीयनयरनिवासिणी य वंदउं अंबिकदेवि ।
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
निसुणउं धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
जासं बोध निरवमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥
पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसंधीर ।
अकलीअ कलि जिम छेतरीअ गरूड गुहिर गंभीर ॥ ५ ॥
पोरूआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।
चांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुनसीह ॥ ६ ॥
जिम कंचण कसवट्टीयए पामिउ वहुगुणरेह ।
वंधवि पेथपरीपीयइ वहूअ कालि घरि एह ॥ ७ ॥
यइसीय पेथड पाटे वंधव बोलावइ
नरसीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
मणूयजन्म अतिदुलह अनइ श्रावयजम्म
जीव लहइ वहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
घणकणरयणभंडार ते सवि अछइ य असार ।
संचइ मोहनवंध ते सव्वि जाणे गमार ॥ ९ ॥
लाछितणउ जउ गरव करेई लीजइ राउल छल ह घरेई ।
मणूयजनम इयं सफल करीजइ जीवियपौवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
अथिरलाछि विम थिर ह करीजइ जिणह धंम तस ऊपम दीजइ ।
सेत्रुजि रिसहसामि वंदीजइ विविहप्रकारिइं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

मिलि थंभवि कीयउ वयण प्रमाण एकमिलि सवि समाण जाण ।
साते थंभवि कीयउ विचार सविहुं काजि लिउ नरसीअ भार ॥ १२ ॥
धम्मीय निसुणउ लोयमज्झि संघतणउ समाहउ भवीअणउ
आणूंअ दीजइ भत्तिजत्ति भवीया लहइ लाहउ घणऊणउ ।
पेलमि खेलीयइं रंगि रास हयं नवरस नवरंग नवीयपरे
सुणि सामहणी संघनणी जो करइं निरंतर घरेहिं घरे ॥ १३ ॥
जोइन देवालउं सामुहिउं तीहं माहि सुरेसर जिण ठवीय ।
देसदेसाउर नरनयर तिहिं लेवि कंकोत्री पाठवीय ॥ १४ ॥
पाटणि पइसीय सामति तहिं कर्णनरेसर भेटीय धीनवीउ ।
तीरथजात्र जायवउं देव तहिं देसवटउ सपसाउ कीउ ॥ १५ ॥
तहिं येगि लेउ पण आवीउ ए सयलसंघ तहिं हरसीय नीयमणि
नयर पसाइरउ कीधउ तरखणि तहिं नाचइं कुतिगकुतिगीयां ।
घरि घरि वइसीय लोय मनावीय साजणसाहसरिस संघावी गामागर-
पुरपाटणह ॥ १६ ॥
दूसमसमइ अहि जिम तिरीयु तारणतरंड रिसह मनि धरीय फल
लीजइ जनमहतणउं ।
एकभावि नर जिणह धम्म परिरिहवरकलीय रमाउलीय ॥ १७ ॥
येवि कुतिग नर जोइं निरंतर भलां भलेरां अतिहिं वहिला आपभवर ।
कामिणि धामिणि धवल दियंती गायंती गुण जिणवरह ।
अतिऊमाहु जात्र समाहउ करीयल कंनि सुणंतीहं य ॥ १८ ॥
ते चउरा रूडा तइयां ताटी नयांनवेरां दीसइं गेहणगण सवण ।
ते घणाघणेरा समविसमेरा संनि न दीसइं असंनि पुण ॥ १९ ॥
देयालइ घालीय नयणि विसालीय दिंतीय ताली रंगि फिरंती हरिसभरे ।
तहिं नाचइं खेला वहुयत वेला वाला भोला लउडा रसि रमइं ॥ २० ॥
अतिरंगि पूरी दिंता भमरी नवपरि नवरंगइ तियसपरे ।
परममहोच्छय कीउ देयालइ फागुणपंचमि धीनसीयालइ प्रस्थानं कीयं
पवरदिणि ॥ २१ ॥
संघपति सोहडदेउ धीनयोई तीरथजात्र जाइवउं गोमामीय ।
सेलहुत सीपामणह वहुय परयउ पणवि रहावीय ।
पहथमह्ल लेउ पत्तनि आवीय संघ देयालइन रोपीउ ए ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सवि पूरीय
महोच्छव कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ फागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।
हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥
वहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइं पाखरीय ।
पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥
पहिलउं दीथी लागि जोइन देवालां संचरइं ए ।
अखंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीछूयाणइ रहीय ॥ २६ ॥
चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।
तींहं दीन्हा वास भास रास रूलीयामणां ए ।
देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥
वडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।
देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥
पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।
पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि बीहिसिउ ए ॥ २९ ॥
दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।
वेगि पहूता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥
आंगणि दीन्हा वास देवालां पापलि फिरीय ।
भवियां पणमउ पास जिणह भूयण रूलीयामणउं ।
कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेषणउं ए ॥ ३१ ॥
संघह कीउं वत्सङ्क धम्मी नागलपुरतणे ए ।
चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
सहू यालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।
नयणि निहालइ लोक पुण्यवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥
पूजीया जिणभूयणाइं भविया मणोरह चित्ति धरे ।
कीउं पीयाणउं भावि अम्बलीपछीनीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥
पेथायाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।
लाधउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपवरो ॥ ३५ ॥
भयु मनि करियउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।
गिया ते जंबू जाम संघह पार न पामीय ए ।

भेटीय झल्लु ताम पणवि पीयाणउं धामीयहं ॥ ३६ ॥
भडकूए आवास गोहिलसंडउ धरीय मनि ।
यहुगुणवंत सुजाण राण पहुतउ लेण स्वणि ॥ ३७ ॥
संघह दीन्हो धीर घलीय संघपति एकमनि ।
राणपुरे संपत्त संघ धनालइन रहइ ए ॥ ३८ ॥
घलीय सरीस उपराण यसहसंड संघपति भणइ ए ।
मइं मन मेल्हि निरास प्राण राणहूं मन हरेसो ॥ ३९ ॥
यइठउ संघपतिपासि रंजीय म्लीगायन हरिसे ।
गुणगरूउ मुग्वराउ लोलीयाणपुरम्हइं भणीय ॥ ४० ॥
घरउ घर्मनउ ठाउ भधीय भावि सीणइ यह भणीय ।
दीन्ह पीयाणनीयाण उपरिं पीपलाइभणीय ।
घउरा दीन्ह विहाण डूंगरा देषीय मनि म्लीय ॥ ४१ ॥
दीठउ डूंगर दूरिथियां घडीय सरोवरपाले ।
संघपति दइं यधामणी हरिषीऊ ए हरिषीऊ ए हरिषीउ मयणि निहाले ॥४२॥
कुंकुमि च्छडउ दियारीउ ए तहिं पाथरीया पाट ।
पाउलि घउक पूरावीउ ए सपरिपरे सपरिपरे सपरि पढइं यहुभट ॥ ४३ ॥
पढइं भाट संघपति निसुणि पेथड पुण्यपवित्त
पंडसीहघरि अवतरीउ गुरुदेवे गुरुदेवे गुरुदेवे सुप सत्त ।
थापीउ डूंगर पण तिलउ फलपगार ते षंग
पाउल नाचइं रंगभर गायंती ए गायंती ए गायंती मनह रतंग ॥ ४४ ॥
कापड कंचण दिन्ह तहिं यहुगुण पूरी आस ।
संघपति करइ यधामणउं षालीऊ ए षालीऊ ए षालीउ पालीपगाणह वास॥४५॥
गंगाजल जिम निर्मलउं ललतागर सुपवित्त ।
सीभपेत्र तीरथतिलउ निरखसपरे निरखसपरे निरखसपरे संपत्त ॥ ४६ ॥
मरुदेवि सामिणि पग नमीय संनिताह सुरराउ ।
पालितसुरिमनिहिउ ए सोलमु ए सोलमू ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥
डूंगरसिरि जे पाहणीय कर्पड्जिक्वरयदिसारो ।
संघ जि सांनिध सो करइ परिहुं ए परिहुं ए परिहुं पाप हुतारं ॥ ४८ ॥
अणुपम सर देषवि तहिं पहुंता पादिहुपारि ।
सरगारोहण दिइ तहिं अतिणाय ए अतिणाय ए अतिणाय हेवं संसारे ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठह्ला पद्महकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पद्मजिण विमलगिरे ।
भवीयच्छुणंत सामी लागह्ला तम्ह बई नामि नमो य नमो नमो सेत्रुजसिहरो॥५२
वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रुलीआमणं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
थुणंति दीणरीण जीण ऊतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल बहल कुसुम परमल विपुल पूजहे । वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि वहआणंदि आरती ऊतारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि ।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि। धन धामी वद्धामणउं ॥
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुःखीय जण मग्गण दाणु
नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि निवह्लि तालनिनाद सुणि पूरीय भवण । वाइवद्धामणुं० ॥
आप कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीगाल चिरकालि सुक्खिवर ।
तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वायवद्धाम० ॥
[illegible] सिद्धि ले सीथयर गोत्र बंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन मिलीउ ।
आगम मग्गीय जय धम्मीय पूरीय मंत्र मम्मीय मनि निचंतीय पेथडफंडि टोडर इलीउ । वायवद्धामणं० ॥
आगम मग्गिय पेथ उ धम्मीउ इलीय टोडर संघपति मोकलायए
सयलसंघो पहुन पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल कारए ।

बावीप वित्त तिहि सपलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो वहुधणवंतइं रूपावटी
चलीय पीयाणए ।

पहउ संघातिपति लोक वखाणए सेलटीया संघ पहुत तहि चलयउ अनंद
पीआणए ।

आइ अमरेलीपपीयाणए पहुतउ वेगि तहिं पण विमीयाणए विसमगिरि लं-
घीयउ पूरि मनि आसह ॥

तेजलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अपनरफवि भणइं
गढवि म्वइंगार ।

गरूअउ दीसए पोलिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ वास तहिं विसमए सुरठ वहदेस भोल लोक तहि निवसए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता तहि दमोदरो देव प्रसिद्धउ पहि सोवन-
रेव नदी जलपूरीय ।

कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहट देवि पाज करावीय धवलीय वर
परब तीण करावीय ।

विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह घर तसु सिरे सिडरए ।
सोधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहुतउ ऊलट आंगिहिं अनियपाउ देपी
राजलवंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए हला गीय गिरिनारे
राजलिवर कलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहिं नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमद ए जल पहरीय भोति प्रवीन ।
इंद्रमहोत्सव आगरंभी तहिं धयट लि वहुधणवंत । तहि नाचिनए तहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो येवीय विभय नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसयंगी गायंती मए आसीस ।
सामलनापि फिरि संघपति नंदउ वरस परीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमद ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अतिसीम
नग कलीय लि आरती ऊतारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहि ना० ॥
अंबिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगनाथ
सांघपजन जुहारीय चलीयउ देप जन्म सुकीयाथ ॥ तहि नाचउलडी ए ह-
ला गइं गिरिनारि ॥